UNIVERSAL LIBRARY

OU_180060

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 831 K92T

Acc No. H 1153

Author :

Title : टॉल्सटाय की अमर

Osmania University Library

ıll No. H 83.1 K92T Accession No. 11153

uthor

ıtle टॉल्सटाय की अमर कहानियाँ

This book should be returned on or before the date last ıarked below.

तरुण सीरीज नं० १०

टाल्सटाय की

अमर कहानियाँ

[६ जगत प्रसिद्ध कहानियों का संग्रह]

तरुण कार्यालय, इलाहाबाद

प्रकाशक

कृष्णनन्दन प्रसाद

तरुण कार्यालय, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

मूल्य एक रुपया

मुद्रक

भगनकृष्ण दीक्षित

दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद

दो शब्द

'तरुण' में समय समय पर टाल्सटाय की कहानियाँ प्रकाशित होती रही हैं, उन्हें पाठकों ने रुचि के साथ पढ़ा भी है। इस संग्रह में वह सभी कहानियाँ और साथ ही कुछ नई भी हैं।

संग्रह की तीन कहानियाँ 'किसके सहारे', 'कितनी ज़मीन' और 'परमात्मा से कुछ छिपा नहीं' टाल्सटाय की बहुत प्रसिद्ध कहानियाँ हैं, दूसरी कहानियाँ भी श्रेष्ठ और रोचक हैं, और यह सब मिलाकर टाल्सटाय की लेखनी का चमत्कार प्रदर्शित करती हैं।

टाल्सटाय संसार के उन इने-गिने महानुभावों में हैं जिनकी अमर कीर्ति मानव-जाति को आने वाले युगों में भी प्रभावित करती रहेंगी। आशा है कि पाठक इन कहानियों को ध्यान-पूर्वक पढ़ेंगे और उनके अंदर छिपे हुए बहुमूल्य भावों की तह तक पहुँच सकेंगे।

—प्रकाशक

सूची

कहानी	अनुवादक	पेज
१—परमात्मा से कुछ छिपा नहीं	श्री 'भक्तराज', बी० ए०	१
२—धर्मपुत्र	,,	१४
३—रोटी का देव	,,	४१
४—तीन साधु	,,	४७
५—कितनी जमीन	श्रीमहेन्द्र प्रताप, एम० ए०	५८
६—किसके सहारे	श्री 'जयेन्द्र', साहित्यरत्न	७६

परमात्मा से कुछ छिपा नहीं

व्लाडीमीर क़स्बे में इवान् डिमिट्रिच अक्सेनोव नाम का एक नवयुवक सौदागर रहता था। उसके दो दूकानें और अपना निजी घर था।

अक्सेनोव सुन्दर था, उसके बाल सुनहले और घुंघराले थे। वह बड़ा हँसमुख और संगीत-प्रेमी था। यौवन के प्रातःकाल में ही उसकी आदत शराब पीने की पड़ गई, और जब वह अधिक पी लेता था तब झगड़ा करने लगता था पर विवाह हो जाने के बाद उसने शराब पीना छोड़ दिया। ऐसे ही कभी गाह-ब-गाहे पी लेता था।

एक दिन शाम को वह निज़नी के मेले को जा रहा था। घरवालों से जब वह विदा ले रहा था तो उसकी स्त्री ने उससे कहा—'इवान आज न जाओ। आज मैंने तुम्हारे सम्बन्ध में एक बहुत बुरा सपना देखा है।'

अक्सेनोव ने हँसते हुए कहा—'तुम डरती हो जैसे मैं मेला न जा रहा हूँ, बल्कि नशेबाज़ी के लिए जा रहा हूँ।'

उसकी पत्नी ने कहा—'पता नहीं, मुझे क्यों डर लग रहा है। मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम है कि मैंने एक बुरा सपना देखा है। मैंने सपने में देखा कि जब तुम शहर से लौटे और अपनी टोपी उतारी तो तुम्हारे सिर के बाल सफ़ेद हो गए थे।'

अक्सेनोव ने हँसते हुए कहा—'यह तो सौभाग्यसूचक शकुन है। देखना मैं मेले में अपना सारा माल बेच लूँगा और तुम्हारे लिए कुछ उपहार भी लाऊँगा।'

ऐसा कह उसने अपने कुटुम्ब से विदा ली और चल पड़ा। आधी राह चल चुकने पर उसे एक दूसरा सौदागर मिला. जिसको वह पहचानता था। रात बिताने के लिए वे एक ही सराय में ठहर गए। चाय-पानी के बाद वे मिले हुए कमरों में सोने के लिए चले गए।

अक्सेनोव जल्दी सोने का आदी था। धूप कड़ी होने के पहले ही ज्यादा रास्ता तै करने के इरादे से उसने अपने गाड़ीवान को बहुत तड़के जगा कर घोड़े जोतने की आज्ञा दी। तब वह सराय के मालिक के पास गया। वह सराय के पीछे एक छोटे से घर में रहता था। इवान ने रात का किराया अदा किया और अपनी राह ली।

पच्चीस मील चल चुकने पर वह घोड़ों को खिलाने के लिए रुक गया। अक्सेनोव सराय की राह में थोड़ी देर तक आराम करता रहा, तब वह सराय की बरसाती में आया। उसने कुछ पानी गरम करने को कहा और स्वयं अपना बाजा लेकर बजाने बैठ गया।

इतने ही में तीन घोड़ों की एक गाड़ी, जिसकी घंटियाँ बज रही थीं, आकर वहाँ रुक गई। दो सिपाहियों के साथ एक अफ़सर उससे नीचे उतरा और अक्सेनोव के पास आकर उससे पूछा कि वह कौन है और कहाँ से आ रहा है। अक्सेनोव ने उसके प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दिया और उसे चाय पीने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन अफ़सर उससे प्रश्न पर प्रश्न पूछता रहा। उसने पूछा—'रात तुमने कहाँ बिताई। तुम अकेले थे या तुम्हारे साथ एक और व्यापारी था। क्या उस सौदागर को तुमने आज सुबह देखा है? सुबह होने से पहले ही तुम सराय से क्यों चल पड़े।'

अक्सेनोव को आश्चर्य हो रहा था कि उससे इतने सारे

प्रश्न क्यों पूछे जा रहे हैं। सब बातें ठीक-ठीक बतलाकर उसने पूछा—'आप मुझसे इस तरह प्रश्न क्यों कर रहे हैं, क्या मैं चोर या डाकू हूँ? मैं अपने काम से यात्रा कर रहा हूँ और मुझसे इस तरह के सवाल पूछने की आपको जरूरत नहीं है।'

अफ़सर ने सिपाहियों को बुलाते हुए उत्तर दिया—'मैं इस ज़िले का पुलीस अफ़सर हूँ' मैं यह प्रश्न तुमसे इसलिए कर रहा हूँ कि जिस व्यापारी के साथ तुम रात ठहरे थे वह आज सुबह मरा हुआ पाया गया। उसका गला कटा हुआ था। मैं तुम्हारी चीज़ों की तलाशी लूंगा।'

वे कमरे में चले आये और अक्सेनोव के सामान को खोल कर देखने लगे। सहसा अफ़सर उसके एक थैले से एक चाकू खींच कर निकालते हुए चिल्ला उठा- यह छुरा किसका है?

अक्सेनोव ने देखा; उसके थैले से निकाले गए छुरे पर खून के दाग़ थे। भय के मारे वह काँप उठा।

इस छुरे पर खून के दाग़ कहाँ से आ गए।

अक्सेनोव ने उत्तर देने का प्रयत्न किया पर उसके मुँह से आवाज़ न निकली। लड़खड़ाते हुए शब्दों में उसने उत्तर दिया—मैं नहीं जानता. यह मेरा नहीं है।

पुलीस अफ़सर ने कहा—'आज सुबह व्यापारी अपने बिस्तर पर मरा हुआ पाया गया। उसका गला कटा था। तुमही हो सकते हो जिसका यह काम है। सराय का दरवाज़ा भीतर से बन्द था और वहाँ तीसरा कोई न था। तुम्हारे थैले में यह खून लगा छुरा मिला है। तुम्हारे चेहरे और तरीक़े से भी यही प्रगट होता है। मुझसे सच-सच कह दो कि तुमने कैसे उसकी हत्या की और कितना रुपया उसका लूट लिया।'

अक्सेनोव ने क़सम खा कर कहा कि यह उसका काम नहीं है। साथ-साथ चाय पी चुकने के बाद उसने उसे देखा भी

नहीं। उसके पास अपने आठ हज़ार रुबल के सिवा और कुछ है भी नहीं। छुरा भी उसका नहीं है। पर उसकी आवाज़ उखड़ी हुई थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और भय के मारे वह इस तरह काँप रहा था जैसे वही अपराधी हो।

पुलीस अफ़सर ने सिपाहियों को अक्सेनोव को बाँध कर गाड़ी में डाल देने का आदेश दिया। उन्होंने उसके पैर बाँध दिये और गाड़ी में झोंक दिया। वह रोने लगा। उसका सामान और रुपया छीन लिया गया। उसे पास के शहर के जेलख़ाने में भेज दिया गया। ब्लाडीमीर में उसके चालचलन के सम्बन्ध में जाँच की गई। क़स्बे के व्यापारियों और दूसरे आदमियों ने कहा कि वह पहले शराब पीकर अपना समय नष्ट करता था, पर तो भी अच्छा आदमी है। मुक़दमा चला, उस पर रियाजान के एक व्यापारी की हत्या करने और २० हज़ार रुबल चुराने का अभियोग लगाया गया।

उसकी पत्नी निराशा के समुद्र में ग़ोते लगाती रही, क्या विश्वास करे कुछ समझ में न आ रहा था। बच्चे उसके छोटे-छोटे थे, एक तो दूध ही पीता था। उन सब को लेकर वह उस शहर में पहुँची, जहाँ उसका पति जेल की दीवारों के भीतर बन्द था। पहले तो उसे अपने पति से मिलने की आज्ञा ही न मिली पर बहुत विनय करने पर अफ़सरों से उसे अपने पति को देखने की आज्ञा मिल गई। जब उसने अपने पति को जेल के कपड़ों में चोरों और अपराधियों के बीच में देखा तो वह मूर्छित हो कर गिर पड़ी। उसे बहुत देर तक होश न आया। उसने अपने बच्चों को पास बुला लिया और अपने पति के निकट बैठ गई। उसने उसे घर का समाचार बताया और पूछा कि क्या बात हुई थी। उसने सब बातें कह सुनाई। पत्नी ने कहा—'तो हमको अब क्या करना चाहिए?'

'ज़ार के पास प्रार्थनापत्र दो कि एक निर्दोष व्यक्ति का जीवन बरबाद होने से बचाये।'

पत्नी ने उससे कहा कि उसने ज़ार के पास प्रार्थनापत्र भेजा था पर वह स्वीकृत न हुआ।

अक्सेनोव ने कुछ उत्तर नहीं दिया। उसका चेहरा उदास हो गया।

तब उसकी पत्नी ने कहा--'मेरा सपना झूठा नहीं कि तुम्हारे बाल सफ़ेद हो गए थे। याद है न? तुम्हें उस दिन रवाना होना न चाहिए था।' और फिर उसके बालों पर अपनी उंगलियाँ फेरते हुए उसने कहा—'प्यारे, अपनी पत्नी से तुम सच-सच कह दो। क्या तुमने हत्या नहीं की।'

अक्सेनोव ने कहा—'तुम भी मुझ पर सन्देह करती हो।' अपना मुख उसने अपने हाथों में छिपा लिया और फूट-फूटकर रो उठा। तभी एक सिपाही ने आकर कहा कि अब पत्नी तथा बच्चों को चले जाने का समय हो गया। अक्सेनोव ने अपनी पत्नी और बच्चों से अन्तिम बार विदा ली।

जब वे चले गये तो उसने उन बातों पर फिर से विचार किया और जब उसे ध्यान आया कि उसकी पत्नी भी उस पर संदेह करती है तो उसने अपने मन में कहा—जान पड़ता है केवल ईश्वर ही सत्य को जानता है। उसीसे मुझे प्रार्थना करनी चाहिए और उसीसे दया की आशा करनी चाहिए।

अक्सेनोव ने फिर कोई प्रार्थना किसी से न की, उसने सारी आशा छोड़ दी और केवल ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू किया।

अक्सेनोव को कोड़े लगाने और खान में भेजे जाने की सज़ा मिली थी। उसे कोड़े लगाये गए और जब कोड़ों से लगी चोट अच्छी हो गई तो वह अन्य क़ैदियों के साथ साइबीरिया भेज दिया गया।

छब्बीस वर्ष तक वह साइबीरिया में एक क़ैदी का जीवन व्यतीत करता रहा। उसके बाल बर्फ़ की भाँति सफ़ेद हो गए। उसकी दाढ़ी लम्बी पतली और सफ़ेद हो गई। चेहरे पर से उसकी सारी ख़ुशी जाती रही, कमर झुक गई; वह धीरे-धीरे चलता, कम बोलता। उसके होठों से हँसी ग़ायब हो गई। ज़्यादा समय वह ईश्वर-प्रार्थना करता रहता।

जेल में अक्सेनोव ने जूते बनाना सीखा, उससे उसने थोड़ा सा पैसा उपार्जित किया। उसने 'सन्तों का जीवन' नामक पुस्तक ख़रीदी। जब जेल में पढ़ने योग्य प्रकाश होता तो वह उस पुस्तक को पढ़ा करता। रविवार के दिन वह जेल के गिरजेघर में भी जाता और सब के साथ ईश्वर की प्रार्थना के गीत गाता, क्योंकि अब भी उसका कंठ मधुर था।

जेल के अधिकारी अक्सेनोव को बहुत पसन्द करते थे। उसके साथी क़ैदी उसकी श्रद्धा करते थे, वे उसे 'बाबा' या महात्मा कह कर पुकारते थे। जब उन्हें जेल के अधिकारियों से किसी बात के लिए प्रार्थना करनी होती तो वे अक्सेनोव को ही अपना वक्ता बनाते और जब क़ैदियों में आपस में कोई झगड़ा हो जाता तो अपना फ़ैसला करने के लिए उसके पास आते।

अक्सेनोव को अपने घर का कुछ भी समाचार न मिलता था। उसे अपनी स्त्री और बच्चों के बारे में यह भी पता न था कि वे जीवित हैं या मर गए।

एक दिन जेल में नये क़ैदियों का एक झुंड आया। शाम को पुराने क़ैदी नये क़ैदियों के पास इकट्ठे हुए। वे उनसे पूछने लगे कि वे कहाँ से आ रहे हैं और उन्हें किस लिए सज़ा मिली है। औरों के साथ अक्सेनोव भी नये क़ैदियों के पास बैठ गया और उदास-उदास उनकी बातें सुनने लगा।

एक नया क़ैदी लम्बे क़द का, ६० वर्ष का, मज़बूत आदमी

था। उसकी दाढ़ी अच्छी तरह कटी हुई थी। वह अपने अपराध के सम्बन्ध में कह रहा था।

'मेरे मित्रो', उसने कहा—'मैंने सिर्फ़ एक घोड़ा ले लिया था, वह गाड़ी से बँधा हुआ था। बस इसी के लिए मैं चोरी के अपराध में पकड़ा गया। मैंने उसे केवल जल्द घर पहुँचने के लिए लिया था। घर पहुँचने पर मैं उसे छोड़ देता। इसके अतिरिक्त उसका सवार भी मेरा मित्र था। मैंने उनसे कहा—इसमें तो कुछ बुराई नहीं। पर उन्होंने कहा—नहीं, तुमने चोरी की। लेकिन कैसे और कहाँ पर मैंने चोरी की यह वह नहीं बता सके। जीवन में मैंने केवल एक बार ऐसा काम किया है, जबकि मुझे यहाँ आने का अवसर था पर उस समय वे मुझको पा हा न सके। और अब मैं यहाँ व्यर्थ ही भेजा गया हूँ। अहा, पर यह झूठ है। मैं साइबीरिया भेजा गया था पर यहाँ अधिक दिन रहा नहीं।'

'कहाँ से आये हो ?' किसी ने पूछा।

'ब्लाडीमीर से मेरे घर वाले वहीं के रहने वाले हैं। मेरा नाम मकार है, लोग मुझे सेमेनिच भी कहते हैं।'

अक्सेनोव ने अपना सिर उठा कर कहा—'सेमेनिच, ज़रा यह तो बताना कि ब्लाडीमीर में एक व्यापारी था—अक्सेनोव। क्या उसके बारे में तुम कुछ जानते हो ?' उसके घर वाले क्या अब तक जीवित हैं ?

'उन्हें जानता हूँ ! अरे ज़रूर। वे बहुत धनी हैं यद्यपि उनका पिता साइबीरिया में है - हमारी तरह शायद वह भी एक पापी है। और तुम, मेरे बाबा, तुम यहाँ कैसे आ गए ?'

अक्सेनोव को अपने दुर्भाग्य की बात कहना पसन्द न था। उसने एक लम्बी सांस ली और कहा—'अपने पापों के लिए मैं पिछले छब्बीस साल से यहाँ हूँ।'

'क्या अपराध था ?' मकार सेमेनिच ने पूछा।

लेकिन अक्सेनोव ने कहा—'ओह, मैं भी उसका भागी रहा हूँ।' वह कुछ अधिक कहना नहीं चाहता था पर उसके साथियों ने बता दिया कि उसे क्यों साइबीरिया में आना पड़ा। किसी ने एक सौदागर की हत्या करके छुरा उसके सामान में रख दिया और उसे सजा भोगनी पड़ रही है।

जब मकार सेमेनिच ने यह सुना तो उसने अक्सेनोव की ओर देखा, अपने घुटनों पर हाथ मार कर बोला—'बड़े आश्चर्य की बात है! ओह घोर आश्चर्य! पर बाबा, तुम कितने बूढ़े दिखाई देने लगे।'

दूसरों ने उससे पूछा कि उसे इतना आश्चर्य क्यों हुआ और क्या उसने अक्सेनोव को पहले कहीं देखा था पर मकार सेमेनिच ने कोई उत्तर न दिया। उसने केवल इतना ही कहा—'दोस्तो, यह आश्चर्यजनक है कि हम इस तरह यहाँ मिल रहे हैं।'

यह सुनकर अक्सेनोव को आश्चर्य हुआ। शायद यह आदमी व्यापारी के हत्यारे को जानता है। इसलिए उसने कहा—'सेमेनिच, शायद तुमने उस मामले के सम्बन्ध में सुना होगा, या शायद तुमने मुझे कभी देखा हो।'

'भला सुनता क्यों न ? उस समय तो वह समाचार दुनिया भर में फैल गया था। पर बहुत दिन हो गए और मुझे अब याद नहीं कि मैंने क्या सुना था।'

'शायद तुमने सुना हो कि व्यापारी की हत्या करने वाला कौन था ?' अक्सेनोव ने पूछा।

मकार सेमेनिच ने हँसकर उत्तर दिया—'जिसके थैले में छुरी पाई गई थी उसीने हत्या की होगी। यदि किसी ने छुरा वहाँ छिपा दिया होगा तो जैसी कि कहावत है जब तक वह पकड़ा नहीं जाता वह चोर नहीं हो सकता। कोई तुम्हारे सिर के

नीचे रखे थैले में छुरी रख कैसे सकता था। उससे तुम जग जरूर जाते।'

यह सुनकर अक्सेनोव को विश्वास हो गया कि इसी आदमी ने उस व्यापारी की हत्या की थी। वह उठ कर चला गया। सारी रात अक्सेनोव ने जाग कर काटी। वह बहुत ही दुःखी था। उसके मस्तिष्क में तरह-तरह की तस्वीरें आकार धारण कर रही थीं। पहली तस्वीर उसकी स्त्री की उस समय की थी, जब वह मेले को जाने को तैयार हुआ था। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे वह वहाँ पर मौजूद हो। उसकी आकृति और आँखें अक्सेनोव के सामने उठीं, वह उसे हँसते और बोलते हुए सुनने लगा। तब उसने अपने बच्चों को देखा, छोटे-छोटे जैसे कि वे उस समय थे। एक छोटा सा कोट पहने था और दूसरा माँ की गोद में था। फिर उसे अपने वह दिन याद आये, जब वह युवक था और प्रसन्न रहता था। उसे याद हो आया कि वह किस प्रकार सराय के दरवाज़े पर बैठा हुआ बाजा बजा रहा था, जब वह गिरफ़्तार कर लिया गया था। उस समय वह चिन्ता से कितना दूर, कितना बेफ़िक्र था! उसे वह स्थान दिखाई पड़ने लगा जहाँ उसे कोड़े लगाये गए थे, सज़ा देनेवाले और दूसरे लोग उसके चारों ओर खड़े थे। हथकड़ियाँ, क़ैदी, और जेल-जीवन के छब्बीस वर्ष उसे याद हो आये। समय से पूर्व ही वह बूढ़ा हो गया है। यह सब सोचकर वह इतना दुःखी हो गया कि उसने सोचा कि वह अपनी हत्या कर डाले।

'और यह सब इसी बदमाश का काम है।,' उसने सोचा। मकार के प्रति उसे इतना क्रोध आ गया कि वह बदला लेने के लिए उत्सुक हो उठा, चाहे इसके लिए उसे नष्ट ही क्यों न हो जाना पड़े। रात भर वह ईश्वर से प्रार्थना करता रहा पर

शान्ति उसे न प्राप्त हो सकी। दिन में वह मकार सेमेनिच के निकट भी न गया और न उससे बात ही की।

इस तरह एक पखवारा बीत गया। अक्सेनोव को रात में नींद न आती, उसे समझ नहीं पड़ता था कि वह क्या करे।

एक दिन जब वह जेल में टहल रहा था तो उसने देखा कि क़ैदियों के सोने के एक तख़्ते पर मिट्टी गिर रही है। वह उसे देखने के लिए रुक गया। सहसा मकार सेमेनिच उसके नीचे से निकला और अक्सेनोव के चेहरे की ओर भय के साथ देखा। अक्सेनोव उसकी ओर बिना ध्यान दिये जाने लगा पर मकार ने उसे पकड़ लिया और कहा कि उसने दीवार के नीचे से एक सुरंग करली है। मिट्टी वह अपने बूटों में भर कर जब मज़दूर काम करने बाहर जाते हैं तो सड़क पर डाल आता है।

'मेरे बूढ़े दोस्त, तुम चुप भर रहना और तुम भी निकल जाओगे। पर यदि तुमने सांस ली तो मुझे ज़िन्दगी पर यहीं कोड़े खाने पड़ेंगे पर मैं तुम्हें मार डालूँगा।'

अक्सेनोव अपने दुश्मन को देख कर क्रोध से काँप उठा। उसने यह कहते हुए अपना हाथ खींच लिया—'मुझे बाहर निकलने की कोई इच्छा नहीं है और तुम्हें मेरी हत्या करने की भी ज़रूरत नहीं। तुमने तो बहुत दिन पहले ही मेरी हत्या कर दी। रही कुछ करने न कहने की बात! तो इस सम्बन्ध में ईश्वर मुझे जैसी आज्ञा देगा वैसा ही मैं करूँगा।'

दूसरे दिन जब क़ैदियों को काम करने के लिए बाहर ले जाया गया तो सिपाहियों ने देखा कि किसी क़ैदी ने अपने बूट से मिट्टी गिराई है। जेलख़ाने की तलाशी ली गई तो सुरंग मिल गई। जेल के अधिकारी ने आकर हरएक क़ैदी से पूँछताँछ की और सुरंग खोदने वाले का पता लगाने को कहा। सब ने कहा कि वे नहीं जानते। जो जानते भी थे वे मकार सेमेनिच का नाम

नहीं बताना चाहते थे क्योंकि वे जानते थे कि इसके लिए उसे इतने कोड़े लगेंगे कि वह मर ही जायगा। अन्त में अधिकारी ने अक्सेनोव से पूछा। वह जानता था कि अक्सेनोव ईमानदार व्यक्ति है—'तुम ईमानदार व्यक्ति हो, तुम सच-सच बताओ यह सुरंग किसने खोदी।'

मकार सेमेनिच अब तक ऐसे खड़ा था जैसे उसका इससे कोई सम्बन्ध ही न हो, वह जेल के अफ़सर की ओर देख रहा था। अक्सेनोव के होठ और हाथ हिल उठे। बड़ी देर तक उसके मुंह से शब्द न निकला। उसने सोचा—जिसने मेरा जीवन नष्ट कर दिया उसे मैं क्यों बचाऊँ। मैंने जो भोगा है उसका दण्ड इसे मिलना ही चाहिए। पर यदि मैं कह देता हूँ तो शायद लोग इसे कोड़े लगा कर मार डालेंगे और सम्भव है मैं व्यर्थ ही उस पर संदेह करता होऊँ; और फिर इससे मेरा लाभ क्या होगा।

गवर्नर ने कहा—'बताओ, किसने इस सुरंग को खोदा है?'

अक्सेनोव ने मकार सेमेनिच की ओर देखा और उत्तर दिया—'मैं नहीं कह सकता! भगवान की इच्छा नहीं है कि मैं कुछ कहूँ। आपकी जो इच्छा हो वह आप मेरे साथ करें मैं आपके हाथों में हूँ।'

गवर्नर ने बहुत प्रयत्न किया पर अक्सेनोव ने कोई उत्तर न दिया, फलतः मामला वहीं समाप्त कर दिया गया।

उस रात को जब अक्सेनोव लेटा हुआ था, उसे नींद आने ही लगी थी कि कोई आकर उसके बिस्तर के पास बैठ गया। अँधेरे में उसने देखा कि यह मकार था। अक्सेनोव ने कहा—'अब तुम मुझसे क्या चाहते हो? तुम मेरे पास क्यों आये हो?'

मकार सेमेनिच चुप था। इसलिए अक्सेनोव उठ कर बैठ

गया और बोला—'तुम क्या चाहते हो ? जाओ, नहीं तो मैं संतरी को बुलाता हूँ।'

मकार सेमेनिच अक्सेनोव के ऊपर झुक कर धीरे से बोला—'इवान डिमिटिच, मुझे क्षमा करो।'

'किसलिए ?' अक्सेनोव ने पूछा।

'मैंने उस व्यापारी की हत्या की थी और तुम्हारे थैले में छुरा छिपा दिया था। मैं तुम्हारी भी हत्या करना चाहता था पर उसी समय मैंने कुछ खटका सुना, इसलिए मैं छुरा तुम्हारे सामान में छिपाकर खिड़की की राह भाग निकला।'

अक्सेनोव चुप रहा; उसे समझ नहीं पड़ रहा था कि वह क्या उत्तर दे। मकार ज़मीन पर झुक गया, बोला—'इवान डिमिटिच, मुझे क्षमा करो, भगवान के लिए मुझे क्षमा करो। मैं इक़रार कर लूँगा कि मैंने ही व्यापारी की हत्या की थी और तुम छूट कर घर जा सकोगे।'

अक्सेनोव ने कहा—'तुम्हारे लिए यह कहना तो आसान है, पर तुम्हारे कारण मैंने छब्बीस वर्ष सज़ा भुगती है। अब मैं कहाँ जा सकता हूँ।...मेरी पत्नी मर चुकी है और मेरे लड़के मुझे भूल चुके हैं ! मैं अब कहीं नहीं जा सकता.....।'

मकार सेमेनिच उठा नहीं; ज़मीन पर वह अपना सिर पटकता रहा, 'इवान डिमिटिच, मुझे क्षमा करो।' उसने कहा—'मुझे कोड़े खाना इतना दुःखदायी नहीं था जितना कि तुम्हें इस तरह देखना . . फिर भी तुमने मुझ पर दया की और उनके सामने भेद नहीं बताया ! कृपा करके मुझ नीच को क्षमा करो।' वह सिसक कर रोने लगा।

अक्सेनोव ने उसे सिसकते सुना तो वह भी रोने लगा।

उसने कहा—'भगवान तुम्हें क्षमा करेगा। हो सकता है

कि मैं तुमसे भी सैकड़ों गुना पापी होऊँ।' इन शब्दों को कह चुकने पर उसका हृदय हल्का हो गया और अपने घर वालों को देखने की उसकी इच्छा जाती रही। उसे जेल छोड़ कर जाने की इच्छा न रह गई थी, वह अपने अन्तिम क्षण की राह देखने लगा।

अक्सेनोव के ऐसा कहने पर भी मकार सेमेनिच ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया, पर जब उसकी मुक्ति की आज्ञा आई तो अक्सेनोव की मृत्यु हो गई थी।

धर्म-पुत्र

एक ग़रीब किसान के एक लड़का हुआ। ख़ुशी से उसका हृदय फूल उठा और वह दौड़ा हुआ अपने पड़ोसी के पास पहुँचा। उसने उससे लड़के का धर्म-पिता बनने की प्रार्थना की। पर पड़ोसी ने उसकी बात स्वीकार न की—एक ग़रीब आदमी के लड़के का धर्म-पिता वह नहीं बनना चाहता था। किसान ने दूसरे पड़ोसी से कहा परन्तु उसने भी अस्वीकार कर दिया। बेचारा किसान सारे गाँव के लोगों के पास हो आया परन्तु एक ग़रीब आदमी के लड़के का धर्म-पिता होना किसी ने स्वीकार न किया। इसलिए अपने लड़के के लिए धर्म-पिता की खोज में वह दूसरे गाँव को रवाना हुआ। रास्ते में उसे एक आदमी मिला, जिसने किसान को रोक कर कहा—'नमस्कार भाई, कहो कहाँ चले ?'

किसान ने उत्तर दिया—'ईश्वर ने जवानी में आँखों को ख़ुश करन, बुढ़ापे में आराम पहुँचाने और मेरे मरने के बाद मेरी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने के लिए मुझे एक बेटा दिया है। किन्तु मैं बहुत ग़रीब हूँ और मेरे गाँव में कोई मेरे बेटे का धर्म-पिता बनने को तैयार न हुआ, इसलिए मैं उसके लिए धर्म-पिता खोजने को निकला हूँ।'

अजनबी व्यक्ति ने तुरन्त ही कहा—'तो मैं उसका धर्म-पिता बनने को तैयार हूँ।'

किसान की ख़ुशी का क्या पूछना; उसने कहा, 'पर धर्म-माँ बनने के लिए मैं किससे कहूँ ?'

अजनबी ने उत्तर दिया—'तुम शहर जाओ, वहाँ बाज़ार में तुम्हें पत्थरों का बना एक सुन्दर भवन दिखाई देगा; उसके

सामने दूकानों की सी खिड़कियाँ बनी हैं। मकान के दरवाज़े पर ही तुम्हें घर का स्वामी मिलेगा, जो कि एक प्रसिद्ध व्यापारी है। उससे कहना कि वह अपनी लड़की को तुम्हारे लड़के की धर्म-माँ बनने दे।'

किसान झिझका, बोला—'यह मैं एक धनी व्यापारी से कैसे कह सकता हूँ। वह तो मुझे घृणा से ठुकरा देगा और अपनी लड़की को मेरे सामने आने भी न देगा।'

'इसकी फ़िक्र तुम न करो। जाकर कहो तो ? कल सुबह तक तुम सब ठीक कर लो। बपतिस्मा के समय मैं आ जाऊँगा।'

किसान लौट कर घर आया और फिर वहाँ से वह अजनबी के बताये व्यापारी से भेंट करने के लिए शहर की ओर चला। जैसे ही उसके घोड़े ने अहाते में प्रवेश किया वैसे ही व्यापारी ख़ुद ही उसके सामने आया और उससे पूछा—'आप क्या चाहते हैं ?'

किसान ने कहा—'श्रीमान्, ईश्वर मुझे जवानी में आँखें ख़ुश करने, बुढ़ापे में आराम देने और मेरे मरने के बाद मेरी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने के लिए एक बेटा दिया है। कृपा करके अपनी लड़की को उसकी धर्म-माँ बनने दें।'

'बपतिस्मा कब होगा ?' व्यापारी ने पूछा।

'कल सुबह।'

'अच्छी बात है; जाओ, कल ठीक समय पर वह तुम्हें गिरजाघर में मिलेगी।'

दूसरे दिन किसान के बेटे की धर्म-माँ और धर्म-पिता दोनों गिरजाघर में मौजूद थे। बच्चे का संस्कार किया गया। उसके धर्म-पिता तुरन्त ही चले गए। किसी को यह भी पता न लग सका कि वह कौन थे और न किसी ने फिर कभी उन्हें देखा।

२

लड़का धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। किसान दम्पति उसे देखकर बहुत खुश होते थे। उसका शरीर स्वस्थ था, काम करने के लिए वह सदैव तैयार रहता था, फिर वह अत्यन्त नम्र स्वभाव का था। जब वह दस वर्ष का हुआ तब उसके माता-पिता ने उसे पढ़ना-लिखना सीखने के लिए स्कूल में भर्ती कर दिया। पाँच वर्ष की शिक्षा लड़के ने एक वर्ष में ही पूरी कर ली। जल्द ही उसकी सारी शिक्षा समाप्त हो गई।

ईस्टर का त्योहार आया तो लड़का अपनी धर्म-माँ को अभिवादन करने गया।

घर लौटने पर उसने अपने माता-पिता से पूछा—'मेरे धर्म-पिता कहाँ रहते हैं? मैं ईस्टर के उपलक्ष में उनसे भी मिलने जाना चाहता हूँ।'

उसके पिता ने उत्तर दिया—'तुम्हारे धर्म-पिता के सम्बन्ध में हमें कुछ भी मालूम नहीं है। इसका हमें भी बहुत दुःख रहता है। उस दिन के बाद हमने उन्हें फिर कभी न देखा और न उनका कोई समाचार ही मिला। पता नहीं वह अब कहाँ रहते हैं और भगवान जाने वह जीवित हैं या नहीं।'

लड़के ने सिर झुका कर अपने पिता से कहा—'मुझे अपने धर्म-पिता को खोजने के लिए जाने की आज्ञा दें। उन्हें खोज कर मैं ईस्टर की बधाई दूँगा।'

सो लड़के के माता-पिता ने उसे जाने की आज्ञा दे दी और लड़का अपने धर्म-पिता की खोज में रवाना हो गया।

३

घर से निकल कर लड़के ने सड़क पकड़ी। कई घंटे चलने के बाद उसे रास्ते में एक अजनबी मिला। उसने लड़के को रोक कर पूछा—'कहाँ जा रहे हो?'

लड़के ने उत्तर दिया—'मैं अपनी धर्म-माँ को ईस्टर की बधाई देने गया था। जब मैं घर लौटा तो मैंने अपने माता-पिता से अपने धर्म-पिता का पता पूछा ताकि मैं उनके पास जाकर उन्हें भी ईस्टर की बधाई दे सकूँ। पर उन्होंने कहा कि मेरे धर्म-पिता के बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं है। वे मेरे बपतिस्मा-संस्कार के बाद ही चले गए थे और मेरे माता-पिता उनके सम्बन्ध में अधिक न जान सके। उन्हें यह भी पता नहीं कि मेरे धर्म-पिता अब जीवित हैं या नहीं। पर मैं अपने धर्म-पिता से मिलना चाहता हूँ और उन्हीं की खोज में निकला हूँ।'

अजनबी ने कहा—'मैं ही तुम्हारा धर्म-पिता हूँ'

लड़का यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। श्रद्धा के साथ उसने पिता को तीन बार चूमा और बोला—धर्म-पिता, आप अब किस ओर जा रहे हैं? यदि आप हमारे घर की ओर से चल रहे हों तो हमारे यहाँ भी चलें किन्तु यदि आप अपने घर जा रहे हों तो मैं भी आपके साथ चलूँगा।'

धर्म-पिता ने उत्तर दिया—'मेरे पास समय नहीं है कि तुम्हारे घर चलूँ। मुझे कई गाँवों में काम है। मैं अपने घर कल लौटूँगा। तब तुम आ सकते हो।'

'पर तुम्हारा पता जो मुझे नहीं मालूम है!'

'अपने घर से निकल कर तुम जिधर को सूरज निकलता है उधर ही सीधे चल पड़ना। कुछ दूर चलने पर तुम्हें एक जंगल मिलेगा। उसे पार करके तुम एक घाटी में पहुँचोगे। जब इस घाटी में पहुँचना तो थोड़ी देर सुस्तान के लिए बैठ जाना। देखना उस समय क्या होता है। जंगल के अन्तिम सिरे पर तुम्हें एक बाग़ मिलेगा। उसमें सुनहले रंग की छत की एक इमारत है। वही मेरा घर है। दरवाज़े तक तुम जाओगे तो तुम्हारा स्वागत करने के लिये मैं मौजूद मिलूँगा।'

इतना कह कर धर्म-पिता लड़के की आँखों के सामने से विलीन हो गया।

४

लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि उसके धर्म-पिता ने कहा था। उसने पूरब की राह पकड़ी; कुछ देर बाद उसे वह जंगल मिला। फिर वह घाटी में पहुँचा। घाटी के बीच में उसे एक पेड़ दिखाई दिया, जिसकी डाल से एक रस्सी लटक रही थी। रस्सी से लकड़ी का एक भारी लट्ठा लटक रहा था। इस लट्ठे के नीचे शहद से भरा एक बर्तन रखा हुआ था। लड़के को यह आश्चर्य हो ही रहा था कि यहाँ पर यह शहद क्यों रखा है और इस पर यह लट्ठा क्यों लटक रहा है कि उसने देखा कि कुछ भालू उधर ही आ रहे हैं। एक भालुनी और उसके साथ तीन बच्चे थे। भालुनी ने हवा में सूँघा और सीधे शहद के बर्तन के पास पहुँची। बच्चे भी पीछे-पीछे पहुँच गए। उसने अपना मुँह शहद में डाल दिया और बच्चों को भी ऐसा ही करने के लिए पुकारा। बच्चे दौड़ आये और वे सब शहद खाने लगे। इसी समय लकड़ी का लट्ठा, जिसे भालुनी ने अपने मुँह से एक ओर खिसका दिया था, झूला और एक बच्चे को धकेल दिया। यह देखकर भालुनी ने अपने पंजे से लट्ठे को पीछे धकेल दिया। लट्ठा पीछे हट गया पर इतने अधिक जोर के साथ लौट पड़ा कि उससे एक बच्चे की पीठ और दूसरे के सर में चोट लगी। दर्द से चीखते हुए बच्चे भाग चले। भालुनी गुर्रा उठी, अपने अगले पैर से उसने लट्ठे को अपने सिर के ऊपर उठाया और दूर फेंक दिया। लट्ठा ऊपर दूर चला गया। एक बच्चा दौड़ा और शहद खाने लगा। दूसरे बच्चे भी शहद की ओर बढ़े, परन्तु वे वहाँ तक पहुँच न पाये थे कि लट्ठा फिर लौट पड़ा। इस बार उसने भालू के शहद खाने वाले बच्चे को इतनी जोर का ठोकर

लगाया कि उसके प्राण पखेरू उड़ गए। भालुनी और ज़ोर से गुर्राई और उसने लट्ठे को पकड़ कर अपनी पूरी ताक़त के साथ दूर फेंक दिया। जिस डाल से लट्ठा लटक रहा था उससे भी ऊपर वह उठ गया। वह इतना ऊपर हो गया था कि रस्सी ढीली हो गई थी। भालुनी ने बर्तन में मुँह लगाया और उसके साथ बच्चे भी आगे बढ़े। लट्ठा ऊपर उठता जा रहा था—ऊपर और ऊपर। फिर वह रुक गया और नीचे आने लगा। जितना ही निकट वह आता था उसकी गति तेज़ होती जाती थी। अन्त में उसकी चाल चरम सीमा पर पहुँच गई, भालुनी को एक ठोकर लगी और वह लुढ़क गई, उसके पैर काँप उठे और फिर वह ठंढी हो गई। बच्चे जंगल की ओर भाग गए।

५

लड़का यह सब आश्चर्य के साथ देखता रहा, फिर उसने अपनी राह ली। जंगल समाप्त होने पर उसे बाग़ मिला, जिसके बीच में एक विशाल महल खड़ा था। छतें उसकी सुनहली थीं। दरवाज़े पर उसका धर्म-पिता खड़ा हुआ मुस्करा रहा था। उसने अपने धर्मपुत्र का स्वागत किया और उसे दरवाज़े से भीतर बाग़ में ले गया। बाग़ के सौंदर्य को देख कर लड़का आश्चर्य-चकित हो उठा। इतने सौंदर्य की कल्पना उसने कभी स्वप्न में भी न की थी।

धर्म-पिता उसे महल के भीतर ले गया। महल बाहर की अपेक्षा भीतर से और भी सुन्दर था। धर्म-पिता ने उसे महल के सब कमरे दिखाये। हर कमरा दूसरे से अधिक सुन्दर था। अन्त में वे एक कमरे के सामने आये, जिस पर मुहर लगी थी।

धर्म-पिता ने कहा—'इस कमरे को देखते हो। यह बन्द है पर इसमें ताला नहीं लगा है। इसे तुम खोल सकते हो पर मैं

तुम्हें आदेश देता हूँ कि इसे कभी न खोलना। यदि तुम चाहो तो तुम यहाँ रह सकते हो, जहाँ चाहो जा सकते हो और महल में आनन्द के जितने भी प्रसाधन हैं उनका प्रयोग कर सकते हो। मेरी एकमात्र यह आज्ञा है कि इस कमरे को कभी मत खोलना। परन्तु यदि कभी तुम मेरी आज्ञा के विरुद्ध ऐसा करो तो जंगल की घटना का स्मरण रखना।'

इतना कहकर धर्म-पिता चला गया। धर्मपुत्र महल में रहने लगा। वहाँ का जीवन इतना आकर्षक था कि तीस वर्ष बीत जाने पर भी उसे ऐसा जान पड़ रहा था जैसे अभी तीन घंटे ही उसे इस महल में रहते हुए हुए हैं। तीस वर्ष बाद एक दिन लड़का उस बन्द कमरे के सामने से गुज़रा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके धर्म-पिता ने उस कमरे को न खोलने का आदेश क्यों दिया।

उसने सोचा—चलो ज़रा देखें तो इसमें क्या है; और उसने दरवाज़े को एक धक्का दिया। दरवाज़ा खुल गया। लड़के ने अन्दर प्रवेश किया। कमरा बहुत बड़ा तथा बहुत ही सुन्दर बना हुआ था। उसके बीच में एक सिंहासन बना था। थोड़ी देर तक वह कमरे में टहलता रहा, फिर सिंहासन की सीढ़ियों पर चढ़ कर वह उस पर बैठ गया। बैठते ही उसे सिंहासन के पास ही एक दण्ड रखा दिखाई दिया। उसने उसे हाथ में उठा लिया। जैसे ही उसने दण्ड को हाथ में लिया कमरे की दीवारें विलीन हो गईं। लड़के को सारी दुनिया और जो कुछ भी दुनिया वाले कर रहे थे दिखाई पड़ने लगा। सामने उसे विस्तृत समुद्र दिखाई पड़ा, जिस में जहाज़ चल रहे थे; उसने दाहिनी ओर दृष्टि घुमाई, इधर असभ्य जातियाँ रहती हैं। बाईं ओर देखा—यह ईसाईयों का निवासस्थान था पर रूसियों का नहीं। उसने चारों ओर देखा। चौथी दिशा में उसे रूसी लोग दिखाई पड़े जो उसी की भाँति थे।

उसने अपने मन में सोचा—देखूं, घर में इस समय क्या हो रहा है। फ़सल अच्छी है या नहीं।

उसने अपने पिता के खेतों को देखा। खेत खड़े लहलहा रहे थे। वह यह अनुमान लगा ही रहा था कि इस बार काफ़ी अनाज होगा या नहीं, तभी उसे बैलगाड़ी पर जाता हुआ एक किसान दिखाई पड़ा। रात का समय था, उसने सोचा उसके पिता रात में अनाज ले जा रहे हैं। पर उसने ध्यान से देखा। यह तो वसीली कुडराशोव है—चोर है—यह अनाज की बालियाँ चुरा कर ले रहा है। धमपुत्र को क्रोध आ गया और उसने पुकारा—'पिता, हमारे खेत से अनाज चुराये जा रहा है।'

उसका पिता खलिहान में सो रहा था, वह जग गया। उसने कहा—'मैंने स्वप्न देखा कि कोई हमारे खेत से अनाज चुराये लिए जा रहा है। अभी मैं घोड़ा कस कर पहुँचता हूँ।'

वह तुरन्त ही बाहर आया और खेत की ओर घोड़ा बढ़ाया। वहाँ वसीली को देखते ही उसने दूसरे किसानों को सहायता के लिए पुकारा। वसीली पर ख़ूब मार पड़ी और उसे बाँध कर जेलख़ाने में पहुँचा दिया गया।

तब धर्मपुत्र ने शहर की ओर देखा, जहाँ उसकी धर्म-माँ रहती थी। उसने देखा कि उसकी धर्म-माँ का विवाह एक व्यापारी के साथ हो गया है। वह सो रही थी और उसका पति उठ कर अपनी प्रेमिका के यहाँ पहुँचा। धर्मपुत्र ने चिल्लाकर धर्म-माँ को जगा दिया—

'उठो, उठो तुम्हारा पति कुमार्ग पर जा रहा है।'

धर्म-माँ जग कर खड़ी हो गई; कपड़े पहने और अपने पति को खोज उसकी लानत-मलामत की और उसकी प्रेमिका को ख़ूब पीटा। अपने पति को लेकर वह घर चली आई।

तब धर्मपुत्र को अपनी माँ का ध्यान आया। वह अपनी

कुटिया में सो रही थी। एक चोर ने उसके कमरे में प्रवेश किया और उसकी माँ के बक्स को तोड़ने का प्रयत्न करने लगा। इस बक्स में उसकी माँ अपना सामान रखती थी। माँ जग गई; वह चिल्ला उठी। चोर ने पास ही पड़ी एक कुल्हाड़ी उठा ली और उसे मारने के लिए ऊपर उठाया।

धर्मपुत्र अपने को रोक न सका; उसने अपने हाथ के दण्ड को खींच कर चोर पर वार किया। दण्ड चोर के सिर पर लगा, वह उसी स्थान पर गिर कर मर गया।

६

जैसे ही उसने चोर पर प्रहार किया दीवारें फिर खड़ी हो गईं। कमरा फिर पहले सा ही हो गया।

सहसा दरवाज़ा खुला और धर्म-पिता ने प्रवेश किया। लड़के के पास आकर धर्म-पिता ने उसको हाथ पकड़ कर सिंहासन पर से उतार दिया। उसने कहा—'तुमने मेरी आज्ञा न मानी। पहली ग़लती तो तुमने इस कमरे को खोल कर की, दूसरी ग़लती तुमने इस पर बैठ कर अपने हाथ में मेरा दण्ड लेकर की। और तीसरी ग़लती तुमने अभी की है, जिससे संसार में बुराइयों की बहुत वृद्धि हुई है। यदि तुम आध घंटे इस सिंहासन पर और रहते तो आधी मानव जाति बरबाद हो गई होती।'

धर्म-पिता लड़के को फिर सिंहासन पर ले गया; उसने दण्ड को अपने हाथ में ले लिया; दीवारें फिर विलीन हो गईं और सारी दुनिया नज़रों के सामने घूमने लगी। धर्म-पिता ने कहा—'देखो, तुमने अपने पिता के साथ क्या किया। बसीली को साल भर की जेल की सज़ा भुगतनी पड़ी और अब वह तमाम बुराइयाँ सीख कर जेल से बाहर आया है। अब उसका सुधार होना असम्भव है। देखो, उसने तुम्हारे पिता के दो घोड़े चुरा लिए और अब तुम्हारे पिता के खलिहान में आग लगा रहा

है। तुम्हारी करनी के फलस्वरूप यह सब तुम्हारे पिता को भोगना पड़ रहा है।'

धर्म-पुत्र ने अपने पिता के खलिहान को लपटों के बीच धू-धू करते देखा, किन्तु धर्म-पिता ने उस दृश्य को उसके सामने से दूर करते हुए दूसरी ओर देखने को कहा।

बोला 'यह तुम्हारी धर्म-माँ का पति है। एक वर्ष हुए उसने अपनी पत्नी को त्याग दिया है और अब दूसरी स्त्रियों के पीछे घूमता रहता है। उसकी पहली प्रेमिका और भी पतित हो गई है। शोक के कारण उसकी पत्नी ने शराब पीना शुरू कर दिया। अपनी धर्म-माँ की इस दशा को लाने का उत्तरदायित्व तुम पर है।'

धर्म-पिता ने इस दृश्य को भी उसकी आँखों के सामने से हटा दिया। उसने धर्म-पुत्र को उसके पिता का घर दिखाया। उसकी माँ अपने पापों पर पश्चाताप करती हुई रो रही थी। वह कह रही थी—यदि चोर ने उस दिन मेरा काम तमाम कर दिया होता तो अच्छा था। मैं इतना पाप करने से तो बच गई होती।

'यह किया है तुमने अपनी माँ के साथ!'—धर्म-पिता ने कहा।

यह दृश्य भी परदे की भाँति हट गया। धर्म-पिता ने उसे नीचे की ओर इशारा किया। धर्म-पुत्र ने देखा कि दो सिपाही एक चोर के जेल के सामने ले जा रहे हैं। धर्म-पिता ने कहा—

'इस आदमी ने दस आदमियों की हत्या की है। अपने पापों का प्रायश्चित्त इसे स्वयं करना पड़ता पर तुमने उसकी हत्या करके उसके पापों को अपने ऊपर ले लिया। अब तुम्हें इन सभी पापों का दण्ड भोगना पड़ेगा। यह तुमने किया है अपने साथ। भालुनी ने लकड़ी के लट्ठे को एक बार स्थानान्तरित किया, जिससे उसके बच्चों को चोट लगी; उसने उसे फिर धकेल दिया,

जिससे उसका एक बच्चा मर गया; लट्ठे को उसने तीसरी बार उठा कर फेंक दिया तो वह उसी की मृत्यु का कारण हुआ। यही तुमने अपने साथ किया। अब मैं तुम्हें तीस वर्ष का समय देता हूँ, तुम दुनिया में जाकर चोर के पापों का प्रायश्चित करो। यदि तुम नहीं कर सके तो तुम्हें उसकी जगह लेनी पड़ेगी।'

'मैं उसके पापों का प्रायश्चित्त कैसे करूँ?' धर्मपुत्र ने पूछा।

धर्म-पिता ने उत्तर दिया—'जब तुम संसार से कम से कम इतनी बुराइयों को निकाल बाहर करने में सफल हो सकोगे जितनी तुमने पैदा की हैं तब तुम्हारा अपने तथा चोर दोनों के पापों का प्रायश्चित्त पूरा हो जायगा।'

'संसार की बुराइयों को मैं नष्ट कैसे कर सकता हूँ?' धर्मपुत्र ने पूछा।

'जाओ!' धर्म-पिता ने कहा—'और सूरज जिधर से निकलता है उसी तरफ़ चले जाओ। कुछ दूर जाने पर तुम्हें एक खेत मिलेगा, जिसमें कुछ आदमी मिलेंगे। देखना वे क्या करते हैं, और जो कुछ तुम जानते हो उसे उन लोगों को बताना। फिर आगे बढ़ना और सब कुछ देखते-भालते चलना। चौथे दिन तुम एक जंगल में पहुँचोगे। जंगल के बीच में एक गुफा है। इस गुफे में एक साधु रहता है। उससे सारी घटना बता देना। वह तुम्हें तुम्हारा कर्तव्य बता देगा। जो कुछ वह कहे उसे जब तुम पूरा कर चुकोगे तब तुम्हारे अपने तथा चोर के पापों का प्रायश्चित्त हो जायगा।'

यह कह कर धर्म-पिता ने उसे महल के दरवाज़े के बाहर कर दिया।

७

धर्म-पुत्र ने अपना रास्ता लिया। जाते-जाते वह अपने मन में सोच रहा था—दुनिया की बुराइयों को मैं कैसे दूर कर

सकूँगा। बुराई का नाश तो बुरे आदमियों को नष्ट करने, उन्हें जेल में बन्द रखने या फाँसी पर लटका देने से ही दूर हो सकता है। तब फिर बिना दूसरों का पाप अपने सिर लिए मैं दुनिया से बुराई दूर कैसे कर सकता हूँ?

धर्म-पुत्र इस पर बहुत देर तक विचार करता रहा, परन्तु किसी निर्णय पर न पहुँच सका। चलते-चलते वह एक खेत के पास पहुँचा। फ़सल खूब घनी थी और पक कर कटने के लिए तैयार थी। उसने देखा कि एक छोटा सा बछड़ा खेत में पड़ गया है। आस-पास के कुछ आदमियों ने उसे देखा; अपने-अपने घोड़े पर चढ़ कर वे दौड़े आये और उसे इधर से उधर खड़े खेत में ही खदेड़ रहे थे। हर बार जब बछड़ा खेत से बाहर निकलना चाहता कोई न कोई घुड़सवार उसके सामने पहुँच जाता और बछड़ा डर कर फिर खेत में चला जाता; और वे खेत में उसके पीछे घोड़े दौड़ा रहे थे। खेत के किनारे सड़क पर खड़ी हुई एक स्त्री रो रही थी।

'मेरे बछड़े को दौड़ा-दौड़ा कर वह लोग मार डालेंगे,' उसने कहा।

धर्म-पुत्र ने किसानों से कहा—'तुम लोग यह क्या कर रहे हो? तुम सब खेत से निकल आओ और स्त्री को अपने बछड़े को बुला लेने दो।'

उन लोगों ने वैसा ही किया और स्त्री ने खेत के किनारे आ कर बछड़े को बुलाया—'आओ, बेटे आओ।' बछड़े ने अपने कान खड़े किये, क्षण भर देखता रहा, फिर अपने आप ही स्त्री की ओर दौड़ा। उसने अपना सिर स्त्री के कपड़ों में छिपा लिया। स्त्री गिरते-गिरते बची। आदमियों को बड़ी खुशी हुई, स्त्री भी प्रसन्न हो गई और बछड़ा भी खुश दिखाई देता था।

धर्म-पुत्र आगे चला। उसने सोचा—अब मेरी समझ में

आ गया कि एक बुराई से हज़ार बुराइयाँ पैदा होती हैं। जितना ही लोग बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करते हैं उतना ही वे फैलती हैं। ऐसा जान पड़ता है कि बुराई को बुराई द्वारा नहीं नष्ट किया जा सकता। पर बुराइयों को नष्ट कैसे किया जा सकता है, इसका पता मुझे नहीं है। बछड़े ने अपनी मालकिन की आज्ञा मान ली, इसलिए सब ठीक रहा पर यदि वह न मानता तो उसे खेत से कैसे निकाला जाता।

धर्म-पुत्र सोचता रहा पर किसी निर्णय पर न पहुँच सका। उसने अपनी यात्रा जारी रखी।

८

चलते-चलते वह एक गाँव में पहुँचा। गाँव के सिरे पर उसने रात बिताने के लिए जगह माँगी। घर में एक स्त्री अकेली थी। घर साफ़ कर रही थी, उसने उसे भीतर आने दिया। धर्म-पुत्र अन्दर जा कर ईंट के चूल्हे पर बैठ गया। स्त्री का काम करना देखता रहा। स्त्री कमरे को साफ़ कर चुकी, वह मेज़ साफ़ करने लगी। फिर उसने एक गंदे कपड़े से मेज़ पोंछा। एक ओर से दूसरी ओर पोछती रही पर मेज़ साफ़ न हुआ। मैले कपड़े के कारण गर्द की रेखा मेज़ पर पड़ जाती थी। तब वह दूसरी ओर से साफ़ करती। गर्द की पहली रेखा साफ़ हो जाती पर दूसरी रेखायें पड़ जातीं। तब वह मेज़ को एक सिरे से दूसरे सिरे तक साफ़ करने लगी पर फिर वही हुआ। मैले कपड़े के कारण यही होता रहा। एक रेखा मिटती पर दूसरी पड़ जाती। धर्म-पुत्र थोड़ी देर तक यह सब देखता रहा, फिर कहा—'आप यह क्या कर रही हैं?'

'देखते नहीं, कल छुट्टी है, उसके लिए मैं मेज़ साफ़ कर रही हूँ। इस मेज़ को मैं नहीं साफ़ कर पा रही हूँ। यह साफ़ नहीं हो पाता। मैं बिल्कुल थक गई।'

'मेज़ साफ़ करने के पहले आप कपड़े को साफ़ कर लें।'

स्त्री ने वैसा ही किया और मेज़ साफ़ हो गया।

'आपको धन्यवाद,' स्त्री ने कहा।

सुबह उसने स्त्री से बिदा ली और अपना रास्ता लिया। बहुत दूर चलने पर वह जंगल के सिरे पर पहुँचा। वहाँ कुछ किसान एक टेढ़ी लकड़ी से पहिया बना रहे थे। पास आकर धर्म-पुत्र ने देखा कि वे लोग बार-बार चक्कर काट रहे हैं पर लकड़ी को झुका नहीं पाते।

खड़े होकर वह जिससे लकड़ी कस कर बाँध दी गई थी उसे देखने लगा। वह खूँटा जम कर नहीं गड़ा था, फलतः जब आदमी लोग घूमते तो वह भी घूम जाता। धर्म-पुत्र ने कहा 'मित्रो, क्या कर रहे हो?'

'अरे, देखते नहीं क्या? हम लोग पहिया बना रहे हैं? दो बार हम घूम चुके अब थक गए पर लकड़ी झुकती नहीं।'

'पहले खूँटे को अच्छी तरह गाड़ दो, नहीं तो जब तुम घूमते हो तो वह भी घूम जाता है,'—धर्म-पुत्र ने कहा।

किसानों ने उसकी राय मान ली। खूंटा अच्छी तरह गाड़ दिया। तब काम भी आसानी से पूरा हो गया।

रात धर्म-पुत्र ने उन्हीं के साथ बिताई, फिर आगे बढ़ा। दूसरे दिन वह रात-दिन चलता रहा। सुबह होने के पूर्व उसे कुछ चरवाहे मिले, जो रात बिताने के लिए रुक गए थे। वह भी उन्हीं के निकट लेट गया। उसने देखा कि उन लोगों ने अपने जानवरों को बिठा दिया है और आग बनाने की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने सूखी टहनियाँ लीं और उन्हें जला दिया परन्तु उनके जलने के पहले उन्होंने उस पर गीली लकड़ियाँ रख दीं। गीली लकड़ियाँ सूँ-सूँ करती रहीं और आग बुझ गई। तब चरवाहे और सूखी लकड़ी लाये, उसे

जलाया और उस पर गीली लकड़ी रख दी। आग फिर बुझ गई। बड़ी देर तक वे प्रयत्न करते रहे पर आग न जल सकी। तब धर्म-पुत्र ने कहा—'जल्दी से गीली लकड़ियाँ आग पर मत रख दो। पहले सूखी लकड़ी को अच्छी तरह जलने दो, तब गीली लकड़ी रखो। जब आग अच्छी तरह जल जायगी, तब तुम जितनी चाहे उतनी लकड़ी रख सकते हो।'

चरवाहों ने उसकी राय मान ली। उन्होंने गीली लकड़ी डालने के पहले आग को अच्छी तरह जलने दिया। तब गीली लकड़ी रखा। जल्द ही आग तैयार हो गई।

धर्म-पुत्र उनके साथ थोड़ी देर तक रहा, फिर उसने आगे का रास्ता लिया। वह मन में सोच रहा था कि उसने तीन चीजें देखीं; उनका मतलब क्या है? परन्तु उसे कुछ भी समझ में न आया।

६

दिन भर वह चलता रहा। शाम को वह एक दूसरे जंगल में पहुँचा। वहाँ उसे एक साधु की गुफा मिली। उसने दरवाजे पर खटखटाया।

'कौन है?' भीतर से प्रश्न हुआ।

'एक महान पापी', धर्मपुत्र ने उत्तर दिया—'मुझे अपने पापों के साथ-साथ दूसरे के पापों के लिए भी प्रायश्चित्त करना है।'

यह सुन कर साधु बाहर आया।

'दूसरों के कौन से पाप तुम्हें ढोने पड़ रहे हैं?'

धर्म-पुत्र ने सारी कहानी कह सुनाई—अपने धर्म-पिता, भालूनी और उसके बच्चे, बंद कमरे के सिंहासन, धर्म-पिता की आज्ञा, बछड़े को खेत से बाहर निकालते हुए किसान और मालकिन के बुलाने पर बछड़े के चले जाने आदि के बारे में।

उसने कहा—'यह मैं समझ गया कि कोई बुराई द्वारा बुराई का नाश नहीं कर सकता। पर मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि उसका नाश आखिर किया कैसे जा सकता है। मुझे बताइए कि इसका क्या उपाय है ?'

साधु ने कहा—'बताओ तुमने राह में और क्या देखा ?'

धर्म-पुत्र ने मेज़ साफ़ करने वाली स्त्री, पहिया बनाने वाले किसानों और आग जलाने वाले चरवाहों के बारे में सब कह सुनाया।

साधु ने सारी बातें ध्यानपूर्वक सुनी और फिर अपनी गुफा में जाकर वह एक पुरानी कुल्हाड़ी उठा लाया।

'मेरे साथ आओ,' उसने कहा।

थोड़ी दूर चल चुकने पर साधु ने एक पेड़ की ओर इशारा किया।

'इसे काट डालो,' उसने कहा।

धर्म-पुत्र ने पेड़ काट कर गिरा दिया।

'अब इसे तीन टुकड़ों में काट डालो,' साधु ने कहा।

धर्म-पुत्र ने उसके तीन टुकड़े कर डाले। तब साधु फिर अपनी गुफा में गया और जलती हुई एक लकड़ी ले आया।

'इन तीनों टुकड़ों को जला दो,' उसने कहा।

धर्म-पुत्र ने आग तैयार की और तीनों टुकड़ों को जला दिया। जले हुए केवल तीन ठूँठ बच रहे थे।

'अब इन्हें ज़मीन में इस तरह गाड़ दो।'

धर्म-पुत्र ने वैसा ही किया।

'पहाड़ के नीचे वह नदी तुम देखते हो न! उसी में से अपने मुँह में पानी भरकर लाओ और इन जड़ों को सींचो। जिस प्रकार तुमने स्त्री को शिक्षा दी थी उसी प्रकार इस जड़ को सींचो और जिस तरह पहिया बनाने वालों को शिक्षा दी

थी उसी प्रकार इस दूसरी जड़ को सींचो और जिस प्रकार चरवाहों को शिक्षा दी थी उसी तरह इस तीसरी को सींचो। जब इन अधजले ठूँठों से सेव के पेड़ आ जावेंगे तब तुम्हें मालूम हो जायगा कि दुनिया से बुराइयाँ किस तरह दूर की जा सकती हैं। और तभी तुम्हारे पापों का प्रायश्चित भी हो जायगा।'

इतना कह कर साधु फिर अपनी गुफा को लौट गया। धर्म-पुत्र बड़ी देर तक सोचता रहा पर उसे साधु की बात कुछ समझ में न आई। फिर भी उसने साधु की आज्ञानुसार काम शुरू कर दिया।

१०

धर्म-पुत्र नदी के तट पर गया, पानी से अपना मुँह भरा और आकर पहले ठूँठ की जड़ में पानी डाल दिया। ऐसा वह बराबर करता रहा और तीनों ठूँठों को सींचा। जब वह बिल्कुल थक गया और उसे ज़ोर की भूख लग आई तब वह साधु से कुछ खाने को माँगने के लिए गुफा के पास पहुँचा। दरवाज़ा खोलकर जब वह भीतर गया तो उसने देखा कि एक बेंच पर साधु मरा हुआ पड़ा है। धर्म-पुत्र ने कुछ खाने की इधर-उधर तलाश की तो कुछ थोड़ी सी सूखी रोटी पड़ी दिखाई पड़ी। उसने थोड़ी सी रोटी खाई। तब उसने फावड़ा उठाया और साधु की क़ब्र तैयार करने में जुट गया। रात में वह ठूँठों को सींचने के लिए पानी लाता और दिन में क़ब्र खोदता। जैसे ही उसने क़ब्र पूरी खोद ली और साधु की लाश को दफ़नाने जा रहा था वैसे ही कुछ ग्रामीण साधु के लिए भोजन लेकर आये।

लोगों को उसने बताया कि साधु मर गया है और वह उसे अपना आशीर्वाद देकर अपने स्थान पर छोड़ गया है।

उन्होंने साधु को दफ़ना दिया। रोटी उन्होंने धर्मपुत्र को दे दी और भविष्य में उसके लिए खाना लाने का वादा करके वे चले गए।

धर्मपुत्र उस बूढ़े साधु के स्थान पर रहने लगा। वह उन ग्रामीणों द्वारा लाये भोजन से पेट भरता और साधु की आज्ञा का पालन करता। अपने मुँह में पानी भरकर लाता और उन ठूँठों को सींचता।

इस तरह एक साल बीत गया और बहुत से लोग उसे देखने के लिए आये। उसका यश दूर-दूर फैल गया कि एक साधु अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए नदी से अपने मुँह में पानी भरकर लाता है और अधजले ठूँठों को सींचता है। दर्शनार्थियों की भीड़ आने लगी। धनी व्यापारी उसके लिए बहुमूल्य उपहार ले आते, किन्तु अपने लिए अत्यन्त आवश्यक चीज़ों को छोड़ कर बाक़ी वह ग़रीबों को बाँट देता।

इस प्रकार आधे दिन तक मुँह में पानी लाकर वह ठूँठों को सींचता और आधे दिन आराम करता और आनेवालों से मिलता। उसे जान पड़ने लगा कि अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए उसे इसी प्रकार रहने का मार्ग प्रदर्शित किया गया है।

इस प्रकार दो वर्ष बीत गए। उसने ठूँठों को सींचने में एक दिन भी भूल न की। पर अभी तक उनमें से किसी में अंकुर न उगा था।

एक दिन जब वह अपनी गुफा में लेटा था तो उसे घोड़े पर गाते हुए जाने की किसी की आहट सुनाई पड़ी। धर्म-पुत्र उस आदमी को देखने के लिए बाहर आया। एक सुदृढ़ शरीर वाला नवयुवक था। उसके कपड़े अच्छे थे और वह एक बड़े ही सुन्दर घोड़े पर चढ़ा हुआ था।

धर्म-पुत्र ने, उसे रोक कर पूछा कि वह कौन है और कहाँ जा रहा है।

लगाम खींच कर उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—'मैं एक लुटेरा हूँ। मैं लोगों को हत्या करता घूमता रहता हूँ और जितने ही लोगों की मैं हत्या करता हूँ उतना खुल कर मैं गा सकता हूँ।'

धर्म-पुत्र को आश्चर्य हुआ और उसने अपने मन में सोचा कि ऐसे व्यक्ति को पाप से कैसे छुटकारा दिलाया जा सकता है। जो मेरे पास स्वयं ही आकर अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं उनसे बात करना भी आसान है। पर इसे तो अपने पापों पर ही गर्व है।

इसलिए उसने कुछ उत्तर न दिया और सोचता हुआ लौट आया।

'अब मैं क्या करूँ? यह लुटेरा यहाँ भी आवेगा। इससे आने वाले लोग डर जाँयगे। वे यहाँ आना बंद कर देंगे। इससे उनकी हानि होगी। और मैं कैसे रहूँगा यह भी मैं नहीं कह सकता।'

इसलिए धर्म-पुत्र लौट पड़ा और लुटेरे से बोला—'मेरे पास यहाँ जो लोग आते हैं वे अपने पापों पर गर्व नहीं करते, बल्कि वे पश्चाताप करते हैं और क्षमा चाहते हैं। यदि तुम्हें ईश्वर का भय है तो तुम भी अपने पापों के लिए पश्चाताप करो। यदि तुम्हारे हृदय में पश्चाताप नहीं है तो यहाँ से चले जाओ और फिर कभी यहाँ न आना। मुझे कष्ट न दो और न आकर यहाँ आनेवालों को ही डराओ। यदि तुम मेरी बात न मानोगे तो ईश्वर तुम्हें सजा देगा।'

लुटेरा हँस पड़ा 'मुझे ईश्वर का भय नहीं है और न मैं तुम्हारी बात ही सुन सकता हूँ। तुम मेरे स्वामी नहीं हो। तुम

अपनी पवित्रता पर जीवित हो और मैं अपने लुटेरेपन पर। हम सभी को जीने का अधिकार है। तुम अपने पास आने-वाली बूढ़ी स्त्रियों को शिक्षा दे सकते हो पर तुम मुझे उपदेश न दो। चूँकि तुमने मुझे ईश्वर की याद दिला दी है, इसलिए कल मैं दो और आदमियों की हत्या करूँगा। मैं तुम्हें अभी ही मार डालता पर मैं अभी अपने हाथ गन्दे करना नहीं चाहता। भविष्य में तुम मुझसे दूर रहने की कोशिश करना।'

यह धमकी देकर लुटेरा चला गया। वह फिर वापस नहीं आया। धर्म-पुत्र शान्ति के साथ आठ वर्ष तक वहाँ रहता रहा।

११

एक दिन धर्म-पुत्र रात में ठूँठों को सींचने के बाद अपनी गुफा में लौटा और बैठकर सुस्ताते हुए रास्ते की ओर देख रहा था कि कोई और आदमी तो नहीं आ रहा है, किन्तु उस दिन कोई न आया। शाम तक वह अकेला बैठा रहा। उसे अपने पिछले जीवन की याद हो आई। लुटेरे ने उससे कहा था कि तुम अपनी पवित्रता पर जीवित हो। उसने अपने सम्बन्ध में भी कहा था। उसने सोचा मैं उस साधु के बताये अनुसार नहीं रह रहा हूँ। साधु ने मुझे तपस्या करने को कहा था और मैं उससे जीविका के साथ-साथ यश भी प्राप्त कर रहा हूँ। मुझे इस यश का इतना प्रलोभन है कि आज लोग नहीं आये तो मैं उदास हो गया हूँ; और जब वे आते हैं तो मुझे प्रसन्नता होती है, क्योंकि वे मेरी प्रशंसा करते हैं। इस तरह मुझे नहीं रहना चाहिए। प्रशंसा की इच्छा के कारण मैं पथ-भ्रष्ट हो गया हूँ। मैंने अपने पिछले पापों का प्रायश्चित्त नहीं किया, बल्कि अपने पापों की वृद्धि की है। मैं जंगल के दूसरे भाग में चला जाऊँगा जहाँ लोग न पहुँच सकें। वहाँ मैं इस प्रकार रहूँगा,

जिससे कि मेरे पिछले पापों का प्रायश्चित्त हो जाय और नये पापों की वृद्धि न हो।

यह सोचकर धर्म-पुत्र ने एक थैले में सूखी रोटियाँ भरीं और एक फाड़वा लेकर गुफे को छोड़ कर जंगल के एक एकान्त भाग की राह ली। वहाँ वह अपने लिए एक गुफा बना कर लोगों की पहुँच से दूर रह सकता था।

वह थैला और फाड़वा लेकर जाने के लिए बाहर निकला ही था कि लुटेरा उसकी ओर आता हुआ दिखाई पड़ा। धर्म-पुत्र भयभीत हो उठा और भाग खड़ा हुआ. लेकिन लुटेरे ने उसे पकड़ लिया और पूछा 'तुम कहाँ जा रहे हो?'

धर्मपुत्र ने कहा कि वह ऐसी जगह जाना चाहता है जहाँ उसके पास कोई पहुँच न सके। यह सुनकर लुटेरे को आश्चर्य हुआ।

उसने पूछा—'यदि लोग तुम्हारे पास नहीं आवेंगे तो तुम रहोगे किसके सहारे?'

धर्मपुत्र ने अब तक इस सम्बन्ध में कुछ नहीं सोचा था पर लुटेरे के प्रश्न ने उसे यह याद दिला दिया कि जीने के लिए भोजन तो जरूरी होगा ही। उसने उत्तर दिया—'भगवान दे देगा।'

लुटेरे ने कुछ उत्तर न दिया और एक ओर को घोड़ा बढ़ा कर चल दिया।

'मैंने उससे उसके जीवन के सम्बन्ध में कुछ क्यों नहीं कहा', उसने सोचा—'सम्भव है वह अब भी पश्चात्ताप करता। आज वह अधिक सीधा मालूम होता था, उसने मुझे मार डालने की धमकी न दी।' उसने चिल्लाकर लुटेरे से कहा—'तुम्हें अपने पापों के लिए प्रायश्चित्त करना चाहिए। ईश्वर से तुम बच नहीं सकते।'

लुटेरे ने अपना घोड़ा मोड़ा और अपनी कमर से एक छुरा निकाल कर उसको धमकाया। बेचारा धर्म-पुत्र भयभीत हो उठा और जंगल में भाग गया।

लुटेरे ने उसका पीछा न किया। उसने पुकार कर कहा—'बूढ़े, मैंने तुझे दो बार छोड़ दिया, पर अब यदि तुम मेरे बीच में बोले तो मैं तुम्हारा सिर उतार लूँगा।'

घोड़ा बढ़ा कर वह चला गया। शाम को जब धर्मपुत्र उन ठूँठों को सींचने के लिए गया तो उसने देखा कि एक में अंकुर निकल आया है। सेव का एक छोटा सा पेड़ उग रहा था।

१२

सब की नज़र से बच कर धर्मपुत्र अकेले रहने लगा। जब उसकी सूखी रोटियाँ समाप्त हो गईं तो उसने सोचा—अब खाने के लिए कंद-मूल की खोज करनी चाहिए। थोड़ी दूर जाने पर ही उसने देखा कि एक पेड़ की डाल से सूखी रोटियों से भरा हुआ एक थैला लटक रहा है। वह उसे उठा लाया और जब तक वह समाप्त न हो गया वह उसी के ऊपर निर्भर रहा।

जब सब रोटियाँ समाप्त हो गईं तब फिर उसे उसी डाल पर एक दूसरा थैला रोटियों से भरा हुआ मिल गया। वह उसे उठा लाया। इस तरह वह रहने लगा। अब उसे केवल लुटेरे का ही भय रह गया था। जब कभी वह लुटेरे के जाने की आहट पाता तो छिप जाता और सोचता ऐसा न हो कि वह मुझे अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के पहले ही मार डाले।

इस तरह रहते हुए उसे दस वर्ष और बीते। सेब का एक पेड़ उग रहा था, पर बाक़ी दो अब भी उसी प्रकार बने थे।

एक दिन धर्म-पुत्र जल्द ही उठा और अपने काम पर गया। ठूँठों की जड़ों को अच्छी तरह सींच चुकने पर वह थक गया और सुस्ताने के लिए बैठ गया। बैठ कर वह सोचने लगा—

मैंने पाप किया है और मृत्यु से भी डरता हूँ। हो सकता है कि ईश्वर की यही इच्छा हो कि मैं अपने पापों को फिर से प्राप्त करूँ।

उसने इतना सोचा ही था कि लुटेरे के आने की आवाज़ सुनाई पड़ी। वह किसी बात के लिए क़समें खा रहा था। उसकी आहट सुनते ही धर्मपुत्र ने अपने मन में सोचा—

'ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध मेरा कोई हित-अनहित नहीं हो सकता।'

वह लुटेरे के निकट गया। उसने देखा लुटेरा अकेला नहीं था उसके पीछे घोड़े की पीठ पर एक और आदमी बैठा था। उसके हाथ-पैर बँधे हुए थे। वह आदमी कुछ कर नहीं रहा था पर लुटेरा उस पर गालियों की बौछार कर रहा था। धर्म-पुत्र उसके निकट जाकर घोड़े के सामने खड़ा हो गया।

'इस आदमी को तुम कहाँ लिए जा रहे हो?' उसने पूछा।

'जंगल में', लुटेरे ने उत्तर दिया—'यह एक सौदागर का लड़का है और यह अपने पिता के धन का पता नहीं दे रहा है। मैं इसे वहाँ कोड़े से पीट-पीट कर कहलाऊँगा।'

लुटेरे ने घोड़े को एँड़ लगाई पर धर्मपुत्र ने उसकी लगाम पकड़ कर रोक लिया।

'इसे छोड़ दो', उसने कहा।

लुटेरे को क्रोध आ गया। धर्म-पुत्र को मारने के लिए उसने अपना हाथ उठाया।

'क्या तुम भी इस आदमी की तरह कोड़ों का मज़ा चखना चाहते हो। मैंने तुम्हें पहले ही सावधान कर दिया है। भला चाहते हो तो रास्ता छोड़ दो।'

पर धर्म-पुत्र के चेहरे पर भय का नाम न था।

'तुम जा नहीं सकते', उसने कहा—'मुझे अब तुम्हारा

भय न रहा। मैं ईश्वर के अतिरिक्त और किसी से नहीं डरता और उसकी इच्छा है कि मैं तुम्हें यहाँ से न जाने दूँ। इस आदमी को छोड़ दो।'

लुटेरे की त्योरियाँ चढ़ गईं पर उसने जेब से चाक़ू निकाल कर सौदागर के लड़के के बंधन काट दिए।

'तुम दोनों भाग जाओ', उसने कहा—'और भविष्य में मेरी राह में न आना।'

सौदागर का लड़का कूद कर भाग निकला। लुटेरा फिर अपने घोड़े की पीठ पर बैठना चाहता ही था कि धर्म-पुत्र ने उसे रोक लिया। वह लुटेरे को पापमय जीवन त्यागने की शिक्षा देने लगा। लुटेरा उसकी बातें शान्ति के साथ सुनता रहा, फिर घोड़े पर चढ़ कर एक ओर चला गया।

दूसरे दिन सुबह धर्म-पुत्र उन ठूँठों को सींचने के लिए गया। ओह! दूसरे ठूँठ में भी अंकुर निकल आया था। सेब का एक और पेड़ वहाँ उग रहा था।

१३

दस वर्ष और बीत गए। धर्म-पुत्र एक दिन चुपचाप बैठा था। उसे न किसी चीज़ की इच्छा थी, न किसी का भय था, उसका हृदय प्रसन्नता से परिपूर्ण था।

उसने सोचा—ईश्वर ने मानव पर कितनी कृपा की है, किन्तु फिर भी वे व्यर्थ में अपने को कष्ट दिया करते हैं। सुख से रहने में उन्हें क्या बाधा होती है?

मानव की बुराइयों और अपने द्वारा लाये गए कष्टों की यादकर उसका हृदय भय और दया से भर गया।

उसने अपने मन में सोचा—इस प्रकार यहाँ पड़े रहना मेरे लिए व्यर्थ है। मैंने जो कुछ सीखा है उसे दूसरों को भी सिखाना चाहिए।

जैसे ही उसने यह कहा उसे लुटेरे के आने की आहट मिली। वह जा रहा था और धर्म-पुत्र सोच रहा था—उससे कुछ कहना व्यर्थ है। भला वह कब समझने का?

यह उसका पहला विचार था परन्तु तुरन्त ही उसने अपना विचार बदल दिया और निकल कर सड़क पर आया। उसने देखा लुटेरा उदास दिखाई पड़ता है, उसकी आँखें नीचे की ओर झुकी हुई हैं। धर्म-पुत्र ने उसे देखा; उसे उस पर दया आ गई। दौड़ कर वह उसके निकट गया और उसके घुटने पर हाथ रखकर कहा—'मेरे प्यारे भाई, अपनी आत्मा पर थोड़ा सा तो रहम करो। तुममें ईश्वर का वास है। तुम स्वयं कष्ट उठाते हो और दूसरों को भी सताते हो। और भविष्य के लिए और भी अधिक कष्ट उत्पन्न करते हो, किन्तु फिर भी ईश्वर तुम पर प्रेम रखता है और तुम्हारे लिए उसका बरदान मौजूद है। अपने को बिलकुल बरबाद मत करो। अपने को बदलो।'

लुटेरे की त्योरियाँ चढ़ गईं और उसने मुँह मोड़ कर कहा—'मुझे तुम अकेला छोड़ दो।'

लेकिन धर्म-पुत्र ने लुटेरे को और कस कर पकड़ लिया; उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे।

तब लुटेरे ने आँखें ऊपर उठाईं और धर्म-पुत्र की ओर देखा। बड़ी देर तक वह उसे उसी प्रकार देखता रहा, फिर घोड़े पर से उतर कर वह धर्म-पुत्र के पैरों पर लोट गया।

उसने कहा—'तुमने मुझे जीत लिया। बीस वर्ष तक मैंने तुम्हारा सामना किया पर आज आखिर तुमने मुझे जीत लिया। तुम जो चाहो वह करो क्योंकि अब मेरा अपने ऊपर अधिकार न रह गया। पहली बार जब तुमने मुझसे कहा था तो मुझे और क्रोध आया था। पर जब तुम आदमियों से दूर रहने के लिये वहाँ से चले आये तो मैं तुम्हारे शब्दों पर विचार

करने लगा, क्योंकि तब मैंने देखा कि तुम लोगों से अपने लिए कुछ नहीं चाहते। उस दिन से मैं तुम्हारे लिए भोजन लाता और पेड़ पर लटका जाता था।'

धर्म-पुत्र को याद आ गया कि स्त्री को मेज़ साफ़ करने के लिए पहले कपड़े को धोना पड़ा था। इसी प्रकार जब उसने अपने लिए चिन्ता करनी छोड़ दी, अपने हृदय को साफ़ कर लिया, तभी वह दूसरे के हृदय को भी शुद्ध करने में समर्थ हो सका।

लुटेरे ने फिर कहा—'जब मैंने देखा कि तुम्हें मृत्यु से भय नहीं है तब मेरे हृदय में परिवर्तन हुआ।'

तब धर्म-पुत्र को स्मरण हो आया कि किसान तब तक लकड़ी को झुका कर पहिया बनाने में समर्थ न हो सके जब तक कि खूँटे को उन्होंने अच्छी तरह गाड़ न दिया। इसलिए जब तक उसने अपने हृदय से मृत्यु के भय को निकाल बाहर न किया और अपने जीवन को ईश्वर से संयुक्त न कर दिया तब तक वह इस आदमी के उच्छृंखल हृदय का दमन न कर सका।

लुटेरे ने कहा—'लेकिन मेरा हृदय तब तक द्रवित नहीं हुआ जब तक कि तुमने मुझ पर दया न दिखाई और मेरे लिए रोने न लगे।'

धर्म-पुत्र का हृदय खिल उठा। लुटेरे को लेकर वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ वे ठूँठ लगे हुए थे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि तीसरे ठूँठ से भी सेव के पेड़ का अंकुर निकल आया है। धर्म-पुत्र को स्मरण हो आया कि चरवाहे गीली लकड़ी को तब तक जलाने में समर्थ न हो सके जब तक कि आग अच्छी तरह नहीं जल उठी। इसलिए जब उसका हृदय अच्छी

तरह जलने लगा तभी वह दूसरे के हृदय को प्रकाशित करने में सफल हो सका।

धर्म-पुत्र को इस समय बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि उसने अपने पापों का प्रायश्चित्त कर लिया था।

उसने लुटेरे को यह सब बताया और मर गया। लुटेरे ने उसकी लाश को दफ़ना दिया और उसके आदेशानुसार रहने लगा; जो कुछ धर्म-पुत्र ने उसे शिक्षा दी थी उसे वह दूसरे लोगों को दिया करता।

रोटी का देव

एक दिन प्रातःकाल एक ग़रीब किसान अपने हल-बैल लेकर खेत जोतने को चला। साथ में दोपहर में खाने के लिए उसने रोटी भी रख ली। खेत पर पहुँच कर उसने रोटी को अपने कोट में लपेट कर एक झाड़ी के पास रख दिया और हल तैयार कर खेत जोतने में लगा। थोड़ी देर बाद उसके घोड़े थक गए, उसे भूख भी लग आई थी, उसने हल को खेत में खड़ा कर दिया, घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया और कुछ खाकर भूख मिटाने के लिए वह झाड़ी के निकट पहुँचा।

उसने अपना कोट उठाया, पर रोटी का कहीं पता न था। उसने इधर-उधर देखा, कोट को कई बार झाड़ा, उसे उलट-पलट कर देखा, पर रोटी नदारद। किसान को कुछ समझ में न आ रहा था।

'बड़े आश्चर्य की बात है', उसने अपने मन में सोचा, 'मैंने तो किसी को देखा नहीं पर आया यहाँ कोई ज़रूर था, जिसने मेरी रोटी ग़ायब कर दी।'

बात यह थी कि जब किसान हल जोत रहा था तो एक देव ने उसकी रोटी ग़ायब कर दी थी; उस समय वह झाड़ी के पीछे बैठा किसान द्वारा शैतान को पुकारने और क़सम खाते सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था।

किसान को अपनी रोटी के ग़ायब हो जाने का बहुत दुःख हुआ पर उसने अपने मन में कहा—क्या किया जा सकता है? आख़िर मैं भूखों तो मर न जाऊँगा। पर जो रोटी ले गया

होगा वह अवश्य ही भूखा रहा होगा। भगवान करे वह उससे लाभ उठा सके।

यह कह कर वह कुएँ पर गया, पेट भर पानी पिया, और तब आराम करने के लिए लेट गया। थोड़ी देर बाद उसने अपने घोड़े को पकड़ कर फिर हल में जोत दिया और खेत जोतने लगा।

देव को बहुत दुःख हुआ कि किसान को वह पाप करने पर मजबूर न कर सका। वह सारी घटना अपने स्वामी शैतान को सुनाने के लिए चला गया।

जाकर उसने शैतान से कहा कि उसने किस प्रकार किसान की रोटी चुरा ली पर चोर को बुरा-भला कहने के बजाय किसान ने कहा—'भगवान करे वह उससे लाभ उठा सके।'

शैतान ने क्रोधित होकर कहा—'यदि मनुष्य ने तुम पर विजय प्राप्त की तो यह तुम्हारा क़सूर है—तुम्हें अपना काम करने का ढंग भी नहीं मालूम। यदि सभी किसान और उसके घर की स्त्रियाँ ऐसा ही करने लगेंगी तब तो हमारा अन्त ही हो जायगा। इस मामले का अन्त इसी प्रकार नहीं किया जा सकता। तुरन्त लौट जाओ,' उसने कहा, 'और काम पूरा करो। यदि तुमने तीन वर्ष के भीतर किसान पर विजय न प्राप्त की तो मैं तुम्हें पवित्र जल में डुबो दूँगा।'

देव बहुत डरा; तुरन्त ही वह पृथ्वी पर अपनी ग़लती को ठीक करने की तरकीब सोचता हुआ आया। बहुत देर तक सोचने के बाद उसको एक अच्छा उपाय सूझ पड़ा।

उसने अपना रूप मजदूरों का सा बना लिया और उस ग़रीब किसान के पास जाकर नौकरी कर ली। पहले साल उसने किसान के एक दलदल भूमि में अनाज बोने की राय दी। किसान ने उसकी राय मान ली और अनाज बो दिया। उस साल

सूखा पड़ा और दूसरे किसानों के खेत सूरज की गर्मी में जल कर बरबाद हो गए पर ग़रीब किसान की फ़सल खूब हुई। उसके पास साल भर खाने भर को ही काफ़ी अनाज न हो गया बल्कि बहुत सा बच भी रहा।

दूसरे साल देव ने उसे पहाड़ी पर अनाज बोने की राय दी। उस साल गर्मी में बहुत पानी बरसा। दूसरे किसानों की फ़सल पानी में गिरकर सड़ गई लेकिन ग़रीब किसान की फ़सल पहाड़ पर लहलहा रही थी। उसके पास पहले से ही काफ़ी अनाज बच रहा था, इसलिए उसे यह न सूझ पड़ रहा था कि वह इस बचे हुए अन्न का क्या करे।

तब देव ने उसे अनाज से शराब तैयार करना सिखा दिया। किसान ने बढ़िया शराब तैयार की। उसे वह स्वयं पीता तथा अपने मित्रों को पिलाता।

देव अपने मालिक के पास पहुँचा और उससे अपनी सफलता की डींग मारते हुए कहा कि अपनी असफलता की पूर्ति उसने कर ली है। शैतान ने कहा कि वह स्वयं उसके काम को देखने के लिये आवेगा।

शैतान किसान के घर आया। उसने देखा कि किसान ने अपने धनी पड़ोसियों को निमंत्रित कर रखा है और उन्हें शराब पिला रहा है। उसकी स्त्री मेहमानों को शराब बाँट रही है। ऐसा करते हुए जब वह एक मेज़ के निकट से गुज़री तो उसे धक्का लगा और एक गिलास शराब ज़मीन पर गिर गई।

किसान ने क्रोध के साथ अपनी स्त्री को डाँटते हुए कहा—'अरे आलसिन, यह क्या कर रही है? क्या समझती है कि यह कोई नाली का पानी है? लूली, इतनी बढ़िया चीज़ को तू इस तरह ज़मीन पर गिराती फिर रही है।'

देव ने शैतान का कंधा हिलाते हुए कहा—'देखो, यह वही

किसान है, जितने अपने एकमात्र रोटी के टुकड़े के चले जाने पर भी कुछ दुःख या क्रोध न किया था।'

स्त्री को बुरा-भला कहते हुए किसान ने शराब का बर्तन स्वयं ले लिया और शराब बाँटने लगा। उसी समय एक ग़रीब अपने काम से लौट कर अनिमंत्रित ही वहाँ आया। उसने सब लोगों का अभिवादन किया और बैठ गया; उसने देखा कि सब लोग शराब पी रहे हैं। दिन भर के परिश्रम से वह इतना थक गया था कि चाहता था कि उसे भी कोई दो-चार बूँद दे दे। बड़ी देर तक वह बैठा रहा। उसके मुँह में पानी आ रहा था पर मेज़बान ने उसे शराब पिलाने के बजाय भुन-भुना कर कहा—'यहाँ आनेवाले हर व्यक्ति को तो मैं शराब पिला नहीं सकता।'

शैतान यह सब देख कर प्रसन्न हो गया पर देव ने उससे कहा—'ज़रा और तो ठहरिये! अभी और भी होना बाक़ी है।'

धनी किसानों ने ख़ूब शराब पी, उनके मेज़बान ने भी ख़ूब पी। एक दूसरे से वे लम्बी-चौड़ी हाँकने लगे।

शैतान उनकी बातें सुन-सुन कर देव की प्रशंसा करता रहा।

'यदि', उसने कहा—'शराब पीकर यह लोग इतने नीच हो जाते हैं कि आपस में ही एक दूसरे को धोखा देने लगते हैं तो शीघ्र ही वे हमारे हाथ में आ जायेंगे।'

देव ने कहा—'अभी देखो तो क्या होता है! एक गिलास और पी लेने दो। इस समय वे लोमड़ियों की भाँति अपनी दुमें हिला रहे हैं, वे एक-दूसरे के निकट आने का प्रयत्न कर रहे हैं पर शीघ्र ही वे जंगली भेड़ियों से भी बदतर हो जायेंगे।'

एक दौर और चला, उनकी बातें अब और अधिक असभ्य और उखड़ी-उखड़ी हो रही थीं। चिकनी-चुपड़ी बातों की जगह वे अब एक-दूसरे को गाली दे रहे थे। शीघ्र ही वे आपस

में लड़ कर एक दूसरे की नाक तोड़ने लगे। मेज़बान भी इस लड़ाई में शरीक हो गया। उसकी भी अच्छी तरह मरम्मत हुई।

शैतान यह सब देख कर बहुत खुश हुआ।

बोला—'बहुत खूब! यह प्रथम श्रेणी की चीज़ रही।'

लेकिन देव ने कहा—'अभी ज़रा रुकिए? सब से अच्छी बात तो अभी होने को बाक़ी ही है। तीसरा दौर तो चलने दो। अभी वे भेड़ियों की तरह गरज रहे हैं पर एक दौर और चल जाने के बाद वे सुअरों की तरह हो जायेंगे।'

तीसरा दौर भी पूरा हुआ। अब किसान बिलकुल जंगली पशु की भांति हो गए थे। वे भुनभुना रहे थे, चीख रहे थे; कारण का उन्हें स्वयं पता न था और न वे एक-दूसरे का ही सुन ही रहे थे।

मण्डली भंग होने लगी। कुछ अकेले, कुछ दो-दो, या तीन-तीन की गोल में चले। उनके पैर रास्ते में लड़खड़ा रहे थे। मेज़बान भी अपने मेहमानों को पहुँचाने के लिए चला पर वह मुँह के बल एक गड्ढे में गिर पड़ा और सुअर की तरह हाँफता हुआ पड़ा रहा।

यह देखकर शैतान और भी प्रसन्न हुआ।

उसने कहा—'यह शराब वाली तरकीब अच्छी खोज निकाली। रोटीवाली भूल का सुधार तुमने कर दिया। पर यह तो बताओ यह शराब बनती कैसे है? इसमें तुमने लोमड़ी का रक्त मिलाया होगा, जिससे किसान पहले लोमड़ियों की तरह चतुर और चिकनी-चुपड़ी बातें करनेवाले हो गए थे। तब शायद तुमने भेड़िए का ख़ून मिलाया होगा, जिससे वे भेड़ियों की तरह भयंकर हो गए और अन्त में तुमने सुअर का ख़ून मिलाया होगा जिससे वे सुअरों की तरह व्यवहार करने लगे।'

देव ने उत्तर दिया—'नहीं, यह सब मैंने कुछ नहीं किया।'

मैंने केवल यही किया कि किसान के पास जरूरत से ज्यादा अन्न हो जाय। पशु का खून सदैव ही मनुष्य में मौजूद रहता है पर जब तक उसे पेट भरने और तन ढकने भर को ही मिलता है, वह अपनी सीमा के अन्दर ही रहता है। जब तक यह बात थी किसान को अपनी रोटी के चोरी जाने पर क्रोध न आया। लेकिन जब उसके पास बच रहा तो वह उससे आनन्द प्राप्त करने के उपाय खोजने लगा। और मैंने उसे एक आनंद—शराब पीना—बता दिया, और जब वह ईश्वर की इस देन को अपने सुख के लिए शराब में परिवर्तित करने लगा तो लोमड़ी, भेड़िया और सुअर के खून ने अपना असर दिखाया। यदि वह बराबर शराब पीता रहे तो वह सदैव ही पशु बना रहेगा।'

शैतान ने देव की प्रशंसा की और उसकी पहली भूल के लिए उसको क्षमा करके उसे गौरव-पूर्ण पद प्रदान किया।

—

तीन साधु

एक पादरी आर्केंजेल से सोलोवेत्स्क के मठ को जा रहा था। उसी जहाज़ पर उस मठ के दर्शन करने के लिए बहुत से यात्री भी जा रहे थे। सफ़र मज़ेदार था। हवा अनुकूल थी और मौसम भला। यात्री का समूह जहाज़ के डेक पर खाता पीता या बातें करता हुआ बैठा था। पादरी भी निकल कर डेक पर बाहर आया। वह इधर-उधर चहलक़दमी कर ही रहा था कि उसकी दृष्टि कुछ लोगों की भीड़ पर पड़ी जो उसके पास खड़े हुए एक मल्लाह की बातें सुन रहे थे। मल्लाह समुद्र की ओर उंगली से इशारा कर रहा था। पादरी ने रुक कर जिधर मल्लाह इशारा कर रहा था उधर ही देखा। उसे सिवा चमकती हुई धूप के वहाँ कुछ भी न दिखाई दिया। उनकी बातें सुनने के लिए वह उनके निकट गया पर उसके पास पहुँचते ही मल्लाह ने अपनी टोपी उतार ली और चुप हो गया। पास खड़े लोगों ने भी अपनी टोपियाँ उतार लीं और सिर झुका कर पादरी का अभिवादन किया।

पादरी ने कहा—'आप लोग अस्त-व्यस्त न हों, मैं तो इस आदमी की बातें सुनने के लिए यहाँ आया हूँ।'

'यह मल्लाह हम लोगों को उन साधुओं के सम्बन्ध में बतला रहा था', उपस्थित भीड़ में से सौदागर ने कहा जो शायद सब में अधिक साहसी था।

पादरी एक किनारे की ओर जाकर एक स्थान पर बैठ गया और पूछा—'कौन साधु? मुझे भी सुनाओ। उनके सम्बन्ध में सुनने के लिए मैं इच्छुक हूँ। तुम इशारा क्यों कर रहे थे?'

उस आदमी ने सामने की ओर थोड़ा दाहिनी तरफ़ एक स्थान को दिखाते हुए कहा—'आप उस स्थान को देखते हैं न ? उसी द्वीप में अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए वे साधु रहते हैं।'

पादरी ने कहा—'कहाँ है वह द्वीप ? मुझे तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता।'

'वह बहुत दूर पर ! मेरे हाथ की सीध में देखिए। वह छोटा सा बादल जो आप देखते हैं, उसीके नीचे थोड़ा बाईं ओर एक हल्की रेखा सी दिखाई पड़ती है। वही वह द्वीप है', मल्लाह ने कहा।

पादरी ने बहुत ग़ौर से देखा पर उसकी अनभ्यस्त आँखों को सिवा धूप में चमकते हुए पानी के और कुछ न दिखाई पड़ा।

उसने कहा - 'मुझे तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता पर वहाँ रहनेवाले वे साधु हैं कौन ?'

मल्लाह ने उत्तर दिया—'वे पवित्र आत्मायें हैं। मैंने उनके सम्बन्ध में बहुत सी बातें सुनी थीं पर दो वर्ष पहले कभी देखा न था।'

मल्लाह ने कहना शुरू किया कि किस प्रकार वह एक बार मछली पकड़ते-पकड़ते रात में उस द्वीप के तट पर पहुँच गया। उसे पता भी न था कि वह कहाँ है। जब वह सबेरे वहाँ टहल रहा था तो उसे मिट्टी की बनी हुई एक कुटी दिखाई पड़ी। कुटी के निकट खड़ा हुआ उसे एक बूढ़ा आदमी मिला। उसी समय दो आदमी और आ गए। उन्होंने उसे खाना खिलाया, उसके कपड़ों को सुखाया और नाव की मरम्मत करने में उसकी सहायता दी।

'वे हैं किस तरह के ?' पादरी ने प्रश्न किया।

'एक नाटे क़द का है, उसकी पीठ झुकी है। वह पादरी के से कपड़े पहनता है और बहुत वृद्ध है। मेरे अनुमान से वह

सौ के ऊपर होगा। इतना बूढ़ा है वह कि उसकी दाढ़ी के सफ़ेद बाल कुछ हरे हो गए हैं। पर वह सदा मुस्कराता रहता है और उसका चेहरा स्वर्ग के दूतों के चेहरे की तरह चमकता रहता है। दूसरा लम्बा है पर है वह भी बहुत बूढ़ा। उसके शरीर पर किसानों का सा एक फटा-पुराना कोट है। उसकी दाढ़ी चौड़ी और पीले तथा भूरे रंग की है। अभी उसकी हड्डियाँ मज़बूत हैं। मेरे हाथ लगाने के पहले ही उसने मेरी नाव को उठा कर इस प्रकार आसानी से उलट दिया जैसे वह कोई साधारण बाल्टी हो। वह भी दयालु और प्रसन्नमुख है। तीसरा आदमी लम्बा है। उसकी सफ़ेद दाढ़ी उसके घुटनों तक लटकती है; वह गम्भीर व्यक्ति है और उसकी आँखों की पलकें लम्बी-लम्बी हैं। वस्त्र के नाम पर उसके शरीर पर प्रायः कुछ नहीं रहता; केवल एक टाट वह कमर से बाँधे रहता है।

'उन्होंने तुमसे बातें कीं,' पादरी ने पूछा।

ज्यादा काम तो उन्होंने बिना कुछ बोले हुए किया; आपस में भी वे एक दूसरे से बहुत कम बोलते थे। एक के आँख उठाते ही दूसरे उसकी बात समझ जाते। मैंने लम्बे वाले से पूछा कि क्या वे बहुत समय से वहाँ रह रहे हैं। उसकी त्योरियाँ चढ़ गईं और उसने धीरे से कुछ कहा, जिससे प्रगट था कि वह बहुत क्रोधित हो उठा है। लेकिन सबसे अधिक उम्रवाला मछुए का हाथ पकड़ कर मुस्कराया, यह देख लम्बे क़द वाला साधु शान्त हो गया। बूढ़े साधु ने कहा—'हम पर दया करें।' उसके अधरों पर मुस्कान की रेखा खिंच गई।

वे बातें कर ही रहे थे कि इतने में वे द्वीप के निकट आ गए।

व्यापारी ने अपने हाथ की ओर इशारा करते हुए कहा—'यदि आप चाहें तो उसे अब साफ़ देख सकते हैं।'

पादरी ने उस ओर दृष्टि की; एक काली रेखा दिखाई पड़

रही थी--यही वह द्वीप था। क्षण भर बाद वह वहाँ से उठकर जहाज़ के कप्तान के पास पहुँचा और पूछा, 'यह कौन सा द्वीप है?'

'वह! उसका तो कोई नाम नहीं। ऐसे बहुत से द्वीप इस समुद्र में हैं,' उसने उत्तर दिया।

'क्या यह सच है कि वहाँ कुछ साधु अपनी आत्मा की शान्ति के लिए निवास करते हैं?'

'लोग कहते तो हैं पर मैं कह नहीं सकता कि बात ठीक है या नहीं। मछुओं का कहना है कि उन्होंने उन्हें देखा है पर हो सकता है कि यह अतिशयोक्ति हो।'

पादरी ने कहा—'मैं उस द्वीप पर उतर कर उन्हें देखना चाहता हूँ। इसका प्रबन्ध कैसे हो सकता है?'

नाविक ने उत्तर दिया—'जहाज़ द्वीप के निकट नहीं पहुँच सकता, किन्तु आप नाव में वहाँ जा सकते हैं। आप इस सम्बन्ध में कैप्टेन से बातें कर सकते हैं।'

पादरी ने कैप्टेन को बुला भेजा।

पादरी ने कहा—'मैं उस द्वीप तक जाना चाहता हूँ, क्या कुछ नाव का प्रबन्ध नहीं हो सकता?'

कैप्टेन ने उसके विचार को बदलने का प्रयत्न किया।

कहा—'हाँ, हो तो सकता है पर इसमें समय की बहुत हानि होगी। और यदि मैं आपके कहने से ऐसा करूँ भी तो उन बूढ़ों को देखने से आप को कोई लाभ नहीं हो सकता। मैंने सुना है कि वे बूढ़े निरे मूर्ख हैं, न तो वे किसी की कुछ सुनते हैं न समझते हैं। वे किसी से बोलते नहीं। समुद्र की मछली से वे किसी प्रकार भी बेहतर नहीं हैं।'

'मैं उन्हें देखना चाहता हूँ। तुम्हारे कष्ट और समय की हानि का मूल्य मैं चुकाने को तैयार हूँ। कृपया मेरे लिए एक नाव का प्रबन्ध कर दो', पादरी ने आग्रह किया।

और कोई रास्ता था नहीं। आज्ञा दे दी गई। नाविकों ने पाल का रुख़ बदल दिया, पतवार मोड़ दी गई और जहाज़ की दिशा बदल गई। जहाज़ के एक सिरे पर पादरी के लिए एक कुर्सी रख दी गई; वहाँ बैठा हुआ वह उसी ओर को देख रहा था। सब यात्री वहीं आकर इकट्ठे हो गए, सभी की दृष्टि द्वीप की ओर लगी थी। जिनकी आँखें तेज़ थीं वे द्वीप की चट्टानों के बीच मिट्टी की झोपड़ी को देख सकते थे। अन्त में एक आदमी ने साधुओं को ही देखा। कैप्टेन दूरबीन ले आया, उससे देख-कर उसने दूरबीन पादरी के हाथ में पकड़ा दी।

'बात ठीक है, तीन आदमी तट पर खड़े हैं, वह, वहाँ; उस बड़ी चट्टान के थोड़ा बाईं ओर।'

पादरी ने दूरबीन ले ली, उसे ठीक किया; तीनों आदमी उसे भी दिख रहे थे। एक लम्बा, एक नाटा और एक बहुत छोटा तथा झुकी कमर का। तट पर वे हाथ में हाथ दिये खड़े थे।

कैप्टेन ने पादरी की ओर देख कर कहा—'जहाज़ तो अब और आगे जा नहीं सकता। यदि आप तट पर जाना चाहें तो जब तक हम लंगर डालते हैं तब तक आपको एक नाव में नीचे उतार दें।'

तार खोल दिए गए, लंगर डाल दिया गया और पाल गिरा दिये गए। एक धक्का लगा और सारा जहाज़ हिल उठा। एक नाव उतार दी गई और खेने वाले भी उतर गए। सीढ़ी द्वारा पादरी नीचे उतरा और नाव में जाकर बैठ गया। नाविकों ने अपने डाँड़ उठाये और नाव टापू की ओर तेज़ी से बढ़ चली। निकट आ जाने पर उन्हें तीनों साधु दिखाई पड़े—लम्बा साधु कमर में टाट का एक टुकड़ा पहने हुए था। छोटे क़द वाला साधु एक फटा-पुराना कोट पहने था और सबसे अधिक उम्र-

वाले के शरीर पर पादरियों का सा कपड़ा था और उसकी कमर झुकी हुई थी।

नाव किनारे पहुँच गई; मल्लाहों ने पादरी को उतरने के लिए नाव को पकड़ लिया।

बूढ़े साधुओं ने सिर झुका कर उसका अभिवादन किया; पादरी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। इस पर उन्होंने अपना सिर और भी झुका लिया। तब पादरी कहने लगा—'ऐ ईश्वर के भक्तो, मैंने सुन रखा था कि तुम लोग यहाँ अपनी और अपने साथियों की आत्मा के लिए ईसा मसीह से प्रार्थना करते हो। मैं ईसा मसीह का एक अयोग्य अनुचर हूँ, ईश्वर की कृपा से मैं उसके भक्तों को प्रार्थना करने की शिक्षा देने के लिए उत्पन्न किया गया हूँ। तुम्हें देखने की मेरी इच्छा थी। मैं आपको जो कुछ भी शिक्षा दे सकता हूँ उसके लिए तैयार हूँ।'

बूढ़े एक-दूसरे की ओर मुस्कराते हुए देखने लगे पर कहा उन्होंने कुछ भी नहीं।

पादरी ने कहा—'अच्छा आप मुझे बताएँ कि अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए आप लोग क्या करते हैं और इस टापू में आप किस तरह ईश्वर की सेवा करते हैं?'

दूसरे साधु ने गहरी निश्वास छोड़ी और उसने अपने में सबसे बुद्धिमान उस बड़े बूढ़े साधु की ओर देखा। उसने मुस्करा कर कहा—'हमें ईश्वर की सेवा करने का कोई ढंग नहीं मालूम है। हम तो केवल अपनी ही सेवा और पोषण करते हैं।'

'पर तुम लोग ईश्वर से प्रार्थना किस प्रकार करते हो,' पादरी ने पूछा।

साधु ने उत्तर दिया—'हम लोग इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—आप तीन हैं हम भी तीन हैं; हम पर कृपा रखो।'

जैसे उस बूढ़े साधु ने यह कहा उन सब ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और कहने लगे—

'आप तीन हैं, हम तीन हैं, हम पर कृपा रखो।'

पादरी ने मुस्करा कर कहा—'इसमें सन्देह नहीं कि तुमने 'तीन ऐक्य' (Trinity) के सम्बन्ध में कुछ सुन रखा है पर तुम्हारे प्रार्थना करने का ढंग ठीक नहीं है। ऐ ईश्वर के भक्तो, तुमने मेरा स्नेह प्राप्त कर लिया है। ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते हो पर तुम्हें उसकी सेवा करने का ढंग नहीं मालूम है। प्रार्थना इस तरह नहीं की जाती। मैं कहता हूँ; सुनो। मैं तुम्हें सिखाऊँगा। यह ढंग मेरा अपना नहीं है; बल्कि यह वही ढंग है जिसको कि ईसा मसीह ने धर्मपुस्तक में सब लोगों के लिए आदेश किया है।'

पादरी ने साधुओं को यह समझाना आरम्भ किया कि किस प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों को अपना दर्शन दिया—उसने परमपिता ईश्वर, ईश्वर का पुत्र और पवित्र छाया ईश्वर तीनों के सम्बन्ध में बताया।

उसने कहा—'ईश्वर के पुत्र ने पृथ्वी पर मनुष्यों की रक्षा के लिए अवतार लिया और उसी ने हमको इस प्रकार प्रार्थना करने का आदेश दिया। सुनो, और मेरे साथ तुम भी दुहराओ—हमारे पिता—'

पहले साधु ने कहा—'हमारे पिता'; दूसरे ने कहा 'हमारे पिता' और तीसरे ने कहा, 'हमारे पिता'।

'जो स्वर्ग में निवास करते हैं', पादरी ने आगे कहा।

पहले साधु ने दुहराया—'जो स्वर्ग में निवास करते हैं' पर दूसरे की जबान शब्दों में लड़खड़ा गई और लम्बा साधु तो उन शब्दों को ठीक से दुहरा ही न सका। उसके लम्बे बालों ने उसके मुँह को ढँक लिया था, इसलिए वह साफ़-साफ़ बोल

नहीं पाता था। सबसे बूढ़े साधु के दाँत नहीं थे, इसलिए वह अच्छी तरह उच्चारण नहीं कर पा रहा था।

पादरी ने शब्दों को फिर दुहराया; साधुओं ने भी उसी प्रकार किया। पादरी एक पत्थर पर बैठ गया; बूढ़े साधु उसके सामने उसका मुँह देखते हुए बैठ गए। पादरी के साथ वे भी प्रार्थना के शब्दों को दुहराने लगे। दिन भर पादरी एक-एक शब्द को बीस-तीस और सौ-सौ बार कहता; बूढ़े साधु भी उसके बाद कहते। वे ग़लती करते और पादरी उसका संशोधन करता और फिर नये सिरे से कहलाना शुरू करता।

पादरी ने जब तक उन्हें पूरी स्तुति नहीं सिखा दी तब तक वह वहाँ से टस-से-मस न हुआ। अब वे केवल उसके साथ ही स्तुति को दुहरा नहीं लेते थे बल्कि अपने आप भी पढ़ लेते थे। मध्यवाला सबसे पहले सीखने में समर्थ हुआ, वह एक बार में ही पूरी स्तुति कहने लगा। पादरी ने उससे बार-बार कहलाया और अन्त में शेष दोनों साधु भी स्तुति दुहराने में सफल हो सके।

जब पादरी जहाज़ पर लौटने के लिए उठा तो शाम हो रही थी और चन्द्रमा की सफ़ेद किरणें पानी पर नाच रही थीं। जब उसने उनसे बिदा ली तो बूढ़े साधुओं ने पृथ्वी तक सिर झुका कर उसे प्रणाम किया। पादरी ने उन्हें उठा कर उनके मस्तक को चूमा और उनसे उसी प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करने को कहा। तब वह नाव पर बैठकर जहाज़ को लौट गया।

नाव में बैठा हुआ जब वह जहाज़ की ओर जा रहा था तो उसे तीनों साधुओं की प्रार्थना के स्वर सुनाई पड़ रहे थे। जब नाव जहाज़ के निकट आगई तो उनका स्वर सुनाई पड़ना बन्द हो गया किन्तु फिर उन्हें वह चाँदनी में तट पर उसी प्रकार खड़े हुए देख सकता था जिस प्रकार वह उन्हें वहाँ छोड़ आया

था। सब से छोटा बीच में था, लम्बा दाहनी ओर और मझोला बाईं ओर था। जब पादरी जहाज़ पर पहुँच गया तो लंगर उठा लिया गया, पाल चढ़ा दिए गए और जहाज़ धीमे-धीमे डोल चला। पादरी जहाज़ के किनारे बैठकर पीछे छोड़े गए उस द्वीप की ओर देख रहा था। कुछ देर तक तीनों साधु दिखाई पड़ते थे पर शीघ्र ही उनका दिखना बन्द हो गया; द्वीप अब भी दिखाई पड़ता था। अन्त में वह भी आँखों से ओझल हो गया। पादरी की आँखों के सामने केवल विस्तृत जल-राशि चाँदनी में नाच रही थी।

H83.1 K92T

यात्री सोने के लिए लेट गए। डेक पर पूर्ण शान्ति थी। पादरी की आँखों में नींद नहीं थी। वह जहाज़ पर बैठा हुआ समुद्र के विस्तार की ओर देख रहा था जहाँ वह द्वीप विलीन हो गया था। उसे बार-बार उन बूढ़े साधुओं का स्मरण आ रहा था। वह सोच रहा कि वे बेचारे एकान्तवासी साधु उससे प्रार्थना करना सीख कर बहुत प्रसन्न हुए हैं। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने उसे अपने सच्चे भक्तों को शिक्षा देने का अवसर दिया।

H4153

पादरी बैठा रहा, वह समुद्र की ओर देखता हुआ विचारों के प्रवाह में वह रहा था और चाँदनी उसकी आँखों के सामने कभी इस लहर पर और कभी उस लहर पर नाचती थी। सहसा उसे चन्द्रमा द्वारा समुद्र पर बने रजत पथ पर कोई सफ़ेद चीज़ चमकती हुई दिखाई पड़ी। समुद्रपरी है कोई या शायद किसी छोटी नाव का सफ़ेद पाल है! आश्चर्य के साथ पादरी की आँखें उस पर जम गईं।

उसने सोचा—ज़रूर यह कोई नाव है, जो उनके पीछे-पीछे आ रही है। पर यह तो हमारे पास बहुत तेज़ी से पहुँच रही है। एक क्षण पहले यह बहुत दूर पर थी पर अब तो वह बहुत

निकट है। यह नाव नहीं हो सकती क्योंकि पाल तो दिखाई नहीं पड़ता। चाहे जो चीज़ हो पर यह हमारे निकट बहुत शीघ्रता से आ रही है।

उसे यह समझ में न आया कि यह कौन सी चीज़ है—न तो नाव है, न कोई चिड़िया और न मछली ही। आदमी से बहुत बड़ा है और फिर आदमी इस तरह खुले समुद्र में दौड़ भी तो नहीं सकता। पादरी उठा और उसने नाविक से कहा—'ज़रा देखो तो मित्र वह क्या है?'

पादरी ने अपना प्रश्न फिर दुहराया यद्यपि अब वह उस चीज़ को अच्छी तरह पहचान सकता था—तीनों बूढ़े साधु थे, बिलकुल सफ़ेद, चमक रहे थे; उनकी सफ़ेद दाढ़ी चमक रही थी। वे जहाज़ के निकट इतनी तेज़ी से बढ़ रहे थे मानो जहाज़ चल ही न रहा हो।

नाविक ने देखा; उसके हाथ से भय के कारण यंत्र छूट गया।

'हे भगवान, यह साधु हमारे पीछे पानी पर इस तरह दौड़ रहे हैं जैसे कोई सूखी भूमि पर दौड़ता है।'

यह सुनते ही यात्री अपने बिस्तरे से निकल वहाँ आ गए। उन्होंने देखा वे तीनों साधु एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए उनकी ओर दौड़े आ रहे हैं। अगल-बग़ल वाले साधु जहाज़ को रोकने का इशारा कर रहे थे। तीनों साधु पानी पर बिना अपने पैर उठाये फिसलते हुए चले आ रहे थे। जहाज़ के रुकने के पहले वे जहाज़ के पास पहुँच गए। अपने सिर को ऊपर उठा कर वे तीनों जैसे एक ही स्वर में कहने लगे—'हे भगवान के दास, हम तुम्हारी शिक्षा को भूल गए हैं। जब तक हम कहते रहे तब तक वह हमें स्मरण रहा पर जब कुछ देर के लिए हम रुक गए तो एक शब्द भूल गया। अब तो सब भूल

गया। अब हमें कुछ भी याद नहीं रह गया। हमें फिर से शिक्षा दीजिए।

पादरी ने अपने दोनों हाथ वक्ष पर रख लिए और जहाज पर से झुक कर कहा—'ईश्वर के प्यारे भक्तो, तुम्हारी अपनी प्रार्थना ही तुम्हें ईश्वर तक पहुँचा देगी। मैं तुम्हें शिक्षा देने के योग्य नहीं हूँ। हम पापियों के लिए भी प्रार्थना करना।'

पादरी ने उनके सम्मुख अपना सिर झुकाया। तीनों साधु समुद्र पर फिर लौट पड़े और दूसरे दिन प्रातःकाल तक उस स्थान पर एक प्रकाश दिखाई पड़ता रहा जहाँ पर वे आँखों से ओझल हुए थे।

एक आदमी को कितनी ज़मीन चाहिए ?

बड़ी बहिन शहर से छोटी बहिन से मिलने आई। बड़ी बहिन का विवाह एक व्यापारी से और छोटी का एक किसान से हुआ था। दोनों चाय पी रही थीं और बातें कर रही थीं। बड़ी बहिन शेखी मारने लगी और अपने शहर के रहन-सहन का वर्णन बढ़ा-चढ़ा कर करने लगी कि वह वहाँ बड़ी सुगमता और आराम के साथ रहती, इधर-उधर जाती, अपने बालकों को अच्छी-अच्छी पोशाकें पहनाती, बढ़िया चीज़ें खाती और स्केटिंग का खेल खेलने, घूमने और नाटक देखने जाती थी।

यह बात छोटी बहिन को बुरी लगी और वह अपने देहात के जीवन की प्रशंसा करके उसको ताना मारने लगी।

वह बोली—'मैं तो अपने जीवन को तुम्हारे जीवन से कभी भी नहीं बदलना चाहती। मैं यह मानती हूँ कि हमारा जीवन अनोखी घटनाओं से रहित है, हमारा जीवन सनसनीदार नहीं है। यद्यपि तुम्हारा जीवन शानदार है तो भी तुम या तो व्यापार में बन ही जाओ या बिल्कुल बिगड़ जाओ। तुम्हें यह कहावत मालूम है न कि हानि लाभ की बड़ी बहन है। ठीक है, आज तुम धनी हो किन्तु यह सम्भव है कि तुम कल ही गली-गली में मारी फिरो। यहाँ देहात में हमारा ढंग उस संदिग्ध जीवन से कहीं अच्छा है। किसान चाहे कभी धनी न हो परन्तु उसके पास खाने-पीने की कमी नहीं रहती।'

बड़ी बहिन ने उलटे हाथों उसे लिया, 'सचमुच तुम्हारे पास कमी नहीं ? तुम्हारे सड़ियल सूअर और बछड़े और काफ़ी ? न कोई अच्छी पोशाक, न कोई सभ्य-समाज और भी किसी बात

की कमी नहीं है। तुम्हारे आदमी (पति) चाहे जितना कठिन परिश्रम करें तुम और तुम्हारे पीछे तुम्हारी सन्तान मिट्टी में रहोगी और वहीं मरोगी।'

छोटी बहिन ने उत्तर दिया—'ऐसा नहीं है। बात यह है, चाहे हमारा जीवन कठिन परिश्रम का हो, ज़मीन सदा हमारी रहेगी। हमें हर एक के सामने सिर झुकाने और जूते चाटने की आवश्यकता नहीं। किन्तु शहर में तुम एक घृणास्पद वातावरण में रहती हो। आज तुम खुश हो किन्तु कल ही तुम पर दुर्भाग्य की दृष्टि पड़े और तुम्हारे पति ताश या शराब के पंजे में फँस जाँय। यह बात ठीक है न ?'

छोटी बहिन का पति पखोम चूल्हे के पास बैठा यह सब सुन रहा था।

वह बोला—'यह बिलकुल ठीक है। मैं बालकपन से धरती माता की सेवा कर रहा हूँ, इसलिये मेरे सिर में किसी प्रकार के पागलपन के उठने का मेरे पास समय ही न बचा। किन्तु मुझे केवल एक शिकायत है कि मेरे पास ज़मीन बहुत थोड़ी है। मुझे कोई केवल ज़मीन दे दे और मैं किसी की—पिशाच तक की—परवाह न करूँ।'

उन दोनों स्त्रियों ने चाय पीना समाप्त किया। पोशाक के बारे में कुछ और बातें कीं, बर्त्तन धोए और फिर दोनों सो गईं।

इसी समय पिशाच भी चूल्हे के पीछे बैठा सब कुछ सुन रहा था। उसने देखा कि अपनी पत्नी से प्रेरित किसान शेखी मार रहा है कि एक बार ज़मीन मिलने पर मैं पिशाच तक को उसे वापिस न दूँगा।

पिशाच ने सोचा—क्या ही अच्छा अवसर है। मैं तुझे नीचा दिखाऊँगा। मैं तुझे बहुत सी ज़मीन दूँगा और फिर उसे वापिस लूँगा।

इन्हीं किसानों के पास एक ज़मींदारिन रहती थी। उसकी सम्पत्ति केवल ३०० एकड़ ज़मीन थी। पहले उसका बर्त्ताव किसानों के साथ बहुत अच्छा था। किसी भी प्रकार वह अपने अधिकारों का दुरुपयोग न करती थी। किन्तु उसने अब अपने काम की देख-भाल के लिए एक सिपाही को नौकर रख लिया था। वह किसानों पर जुर्माना करके उन पर अत्याचार करने लगा। पखोम चाहे जितना सावधान रहता, उसका घोड़ा माल-किन के खेत में घुस जाता, गाय उसके बग़ीचे में चली जाती या बछड़े उसके घास के मैदान को अर्रा पड़ते और इन सब अपराधों के लिये जुर्माना देना पड़ता।

पखोम जुर्माना दे देता और फिर घर वालों को मारता और कोसता। पिछली गर्मी की घटनाओं के कारण उसका उस निरीक्षक से काफ़ी झगड़ा हो गया था। इसलिये जब पखोम ने अपने पशु ग्वाले के ज़िम्मे कर दिये तो उसे चिन्ता बहुत कम हो गई। यद्यपि उनकी रखवाली का ख़र्च उसे खलता था तो भी उसे अब कम व्यग्र रहना पड़ता था।

जाड़े में अफ़वाह थी कि वह ज़मींदारिन अपनी ज़मीन बेचना चाहती है, और वह निरीक्षक उसकी ज़मीन और उससे मिले हुए रास्ते के अधिकार ख़रीदने की चेष्टा कर रहा था। किसानों ने भी यह ख़बर सुनी और उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

उन्होंने सोचा कि यदि इस निरीक्षक ने ज़मीन ख़रीद ली तो यह जितना जुर्माना ज़मींदारिन के सामने लेता था उससे भी अधिक लेकर हमको दुःख देगा। हम इस ज़मीन के चारों ओर रहते हैं। हमें किसी न किसी प्रकार इस पर अधिकार करना चाहिये।

गाँव की पञ्चायत की ओर से कुछ प्रतिनिधि ज़मींदारिन

से मिले और उससे प्रार्थना की कि तुम अपनी ज़मीन निरीक्षक को न दो। यदि तुम हमारी प्रार्थना को पूरा न करोगी तो हम बराबर उस निरीक्षक से अधिक दाम लगायेंगे। ज़मींदारिन इस बात पर राज़ी हो गई और किसानों ने प्रयत्न किया कि गाँव की पञ्चायत उसको सारी भूमि ख़रीद ले। उन्होंने कई बैठक की किन्तु परिणाम कुछ न निकला। बात यह थी कि पिशाच उन्हें एकमत न होने देता था। तब किसानों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार अलग-अलग ख़रीदने का निश्चय किया। ज़मींदारिन इस बात पर भी राज़ी हो गई। एक दिन पखोम ने सुना कि उसके एक पड़ोसी ने ५० एकड़ भूमि ख़रीदे हैं और ज़मींदारिन ने ख़रीद के मूल्य का आधा धन साल भर बाद लेना स्वीकार कर लिया है। पखोम को ईर्ष्या हुई। उसने सोचा यदि वह कुल ज़मीन को ख़रीद लेंगे तो मैं ख़ाली हाथ रह जाऊँगा। उसने अपनी पत्नी से सलाह की कि सब ज़मीन ख़रीद रहे हैं, क्या अच्छा हो यदि हम भी पचीस एकड़ ख़रीद लें। हम अपनी वर्तमान अवस्था में जीवन निर्वाह नहीं कर सकते क्योंकि निरीक्षक ही सब जुर्माने में ले लेता है। परन्तु किस तरह ख़रीद की जाय ?

उनके पास दो सौ रुपये थे, सो उन्होंने अपना एक टटुआ और मधुमक्खी का आधा छत्ता बेचकर और अपने लड़के को नौकर करा कर ख़रीद के मूल्य का आधा धन इकट्ठा कर लिया।

पखोम ने सब इकट्ठा किया और ३० एकड़ ज़मीन और छोटा सा लकड़ी उगने वाला मैदान छाँटा। वह सौदा पटाने ज़मींदारिन के पास गया। सौदा तय हो गया। दोनों ने हाथ मिलाये और पखोम ने रुपया दाख़िल कर दिया। तब वह शहर को गया। बयाने में लिखा गया कि आधा धन अभी और आधा दो वर्ष बाद दिया जायगा। बस पखोम एक ज़मींदार

हो गया। उसने अपने दामाद से कुछ रुपया उधार लेकर बीज ख़रीदा और उसे नई ख़रीदी हुई ज़मीन में डाला। एक अच्छी फ़सल पैदा हुई। एक वर्ष के अन्दर उसने ज़मींदारिन और अपने जमाई का हिसाब साफ़ कर दिया। अब वह पूरा मालिक हो गया। वह अपनी ज़मीन में खेती करता, अपना चारा उगाता, अपनी लकड़ी काटता और अपने ही पशु चराता। जब कभी वह जोतने या फ़सल या घास देखने अपनी उस ज़मींदारी में, जिसे कोई न ले सकता था, घोड़े पर चढ़ कर जाता तो हर्ष से फूला न समाता। अपनी घास दूसरी घासों से बढ़िया मालूम होती, फूल भी अनोखे ही खिलते नज़र आते। एक बार जब वह अपनी ज़मीन पर से निकल जाता तो उसे कुछ दूसरा ही अनुभव होता, यद्यपि वह साधारण ज़मीन थी।

इस प्रकार पखोम बड़े आनन्द से रहता था। वस्तुतः यदि दूसरे किसान पखोम के अनाज व चारे को रहने देते तो उसका सब काम ठीक होता जाता। उसने उन्हें कई बार चेतावनी दी और फटकारा किन्तु सब व्यर्थ रहा। गड़रिये उसके चरागाह में अपने ग़ल्ले घुसा लाते और रात को उसके खेत में घोड़े घुस जाते! पखोम ने बहुत बार उनको निकाल दिया परन्तु फिर भी जब इसका सिलसिला बना रहा तो अन्त में क्रुद्ध होकर उसने ज़िले की कचहरी में शिकायत कर दी। वह यह जानता था कि किसान ज़मीन की कमी के कारण ऐसा करते थे, ईर्ष्या के कारण नहीं। किन्तु वह ऐसा कैसे करने देता? वे उसकी सम्पत्ति को नष्ट कर रहे थे। उसने उन्हें एक सबक़ सिखाने का निश्चय किया।

सो उसने कचहरी में उन्हें सबक़ सिखाया। पहले एक पर जुर्माना हुआ और फिर दूसरे पर। इससे उसके पड़ोसी उसके विरुद्ध हो गये। उन्होंने जान बूझकर उसकी फ़सल चुराने का

निश्चय किया। एक आदमी रात को उसके जंगल में घुस गया और उसने दस से अधिक लिन्डन के पेड़ों की छाल उतार फेंका। जब पखोम उधर से गुज़रा तो यह देखकर वह पीला पड़ गया। उसने पास जाकर देखा कि छाल छील दी गई है और तने उखड़े पड़े हैं। उस अत्याचारी ने केवल एक पेड़ को उसकी सब शाखाएँ काट कर छोड़ दिया था। शेष सब का सफ़ाया कर दिया था। पखोम क्रोध में उबल पड़ा, बोला—बस मुझे मालूम हो जाय कि यह किसने किया है तो मैं इसका अच्छी तरह बदला लूँ। वह अचम्भा करता रहा कि ऐसा आख़िर किस ने किया। यदि किसी ख़ास आदमी ने किया है तो यह सब सेम्क की करतूत हो सकती है। वह सेम्क के पास गया परन्तु उससे कुछ भेद न मिला; उल्टी उसने गालियाँ सुनाईं। किन्तु उसका यह विचार कि यह सब सेम्क ने किया है और पक्का होगया। उसने उसकी शिकायत कर दी। दोनों की अदालत में पेशी हुई। मजिस्ट्रेट ने काफ़ी समय तक मुक़दमे की सुनवाई की किन्तु अन्त में सबूत की कमी के कारण उसे ख़ारिज कर दिया। इससे पखोम और भी अधिक नाराज़ हुआ। उसने ग्रामिक और मजिस्ट्रेट दोनों को बुरा भला कहा। उसने कहा, 'ऐ मजिस्ट्रेट तुम भी चोरों के साथी हो। यदि तुम सच्चे आदमी होते तो सेम्क को कभी न छोड़ते।' हाँ, इसमें सन्देह नहीं कि पखोम मजिस्ट्रेट और पड़ोसियों से नाराज़ था। वह अधिकतर अकेला अपनी ज़मीन पर रहता और गाँव की पञ्चायत से बहुत ही कम सरोकार रखता।

इसी समय एक ख़बर उड़ी कि कुछ किसान गाँव छोड़ कर जाने की सोच रहे हैं। पखोम ने भी अपने बारे में सोचा, परन्तु कोई कारण नहीं दीखता कि मैं अपनी ज़मीन को छोड़ कर जाऊँ। यदि कुछ अन्य किसान चले जायेंगे तो मुझे अधिक

ज़मीन मिल जायगी। मैं और ज़मीन ख़रीद लूँगा और चारों तरफ़ बाड़ा खींच लूँगा। तब मैं अधिक सुखी रहूँगा।

एक दिन ऐसा हुआ कि पखोम अपने घर बैठा था। उसी समय घूमता-फिरता एक किसान उधर आ निकला। पखोम ने रात को उसे ठहराया और भोजन कराया। बातों-बातों में फिर उसने पूँछा कि आप कहाँ से आये हैं। किसान ने कहा कि मैं नदी के बहाव की ओर वौल्गा के पार एक स्थान से आया हूँ। वहाँ मैं नौकरी करता था। उसने कहा कि वहाँ एक उपनिवेश बसाया जा रहा था। हर एक निवासी का नाम गाँव की पञ्चायत में लिखा जाता था और २५ एकड़ ज़मीन उसको दे दी जाती थी। उसने सब बतलाया कि वह ऐसी ज़मीन थी, वहाँ ऐसी राई पैदा होती थी। उस राई के पेड़ के पीछे एक घोड़ा छिप सकता था। एक किसान के पास अपने हाथों के सिवाय कुछ न था। वह अब सवा सौ एकड़ गेहूँ उगाता था। अपने गेहूँ से ही पिछले साल उसने दस हज़ार रुपये बना लिये थे।

पखोम के दिल में एक नई जान आ गई। उसने सोचा, मैं यहाँ ग़रीबी में क्यों पड़ा रहूँ जब कि मैं इतना अच्छा जीवन बिता सकता हूँ। मैं यहाँ सब घर और ज़मीन बेच कर वहाँ उस धन से नया घर और खेत बना लूँगा। यहाँ इस तंग जगह में जीवन दूभर है। कम से कम मैं वहाँ जाकर देखूँगा।

गर्मी आई और वह चल दिया। वह नाव में बैठ वौल्गा के परे समारा पहुँचा। फिर ढाई सौ मील पैदल गया और तब उस जगह पहुँचा। जगह ठीक वैसी ही थी जैसी बतलाई गई थी। हर एक किसान के पास मुफ़्त २५ एकड़ ज़मीन थी और वे बड़े आनन्द से रहते थे। उसे आशा थी कि पञ्चायत मेरा स्वागत करेगी। उसे यह भी पता लगा था कि जिसके पास धन हो वह अधिक ज़मीन ले सकता था—चाहे जितनी, और सदा

के लिये। बहुत बढ़िया ज़मीन ६) रुपये में ढाई एकड़, और इस भाव से चाहे जितनी।

पखोम को यह सब मालूम हुआ और पतझड़ में वह घर लौट आया। उसने जल्दी ही काफ़ी नफ़े पर अपनी सब ज़मीन, इमारतें और पशु बेच डाले। तब उसने अपना नाम पञ्चायत के रजिस्टर से कटवा दिया और बसन्त में अपने परिवार के साथ नई जगह को चल दिया।

पखोम वहाँ पहुँचा और वहाँ की पञ्चायत का सदस्य हो गया। पञ्चों ने प्रत्येक प्राणी के लिये २५ एकड़ के हिसाब से उसे सवा सौ एकड़ ज़मीन उस उपनिवेश के विभिन्न भागों में दे दी और एक सम्मिलित चरागाह भी। पखोम ने एक घर बनाया और सब सामान रखा। उसके पास अब पुरानी जगह से दूनी ज़मीन थी। उसमें अनाज भी अच्छा पैदा होता था। उसके पास यहाँ खेती के लिये और चरागाह के लिये काफ़ी ज़मीन थी। वह चाहे जितने पशु रख सकता था। इन सब कारणों से पहली जगह की अपेक्षा यहाँ का जीवन कहीं ज़्यादा सुखमय था।

जब वह मकान बना रहा था और सामान जुटा रहा था तो उसे सब कुछ बहुत अच्छा मालूम होता था। पीछे जब वह जम गया तो उसे फिर संकुचित सा जान पड़ा। वह तुर्किस्तान का सफ़ेद गेहूँ उगाना चाहता था। किन्तु उसके पाँचों भागों में किसी में भी गेहूँ नहीं उग सकता था। नई घास उपजी ज़मीन में गेहूँ बोया जा सकता था। ऐसी ज़मीन में एक साल गेहूँ बोकर दो साल के लिये उसे ख़ाली पड़ा रखना पड़ता था, जिस से कि उसमें घास उग आये। उसके पास मुलायम ज़मीन काफ़ी थी, जिसमें राई उग सकती थी। गेहूँ के लिये सख़्त ज़मीन की ज़रूरत थी; उसके लेने वाले बहुत थे और ज़मीन थी थोड़ी। ऐसी ज़मीन पर झगड़े भी बहुत होते थे। धनी

किसान अपनी ज़मीन में बोते थे परन्तु ग़रीब अपनी ज़मीन व्यापारियों के यहाँ गिरवी रख देते थे। पहले साल पखोम ने अपनी ज़मीन में गेहूँ बोया और अच्छी फ़सल हुई। उसने फिर गेहूँ बोना चाहा पर ज़मीन इतनी न थी कि पहली को खाली छोड़ दिया जाय और नई ज़मीन में गेहूँ डाला जाय। उसने कुछ और ज़मीन लेने का विचार किया। वह एक व्यापारी के पास गया और एक साल के लिये गेहूँ के योग्य ज़मीन पट्टे पर ले ली। उसने उसे बोया और अच्छी फ़सल तैयार हुई। किन्तु दुर्भाग्यवश वह खेत उपनिवेश से कुछ दूर था। फ़सल को १० मील गाड़ियों में लाना पड़ा। पखोम ने देखा था कि कुछ किसान जहाँ उनकी ज़मीन थी वहीं घर बनाकर रहते थे और धनी हो गये थे। पखोम ने सोचा कि मैं भी पट्टा अधिक समय के लिए लिख दूँ और वहीं घर बना कर रहूँ।

पखोम इसी प्रकार पाँच वर्ष तक ज़मीन लेकर और उसमें गेहूँ उगाकर सुख से रहा। वे साल अच्छे थे। ख़ूब गेहूँ पैदा हुआ और वह मालामाल हो गया। परन्तु ऐसे जीवन से कोई विशेष आनन्द न था। वह हर साल नए ज़िले में ज़मीन लेता और वहाँ अपना सामान हटाता। ऐसे जीवन से उसका मन भर गया। जहाँ कहीं अच्छी धरती होती बहुत से किसान उसको लेना चाहते। वह उन सबमें बाँट दी जाती। उसे कुल ज़मीन एक चाक में बोने का अवसर न मिलता। एक बार एक मुक़द्दमे में किसान हार गये और इसका परिश्रम व्यर्थ रहा। यदि वह उस ज़मीन का स्वामी होता तो किसी के सामने न दबना पड़ता और न और कोई कष्ट होता।

सो उसने सोचा कि मुझे कहाँ एक ज़मींदारी मिल सकती है। जब वह इसी फ़िक्र में था, उसे एक किसान मिला जो बिगड़ गया था। वह उसे अपनी १२५० एकड़ ज़मीन सस्ते

दामों पर देने को तैयार था। बहुत बातचीत के बाद पखोम ने यह सौदा दो हज़ार रुपये में पटा लिया। आधा रुपया तब ही देना था और आधा बाद में। इस सौदा के होने के बाद एक दिन एक व्यापारी अपने घोड़ों को चारा खिलाने पखोम के घर आया। उन्होंने चाय पी और बातें होने लगीं। व्यापारी बोला कि मैं बड़ी दूर से बशकिरों के देश से आया हूँ। मैंने वहाँ साढ़े बारह हज़ार एकड़ केवल दो हज़ार रुपये में ख़रीदे हैं। पखोम सवाल पूछता रहा और व्यापारी उत्तर देता रहा। व्यापारी बोला, मैंने केवल वहाँ के पञ्चों को कुछ चीज़ें—कोट, ग़लीचे और चाय के बक्स—भेंट कर दी थीं। दो सौ रुपये भी बाँट दिये थे और जिन्होंने इच्छा प्रकट की उन्हें शराब पिला दी थी। फल-स्वरूप मुझे आठ पैसे एकड़ ज़मीन मिल गई। उसने पखोम को बयनामा दिखाया। अन्त में उसने कहा कि यह ज़मीन नदी के किनारे है और सब खुली और घास वाली है। पखोम फिर भी उससे पूँछता रहा।

व्यापारी ने कहा कि ऐसी ज़मीन तुम्हें एक वर्ष में नहीं मिल सकती। यह बशकिरों की कुल ज़मीन के बारे में कहा जा सकता है। वहाँ के आदमी भी भेड़ों की तरह सीधे हैं। तुम उनसे मुफ़्त में ही चीज़ें ले सकते हो।

पखोम ने सोचा २०००) रुपये केवल १२५० एकड़ ज़मीन के लिये देने से क्या लाभ जब कि वहाँ मैं उसी धन में मालिक हो जाऊँगा।

पखोम ने उस व्यापारी से बशकिरों के देश का रास्ता पूँछा और उसके जाने के बाद ही चलने के लिये तैयार हो गया। वह पहले अपनी पत्नी को घर छोड़ कर और नौकर को साथ लेकर शहर से चाय, शराब और अन्य भेंट का सामान ख़रीद लाया। तब वे दोनों ३०० मील गये। सातवें दिन वे बशकिरों के

डेरे पर पहुँचे। सब बात ठीक वैसी ही निकली जैसी उसे व्यापारी ने बतलाई थी। वहाँ आदमी खाल से मढ़ी गाड़ियों पर रहते थे। वे गाड़ियाँ नदी किनारे घास के मैदानों में चलाई जाती थीं। न वे ज़मीन जोतते थे न नाज खाते थे। उस घास के मैदान में अनेक पशु और घोड़े डोला करते थे। घोड़ों के बच्चे गाड़ियों के पीछे बाँध दिये जाते थे। उनकी माँ दिन में दो बार उन्हें दूध पिलाने के लिये उनके पास लाई जाती थी। उन आदमियों का मुख्य भोजन घोड़ियों का दूध था। स्त्रियाँ उससे कुमिस नामक पेय बनाती थीं और उसे चलाकर पनीर बना लेती थीं। वे भेड़ का माँस खाते थे और बाँसुरी बजा कर अपना मनोविनोद करते थे। इस पर भी वे शान्त और प्रसन्न मालूम पड़ते थे। पूरे साल वे छुट्टी मनाते थे। शिक्षा बहुत ही कम थी। वे रूस की भाषा नहीं जानते थे, फिर भी वे दयालु और भले आदमी थे।

जैसे ही उन्होंने पखोम को देखा वे अपनी गाड़ियों से उतर कर आये और उस अतिथि को चारों ओर से घेर लिया। एक बात कराने वाला मध्यस्थ मिल गया। पखोम ने उससे कहा कि मैं ज़मीन ख़रीदने आया हूँ। यह सुन कर वे मनुष्य बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने पखोम का गाढ़ आलिंगन किया, फिर उसे एक अच्छी गाड़ी पर लिवा ले गये। वहाँ उन्होंने एक ऊँचे मुलायम गद्दे पर बिठाया और चाय और कुमिस तैयार कराने लगे। एक भेड़ मारी गई और उसके माँस का भोजन खिलाया गया। तब पखोम ने अपनी गाड़ी से भेंट निकाली और उन्हें सब को बाँट दिया। इसके बाद बशकिरों ने थोड़ी देर आपस में बातें की और बात कराने वाले मध्यस्थ से कहा, हम पखोम से बहुत ख़ुश हैं। हमारी यह प्रथा है, कि हर प्रकार अपने अतिथि की इच्छा पूरी करें, और हमें जो भेटें दी गई हैं उनके

भार से उऋण हों। पखोम ने तो हमें भेंटें दी हैं, अब उससे पूछो कि तुम्हारी क्या इच्छा है, जिसे हम पूरा करें।

पखोम ने कहा कि मैं आपकी कुछ ज़मीन लेना चाहता हूँ। जहाँ से मैं आया हूँ वहाँ काफ़ी ज़मीन नहीं है। जो है वह सब जोत ली गई है। आपके पास काफ़ी और ऐसी अच्छी ज़मीन है, जैसी मैंने पहले कभी न देखी।

मध्यस्थ ने अनुवाद किया और बशकिर फिर आपस में बातें करने लगे। यद्यपि पखोम उनकी बातों को नहीं समझा, उसने देखा कि वे ख़ुशी में कुछ चिल्ला रहे थे और फिर सहसा सब के सब खिलखिला पड़े। अन्त में वे चुप हुए और उन्होंने पखोम की ओर देखा। फिर मध्यस्थ बोला--तुम्हारी दया के बदले में जितनी ज़मीन तुम चाहो हम तुम्हारे हाथ बेंच सकते हैं। केवल हाथ से इशारा कर दो कि कितनी ज़मीन तुम्हें चाहिये और वह सब तुम्हारी हो जायगी।

किन्तु इसी समय वे आदमी आपस में किसी बात पर झगड़ा करने लगे। पखोम के पूछने पर मध्यस्थ ने कहा कि उनमें से कुछ कहते हैं कि ज़मीन के बारे में पहले ग्रामिक से पूछना चाहिए, बिना उसके पूछे कुछ नहीं करना चाहिए और कुछ कहते हैं कि यह ज़रूरी नहीं है।

जब बशकिर इस प्रकार झगड़ रहे थे उसी समय सहसा एक गाड़ी में लोमड़ी की खाल की टोपी पहने एक आदमी आया। उसके आते ही सब खड़े हो गये। मध्यस्थ ने पखोम से कहा यही ग्रामिक हैं। पखोम ने तुरन्त सबसे अच्छा कोट और ढाई सेर चाय उठाकर नवागन्तुक को दे दी। ग्रामिक ने उनको स्वीकार कर लिया और उच्च आसन पर बैठ गया। बशकिर उसके सामने बहुत से मामले रखने लगे। वह सुनता रहा, हँसा और फिर पखोम से रूस की भाषा में बोला—अच्छा,

जहाँ अच्छा लगे तुम जमीन छाँट लो। हमारे पास काफ़ी जमीन है।

पखोम ने सोचा कि अब तो मैं जितनी चाहूँ धरती ले सकता हूँ। किन्तु मुझे सौदा पक्का कर लेना चाहिये। सभव है यह अभी तो कह दें कि जमीन तुम्हारी है और बाद में वचन वापिस ले लें।

वह बोला, आपके मीठे भाषण के लिये धन्यवाद। आपके पास बहुत जमीन है, मुझे थोड़ी जमीन की जरूरत है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरी कौन सी जमीन होगी। इसलिये वह नाप कर मुझे दे दी जाय। जीवन-मरण का स्वामी केवल ईश्वर है। आप भले आदमी हैं जो मुझे जमीन दे रहे हैं, परन्तु संभव है कि आपकी सन्तान मुझसे इसे छीन ले।

ग्रामिक हँस कर बोला—बयनामा हो गया। यह बैठक उसका अनुमोदन कर चुकी। इससे पक्का काम और कुछ नहीं हो सकता।

पखोम ने कहा, किन्तु मुझे मालूम हुआ था कि एक व्यापारी अभी हाल में आपके पास आया था और आपने जमीन बेंच-कर उसे बयनामा लिख कर दे दिया था। कृपया वही मेरे साथ भी करिये।

ग्रामिक अब समझ गया। उसने कहा, अच्छा, हमारे पास एक लेखक है और एक शहर में जाकर उस काग़ज पर जरूरी मुहर लगवा दी जायगी।

पखोम ने कहा, आपकी जमीन का मूल्य क्या है?

उस ग्रामिक ने कहा, दो हजार रुपये फ़ी दिन।

पखोम की समझ में यह फ़ी दिन का भाव न आया। उसने तुरन्त पूछा, इसमें कितने एकड़ होंगे?

ग्रामिक ने कहा, हम एकड़ों में हिसाब नहीं लगाते। हम फ़ी दिन के हिसाब से बेचते हैं। अर्थात् जितनी ज़मीन का चक्कर तुम एक दिन में लगा लो वह तुम्हारी होगी। यही हमारी नाप है और इसका मूल्य दो हज़ार रुपये हैं।

पखोम को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, एक दिन में तो एक आदमी बहुत दूर जा सकता है।

ग्रामिक हँसकर बोला, केवल एक शर्त है। यदि तुम उसी दिन उस स्थान पर न पहुँच सको जहाँ से तुम चले थे तो तुम्हारा रुपया ज़ब्त हो जायगा।

पखोम ने पूछा, उस जगह का आप कैसे पता लगाते हैं ? ग्रामिक बोला, जो स्थान तुम ठीक समझो मैं और मेरे आदमी वहीं रहेंगे। जब तक तुम चक्कर लगाओ तुम्हारे पीछे हमारे कुछ जवान घोड़े पर चढ़ कर जायँगे और तुम जहाँ चाहोगे वे खूँटी लगा देगे। उन खूँटियों के चारों ओर फिर हल चला दिया जायगा। अपना गोला बता दो किन्तु सूरज छिपने से पहले तुम्हें उस जगह आ जाना होगा जहाँ से तुम चले थे। जितनी ज़मीन में तुम चक्कर लगा लो वह तुम्हारी हो जायगी।

पखोम ने यह शर्तें स्वीकार कर लीं। यह निश्चय हुआ कि अगले दिन तड़के चक्कर शुरू हो। फिर वे सब लोग बातें करते रहे, और उन्होंने कुमिस पी, भेड़ का माँस खाया, और फिर चाय पी। रात तक यह सब व्यवस्था चलती रही। अन्त में पखोम को बिस्तरा बतला कर सब बशकिर चले गये और दूसरे दिन सूर्योदय से पहले नदी पार निश्चित स्थान पर पहुँचने का वचन देते गये।

पखोम बिस्तर पर पड़ा रहा परन्तु उसे उस ज़मीन का विचार करते हुए जिसमें वह खेती करने वाला था क्षण भर को भी आँख न लगी। वह सोचता रहा, मैं कल एक बड़ी

ज़मीन का मालिक हो जाऊँगा। मैं कम से कम एक दिन में ३५ मील चल सकता हूँ। उसमें लगभग २५,००० एकड़ ज़मीन आ जायगी। तब मैं किसी के दबाव में न रहूँगा। मैं एक हल, दो बैल और दो मज़दूर रख लूँगा। अच्छी ज़मीन को जोत लूँगा, बाक़ी में पशु चराऊँगा।

सूरज निकलने से पहले पखोम को एक झपकी लगी। उसी समय उसने एक स्वप्न देखा। उसने देखा कि वह एक गाड़ी पर पड़ा है। किसी को बाहर हँसते और बात करते सुन रहा है। यह देखने की इच्छा से कि कौन इतने ज़ोर से हँस रहा है वह बाहर गया। उसने ग्रामिक को धरती पर बैठे देखा। वह हँसी में उछल रहा था। पखोम ने स्वप्न में ही उससे पूछा कि क्या मज़ाक़ था? जब वह पास गया तो उसने देखा कि जिससे वह पूँछ रहा था वह ग्रामिक न था किन्तु वह व्यापारी था, जिसने उसे इस देश का हाल बतलाया था। जैसे ही उसने व्यापारी से यह कहा कि क्या मैंने तुम्हें थोड़े दिन हुए अपने घर देखा था वैसे ही उस व्यापारी ने उस किसान का रूप धर लिया जो वौल्गा से उसके पुराने देहात के घर गया था। अन्त में पखोम ने देखा कि यह वह किसान भी न था किन्तु स्वयं पिशाच था। उसके सींग थे, खुर थे और वह वहाँ बैठा किसी चीज़ पर टकटकी लगाये हुए था और हँस रहा था। तब पखोम ने अपने मन में सोचा, वह क्या देख रहा है, वह इतना क्यों हँस रहा है? स्वप्न में जैसे ही वह एक तरफ़ को हटा उसने एक आदमी को नंगे पैर और केवल एक क़मीज़ और पजामा पहने देखा। उसका चेहरा बर्फ़ की तरह सफ़ेद था। तुरन्त ही ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि वह आदमी स्वयं पखोम था।

वह भौंचक्का होकर उठ बैठा। उसे ऐसा आभास हुआ

मानों स्वप्न एक सचाई था। उठकर उसने देखा तो मालूम हुआ कि दिन निकलने वाला था।

उसने सोचा चलने का समय होगया। मुझे इन भले आदमियों को उठाना चाहिये।

पखोम उठा। गाड़ी में सोए हुए अपने नौकर को उठाया। उससे घोड़ा अन्दर बाँधने और बशकिरों को बुलाने के लिये कहा क्योंकि घास के मैदान पर जाकर उसे नापने का समय हो गया था। सो बशकिर उठकर तैयार हुए। ग्रामिक भी आ पहुँचा। उन्होंने कलेवा किया। पखोम को भी वे चाय दे रहे थे पर वह न रुका। वह बोला, समय हो गया। यदि हमें जाना है तो तुरन्त जाना चाहिये। बशकिरों ने गाड़ी ठीक की और चल दिये; कुछ घोड़ों पर, कुछ गाड़ियों पर। पखोम भी अपने नौकर के साथ अपने रहलू में चल दिया। सूरज निकलने के समय ही वह घास के मैदान पर पहुँचे और एक टीले की ओर चले। वहाँ गाड़ियों में से आदमी उतर पड़े और सब इकट्ठे हो गए। ग्रामिक ने पखोम के पास आकर कहा, यह सब जो ज़मीन तुम देखते हो हमारी है। जिस ओर चाहो छाँट लो। पखोम की आँखें उसे देख कर छक गईं। क्योंकि सब ओर घास थी और सारा मैदान हथेली की तरह चौरस था। केवल जहाँ नाला था वहीं घास न थी। घास भी छाती तक ऊँची थी। ग्रामिक ने अपनी लोमड़ी की खाल की टोपी उतारी और उस टीले के बीचों-बीच रख दी। उसने कहा, यह निशान रहेगा; इसमें अपना रुपया रख जाओ। जब तुम चले जाओगे तो तुम्हारा नौकर इसके पास रहेगा। यहाँ से तुम चलोगे और यहीं लौटोगे। जितनी ज़मीन का चक्कर तुम लगा लो वह तुम्हारी हो जायगी।

पखोम ने अपना धन निकाल कर उस टोपी में रख दिया।

उसने कोट उतार कर रख दिया, अपनी पेटी कसली; अपना झोला कुछ रोटी रख कर गले में डाला, पानी का लोटा कन्धे पर बाँधा, बड़े जूते कस डाले और चलने को तैयार हो गया। वह सोचता रहा कि कौन ओर जाऊँ क्योंकि ज़मीन सब ओर अच्छी थी। अन्त में उसने निश्चय किया चूँकि सब तरफ़ एक सा है, इससे मैं उदय होते हुए सूर्य की ओर जाऊँगा। सो उसने उस ओर अपना मुँह किया और जब वह सूरज के निकलने की बाट देख रहा था तो अपने अंगों की परीक्षा करने लगा। उसने सोचा, मुझे बिलकुल समय न खोना चाहिये क्योंकि जब तक हवा ठंडी है तभी तक मैं सब से अच्छा चक्कर लगा सकता हूँ।

तब घोड़े पर सवार बशक्रिर भी टीले पर चढ़े और पखोम के पीछे खड़े हो गये। जैसे ही सूरज की किरणें क्षितिज से ऊपर निकलीं, पखोम ने बढ़ना शुरू कर दिया। वह घास के मैदान की ओर चला और घुड़सवार उसके पीछे-पीछे चले।

वह न बहुत धीरे और न बहुत तेज़ चला। लगभग एक मील जाने पर वह रुका और एक खूँटी गड़वाई और फिर चल दिया। उसका शैथिल्य हट गया था। अब उसके क़दम लम्बे पड़ रहे थे। थोड़ी देर बाद वह फिर रुका और एक खूँटी और गड़वाई। उसने सूरज की ओर देखा—अब टीला ख़ूब चमक रहा था। उसने हिसाब लगा कर देखा कि वह लगभग ४ मील चला गया था। उसे अब गरमी लगने लगी थी सो उसने वास्किट उतारी और फिर पेटी कस ली। वह चार मील जाकर फिर रुका। अब काफ़ी गरमी हो गई थी। उसने सूरज की ओर देख कर जाना कि कलेवे का समय हो गया था। उसने सोचा एक मंज़िल पूरी हुई किन्तु दिन में चार मंज़िलें हैं अभी अपना रुख बदलना बेकार है। तब भी मुझे जूते उतार देने

चाहिये। सो वह बैठा, उन्हें उतारा और फिर चल दिया। अब चलना आसान हो गया। उसने सोचा, जब चार मील और चल लूँगा तब बाईं ओर मुड़ जाऊँगा। उस जगह की ज़मीन बड़ी अच्छी थी। सो वह सीधा बढ़ता चला गया। जब उसने पीछे मुड़ कर देखा तो टीला आँखों से ओझल हो गया था और उस पर आदमी काले चींटों की तरह दीखते थे।

तब अन्त में उसने सोचा, मैंने अब चक्कर काफ़ी बड़ा बना लिया है, अब मुझे मुड़ना चाहिये। वह काफ़ी पसीने में तर हो गया था और प्यासा था। उसने लोटा उठाया और एक घूँट पानी पिया। फिर उसने वहाँ एक खूँटी गड़वाई और एक दम बाईं ओर मुड़ गया। उस तेज़ गर्मी में वह प्यास और भूख से पीड़ित चला जा रहा था। वह अब थकता जाता था। सूरज की ओर देख कर उसने जाना कि खाने का समय हो गया था। उसने सोचा कि अब मुझे आराम करने का साहस करना चाहिये। वह रुका और खड़े-खड़े उसने रोटी खाई क्योंकि उसने सोचा कि यदि मैं एक बार बैठ गया तो मेरा मन लेटने को करेगा और फिर मैं सो जाऊँगा। उसने थोड़ी देर आराम किया और फिर चल दिया। थोड़ी देर तक उसे कुछ चलना मालूम न हुआ क्योंकि खाना खाने से नई शक्ति आ गई थी पर थोड़ी देर बाद ही सूरज अधिक गरम मालूम होने लगा क्योंकि वह पश्चिम की ओर झुक रहा था। पखोम अब बिल्कुल थक गया था पर उसने सोचा कि एक घंटे का कष्ट सौ वर्ष के लिये सुखी बना देगा।

चक्कर के इस ओर के लगभग ८ मील उसने पूरे कर लिये थे और फिर बाईं ओर झुकने वाला था, तभी उसने एक सूखे नाले की ओर एक बहुत उत्तम स्थान देखा। उसे छोड़ते उसका दिल दुखता था। उसने सोचा वहाँ बड़ी अच्छी कतान

पैदा होगी। सो वह बढ़ा चला गया और नाले तक पहुँच गया और वहाँ खूँटी गाड़कर फिर अन्दर को लपका। टीले की ओर देखने पर आदमी वहाँ अदृश्य थे। वह १२ मील से कम की दूरी पर न थे। उसने सोचा मैंने चक्कर के दो बड़े हिस्से पूरे कर लिये हैं और इसको सबसे छोटे रास्ते से पूरा करना चाहिये। सो वह अन्तिम हिस्से पर बढ़ा और उसने क़दम बढ़ाया। उसने फिर सूरज की ओर देखा। अब शाम के भोजन का समय निकट आ गया था और उसने केवल २ मील पूरे किये थे। १० मील शेष थे। उसने सोचा, अब मुझे जल्दी करनी चाहिये, चाहे ज़मीन कितनी ही ऊँची-नीची हो। मुझे एक भी ज्यादा भाग ज़मीन का न लेना चाहिये। मैंने काफ़ी घेर लिया है। पखोम सीधे टीले की ओर लपका।

वह सीधा उसी ओर बढ़ता चला गया पर अब उसे चलना दूभर हो गया। उसके पैर घायल हो गये थे, उनमें बड़े ज़ोर से दर्द हो रहा था और वे लड़खड़ा रहे थे। वह थोड़ी देर आराम करने के लिये कुछ भी दे डालता, पर उसने सोचा कि यदि उसे टीले पर सूर्यास्त से पहले पहुँचना है तो उसे नहीं रुकना चाहिये। सूरज उसके लिये नहीं रुकेगा, वह तो उसे कोचवान की तरह कोड़े लगा रहा था। क़दम-क़दम पर वह लड़खड़ा रहा था। वह सोचता, सचमुच मैंने ग़लत अन्दाज़ तो नहीं लगाया, मैंने इतनी ज्यादा ज़मीन तो नहीं ले ली कि चाहे जितनी भी जल्दी करूँ न लौट सकूँ ? अभी इतनी दूर जाना है और मैं बिलकुल थक गया हूँ। यह तो नहीं होगा कि कहीं मेरा सारा धन और परिश्रम व्यर्थ जाय ? ख़ैर, मैं भरसक कोशिश करूँगा।

पखोम ने अपने को संभाला और दौड़ पड़ा। उसके पैर इतने फट गए थे कि उनसे ख़ून बह रहा था किन्तु वह भागा

गया। वास्किट, जूते, लोटा, टोपी सब को उसने फेंक दिया। वह सोच रहा था, कल मैं आज के दिन के लिए बहुत खुश हो रहा था। परन्तु अब सर्वनाश हो गया और मैं सूर्यास्त से पहले उस निशान पर न पहुँच सकूँगा। डर के कारण उसकी सांस और अधिक फूल गयी परन्तु तब भी वह दौड़ा ही गया। उसकी क़मीज़ और पाजामा पसीने से तर थे, उसका मुँह सूख गया था। उसके फेफड़े लुहार की धौंकनी की तरह और उसका हृदय हथौड़े की तरह चल रहा था। उसकी टाँगें बोझ से टूटी जा रही थीं। उसे अब ज़मीन की परवाह न थी। उसे कठिन परिश्रम के कारण मृत्यु से बचने की चिन्ता थी। उसे मरने का इतना डर था पर वह रुका नहीं। उसने सोचा, इतनी दूर गया और फिर रुक गया, तो वे मुझे मूर्ख समझेंगे। अब चिल्लाते हुए और ताली बजाते हुए बशकिरों का शब्द उसे सुनाई दे रहा था। उनके शब्द से उसके हृदय में नई शक्ति आ गई। अन्तिम बची हुई शक्ति से वह दौड़ा चला जा रहा था। उसी समय सूर्य क्षितिज को छू रहा था। वह अब उस जगह के अत्यन्त निकट था। टीले पर खड़े आदमियों के हिलते हुए हाथ उसे दिखाई दे रहे थे और उसे आगे बढ़ने के लिये प्रेरित कर रहे थे। उसे धरती पर रखी हुई लोमड़ी की खाल की टोपी दिखाई पड़ रही थी, उसमें रखा धन भी और उसके पास बैठा ग्रामिक भी। सहसा पखोम को अपने स्वप्न की याद आ गई। उसने सोचा, किन्तु अब मेरे पास काफ़ी ज़मीन होगी, यदि ईश्वर मुझे उस पर रहने के लिये जीवित रहने दे। परन्तु मुझे भय है कि मैंने अपने को मार डाला है। तब भी वह दौड़ा गया। अन्तिम बार उसने सूरज की ओर देखा। लाल और बड़ा सूर्य ज़मीन को छू चुका था और क्षितिज के नीचे डूबना ही चाहता था। जैसे ही सूरज छिपा, पखाम टीले के

पास पहुँच गया। निराशा में वह चिल्ला उठा, हाय! सब गया। किन्तु सहसा उसे याद आई कि वह नीचे से सूरज नहीं देख सकता था परन्तु टीले पर बैठे आदमी देख सकते थे और उनके लिये अभी सूरज नहीं छिपा होगा। वह चढ़ाई पर चढ़ा और उसने देखा कि टोपी अभी वहीं थी। वह लड़खड़ाया और गिर पड़ा किन्तु गिरते वक्त उसने अपने हाथ टोपी की ओर फैलाये और उसे छू लियाँ।

ग्रामिक बोला, ऐ जवान, सचमुच तुमने बहुत जमीन पर अधिकार किया है। पखोम का नौकर अपने स्वामी की ओर दौड़ा और उसने उसे उठाना चाहा परन्तु उसके मुँह से खून बह रहा था। पखोम वहीं मर गया। भयभीत नौकर चिल्लाने लगा किन्तु ग्रामिक पहले की तरह हँसता बैठा रहा। अन्त में उसने एक कुदाली उठाई और नौकर की ओर फेंक दी। उसने कहा, इसे दफ़ना दो। बशकिर उठे और चले गये। केवल नौकर रह गया। उसने पखोम की लम्बाई की क़ब्र खोदी। उसकी लम्बाई सिर से पैर तक केवल २ गज़ थी। उसने उसे वहीं गाड़ दिया।

किसके सहारे

(१)

डरावनी काली रात; एक भी प्राणी का कहीं कोई शब्द नहीं। इसी डरावनी रात में हठात साइमन छड़ी और जूते की खट्-खट् आवाज़ से उस निस्तब्धता को भंग करता हुआ आया। उसके हाथ में छड़ी, शरीर में फटे वस्त्र, दिल में पुञ्जीभूत वेदना, मुँह पर विषाद की काली छाया, दरिद्र साइमन की चिन्ता और दुःख का वारापार नहीं।

गाँव के एक एकान्त कोने में है साइमन के रहने की जगह। न है उसे घर-द्वार, न किसी तरह की भू-संपत्ति,—पत्नी, पुत्र और पुत्री के साथ एक टूटी-फूटी कुटिया में वह अपनी ज़िन्दगी का वक्त बहुत ही तकलीफ़ के साथ बिताता है। उसका जीवन-संबल है—चर्मकार वृत्ति। खाने की चीजें महँगी हैं पर आमदनी बहुत थोड़ी, इसलिए जो कुछ रोज़गार से मिलता है, सब का सब पेट भरने में ही ख़र्च हो जाता है।

जाड़े में साइमन-दम्पति का दुःख चरम सीमा पर पहुँच जाता है। पति-पत्नी के लिए सिर्फ़ एक कोट है, वह भी कई जगहों पर फटा हुआ, काम के लायक़ ज़रा भी नहीं। जाड़े का प्रकोप भीषण है—कोट नहीं ख़रीदने से काम नहीं चलने का; अतः बीबी के संचित धन को—थोड़े रुपये को—साइमन लेकर कोट ख़रीदने चला।

लेकिन वह कोट ख़रीद न सका, रुपये कम गये। पड़ोसी ट्रिवनफ़ से उसने रुपये उधार माँगे, उसे शीघ्र चुकता करने की

प्रतिज्ञा की पर उसने नहीं दिये। कोट बेचने वाले को भी ग़रीब साइमन को कोट उधार देने की हिम्मत न हुई। उसे एक दूसरे पड़ोसी ने जूता मरम्मत करने के लिए कई पैसे दिये थे, ग़म ग़लत करने के लिए दरिद्र साइमन ने उन कुछ पैसों से शराब ख़रीदी और पेट के हवाले कर घर की राह पकड़ी। राह में वह सोचता जाता है—

'कोट की अब और क्या ज़रूरत? इस शराब ने ही तो सारे शरीर को गर्म कर दिया। मैं ही सब से अच्छा हूँ। साइमन! कोट की बात अब भूल जाओ। लेकिन रुपयों के लिए मार्था के सामने लज्जित जो होना पड़ेगा। घर जाकर मार्था से मैं क्या कहूँगा? हाँ, ट्रिवनफ़, तुमको मैंने कितनी तरह कहा, बिनती की पर तुमने रुपये नहीं दिये। ग़रीब जान कर तुमने मेरा इतना निरादर किया? तुम्हें घर-द्वार है, गाय-बैल हैं, घोड़े-गाड़ी हैं, पर मुझे ये कहाँ? तुम्हारे घर में खाने की चीजें भरी पड़ी हैं और मुझे तो ख़रीद कर ही खाने पड़ते हैं—बहुत फ़ालतू पैसे मेरे पास कहाँ से आयें? ट्रिवनफ़! मैं ग़रीब हूँ, इसलिए मैं घृणास्पद हूँ? मैं क्या मनुष्य नहीं, मुझ में क्या वह ईश्वर नहीं? मुझे क्या तुम्हारी ही तरह बेटे, बेटी वग़ैरह नहीं? तुम्हारे विचार से क्या मेरे प्राण बच्चों के स्वर्गीय हास्य-प्रस्फुटित कमल-मुख को देख, उनकी तोतली बोलियाँ सुन-ख़ुशी से नहीं नाच उठते? तुम्हारे विचार से क्या सर्दी-गर्मी, मान-अपमान का ज्ञान मुझे नहीं?

'तुम इनसान हो, मैं भी इनसान हूँ; फिर यह घृणा कैसी, भाई? तुम्हारे पास रुपये हैं, मेरे पास नहीं; तुम्हें बहुत बड़ा महल है—मुझे टूटी-फूटी मड़ैया ही; तुम्हें तरह तरह के ज़ेवर हैं—मुझे फटे-चिटे कपड़े; तुम्हारे पास खाने की चीजें बहुत हैं—मुझे इसकी कमी है, लेकिन मेरे दिल में जैसी शांति का

राज्य है, क्या तुम्हारे दिल में भी है ? धन के मद से अंधे होकर इनसान को जानवर समझते हो, मानव-हृदय-स्थित उस परम पुरुष की अवहेलना कर नरक के मार्ग पर चलते हो तुम, लेकिन मैं उसकी अनुकम्पा से बचा हुआ हूँ; उसके प्रेम से मेरा दिल लबालब है।

ट्रिवनफ़ को तब किसका अहंकार है ? सुन्दर, रमणीय महल का ? घोड़ा-गाड़ी और दास-दसियों का ? संचित अर्थ-राशि का ? तुम भ्रांत हो ! जानते नहीं काल के बहाव में सब बरबाद हो जायगा, और दो दिनों के बाद तुम स्वयं बरबाद हो जाओगे ? यही कहता हूँ ट्रिवनफ़, तुमने अच्छा नहीं किया। मार्था के लिए कोट नहीं ले जा रहा हूँ—उसे मैं अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा ?'

यह सोचते-सोचते साइमन रास्ते की मोड़ पर आ गया। गिर्जा घर के बग़ल में उसे कुछ दिखाई पड़ा। रात का अँधेरा और भी गहरा होता जा रहा था। साइमन ने चारों ओर ख़ूब ग़ौर से देखा पर वह नहीं समझ सका कि वह क्या है ?

'वहाँ पर कोई पत्थर तो था नहीं। तब क्या किसी गाय, बैल, घोड़ा आदि ने वहाँ पर आश्रय लिया है ? नहीं वह भी तो नहीं। सिर तो आदमी के सिर सा मालूम पड़ता है। लेकिन ऐसे बेवक्त वहाँ पर एक आदमी क्यों ठहरा है ?'

छः-पाँच करते करते थोड़ा और आगे बढ़कर साइमन ने स्पष्ट देखा एक मृत-प्राय आदमी का नंग-धड़ंग-शरीर दीवार की तरफ़ पड़ा है। उसे उस आदमी के पास जाने की इच्छा हुई, लेकिन वह न जा सका। बहुत देर तक इधर-उधर करने के बाद डरे-घबड़ाये दिल के साथ साइमन अपनी राह जाने लगा।

कुछ दूर जाने पर साइमन ने पीछे मुड़कर देखा—उसने देखा आदमी उठकर बैठा है, कुछ बड़बड़ा रहा है, उसकी

'सभी मेरे लिए बराबर है।'

साइमन यह जवाब सुनकर चकित हो उठा। सोचा, इसके दिल में पाप नहीं है, इसकी बोली कैसी मधुर है! आँखें कितनी सुन्दर हैं। किंतु यह अपने संबंध में कुछ बतलाता नहीं—पूछने पर भय से काँप उठता है।

साइमन ने उससे और कोई सवाल न किया, अपनी कुटी की ओर जाने लगा—युवक पीछे पीछे।

दरिद्र साइमन एक अनजान, कुलीन, असहाय, युवक को अपने साथ घर लिये जा रहा है। युवक कौन है, उसका चरित्र कैसा है, इसकी कोई फ़िक्र दरिद्र साइमन के मन में नहीं। इस अनजान आगन्तुक को देख कर मार्था क्या कहेगी, इससे वह एकदम बेफ़िक्र! उसने अपने पैर के जूते युवक को पहना दिये हैं और जिस फटे-चिथड़े कोट को वह पहने था उसे भी युवक को ही पहना दिया है। वह ख़ुद केवल मार्था की क़मीज़ पहने है। भयंकर ठंड पड़ रही है, लेकिन साइमन अविचलित, उसका प्रशान्त हृदय उद्वेग-रहित है।

दोनों आदमी चुपचाप चले जा रहे हैं, ऊपर आकाश, नीचे विशाल भूखण्ड। युवक पार्थिव-ज्ञान रहित है। भविष्य की चिन्ता से बेफ़िक्र, साइमन का दयालु चित्त—प्रशान्त-हृदय है।

धीरे धीरे वे गाँव के समीप आ गये। ठीक इसी समय अचानक ठंडी हवा के एक झोंके ने साइमन के प्रशान्त-हृदय में चिन्ता की तरंग बहा दी। साइमन अपने मन में सोचने लगा—

'कितना सुन्दर वह कोट था, तुमने आज उसे ख़रीद कर नहीं लाया, साइमन! लाने गये थे गरम कोट—दे आये अपनी क़मीज़ तक! केवल वही नहीं—एक नंग-धड़ंग भिखारी को तुम

लिये जा रहे हो आश्रय देने। साइमन! मार्था इसे नहीं सह सकेगी।'

मार्था कोट न पाकर विरक्त हो उठेगी—यह सोच साइमन चिंतित हो उठा। किन्तु उसी वक़्त उसका मन गिर्जा घर के पास पड़े युवक के सुन्दर-स्वर्गीय-दृष्टि की ओर चला गया। उसकी चिन्ता तब तुरन्त दूर हो गयी, और उसका दिल मारे ख़ुशी के काँप उठा।

(३)

साइमन की पत्नी ने घर के सारे काम साँझ के पहले ही ख़तम कर लिये, लकड़ी काटी, पानी लाया, साँझ हो जाने के बाद बच्चों को भोजन कराया, बाद ख़ुद भोजन करने लगी। भोजन करते-करते उसके मन में यह विचार उठा—

'अगर साइमन बहुत भूखा न होगा तो बचे भोजन से ही काम चल जायगा। तब दूसरे दिन के लिए खाने की कमी न रहेगी। इसलिए अभी और कुछ करने धरने की ज़रूरत नहीं। अगले सोमवार तक इसे ही किसी तरह चलना होगा।'

माथा ने ख़ूब सावधानी से भोजन मेज़ पर रख दिया, और एक जगह बैठ कर साइमन की फटी क़मीज़ सीने लगी। रात एक पहर बीत गयी, अपने पति की याद उसे हो आयी, वह सोचने लगी—

'कहीं दूकान वाला साइमन को ठग न ले, बेचारा बहुत ही भोला-भाला आदमी है। वह तो भूल कर भी किसी को नहीं ठगता पर उसे एक छोटा बच्चा भी ठग ले सकता है। मेरे और ट्रिवनफ़ के रुपयों से तो एक बहुत ही बढ़िया कोट मिलेगा। मार्था अपने मन में फिर सोचने लगी—अहा, स्वामिन्! उस बढ़िया कोट को लेकर तुम कब तक आओगे? मैंने पिछले जाड़े में कितना कष्ट उठाया है। जाड़े के मारे

घर से बाहर भी न हो सकती थी। सिर्फ़ एक ही कोट था, जिसे तुम ही पहन कर बाहर चले जाते थे और मैं आग के पास बैठी अपने बदन को गर्म रखती थी। इस बार वह तकलीफ़ मुझे न होगी। लेकिन साइमन! तुम्हारे आने में देरी देख कर मेरा मन डर से न जाने कैसा हो रहा है। कहीं शराब पीकर कोट की बात भूल गये हो तो? नहीं, ऐसा क्या होगा! प्रियतमा मार्था ने जिन रुपयों को इतनी तकलीफ़ से पैदा किया है उसका अपव्यय कर क्या ख़ाली हाथ घर लौटोगे? ऐसे पत्थर-दिल तो तुम नहीं हो। साइमन! फिर इतनी देर क्यों?'

मार्था कल्पना के सुख-राज्य में तल्लीन हो गयी, किन्तु तुरन्त पति के प्रति के सन्देह ने उसके आनन्द-राज्य में अशांति की आग प्रज्ज्वलित कर दी। मार्था बहुत उत्कंठित होकर पति के आने की बाट जोहने लगी। इसी समय बाहर किसी के आने की आहट मालूम हुई और तुरन्त किसी ने पुकारा—'मार्था, मार्था!'

साइमन की आवाज़ पहिचान कर मार्था ने बड़े उल्लास के साथ दरवाज़ा खोला। साइमन ने युवक के साथ घर में प्रवेश किया।—ऐं, कोट कहाँ? कोट की जगह एक नंग-धड़ंग अजीब जीव को साथ लिए साइमन जो खड़ा है! मार्था के गुस्से और ताज्जुब की हद न रही।

साइमन के मुँह से शराब की गंध निकल रही थी। मार्था ने बड़े दुःख के साथ कहा—'आख़िर मैं जो सोच रही थी वही हुआ। देखती हूँ शराब में ही रुपये ख़र्च कर आये! यह क्या—शरीर में कोट भी नहीं और पैर में जूते नदारत! ऐं, उस जानवर को दे दिया?—समझ गयी! यह आफ़त तुम कहाँ से ख़रीद लाये? इसे देखते ही मैं समझ गयी कि सब रुपयों के शराब पी उसे मिट्टी में मिला घर तक ले आये हो इस बंधु को!'

साइमन चुपचाप खड़ा है, उसे कुछ बोलने की हिम्मत नहीं होती। उसके मन में घोर विषाद, चिन्ता, भय आदि भर गये। और युवक! चुपचाप चित्रवत नीची नज़र किये खड़ा है।

युवक के डरे हुए मुख को देख कर मार्था ने मन में सोचा यह ज़रूर ही पापी है। क्रोधान्ध मार्था भृकुटि चढ़ाये अंगीठी के पास चली गयी और तिरछी चितवन से साइमन और युवक को देखने लगी।

साइमन ने अपनी टोपी उतार कर मेज़ पर रख दी—वह यहां समझा कि इस वक्त मुझे कोई नहीं देख रहा है, अतः बेञ्च पर बैठते हुए बोला –

'मार्था, हमें कुछ खाने को न दोगी?'

मार्था इसे सुनते ही न जाने क्या क्या बड़बड़ाने लगी और उस जगह से टस-से-मस तक न हुई,—उसी जगह खड़ी सन्देह भरी चितवन से साइमन और युवक के व्यापारों को देखने लगी। साइमन ने मन में सोचा कि गुस्सा के मारे मार्था को हिताहित का ज्ञान नहीं है। इसलिए पूर्ववत युवक का हाथ पकड़ कर उसने कहा—

'बैठो न भाई। यह देखो, मार्था ने खाने का सामान तैयार करके रख दिया है।'

युवक बेंच पर बैठ गया।

साइमन ने कहा—"खाने को कुछ तैयार नहीं किया है, मार्था?"

मार्था कर्कश कंठ से बोल उठी—'खाना तैयार किया था, लेकिन तुम्हारे लिए नहीं? शराब पीने से तुम्हारी अक़्ल ख़राब हो गई है? गये थे तो तुम कोट लाने पर लिये आये एक नंग-धड़ंग इनसान-रूपी आफ़त! तुम्हारे ऐसे पागल के लिए यहाँ खाने की कोई चीज़ नहीं है!'

'नहीं है ? अच्छा, तो फिर इस प्रकार बेकार बातें कह कर अपनी जिह्वा को क्यों नापाक करती हो, मार्था ? यह आदमी कौन है, कैसा है, आदि तुम्हें पूछना भला नहीं लगता ?'

'बेकार की बातें मत करो, मैंने तुम्हें जो रुपये दिये थे उनका तुमने क्या किया ? ज़रा कहो तो सुन लूँ।'

साइमन ने सभी रुपये मेज़ पर रख कर मार्था से कहा—'यह लो, अपने रुपये ट्रिवनफ़ ने रुपये उधार नहीं दिये।'

मारे ग़ुस्सा के मार्था ने मेज़ पर से अपने रुपये उठा लिये और गरजती हुई बोली—'खाने-पीने की चीज़ें यहाँ नहीं हैं। तुम्हारे नंग-धड़ंग भिखारी के लिए मैंने क्या होटल खोल रखा है ?'

'मार्था ! ज़रा दम भी तो लो, मेरी बातें तो तुमने आख़िर तक सुनी ही नहीं !'

'ऐं ! क्या, कहा, तुम्हारी और भी बातें हैं ? तो तुम्हारे ऐसा पागल से मैं फिर क्या सुनूँ ? एक तुम्हीं ने ब्याह किया है, क्या दूसरों ने नहीं किया है ? एक बार और तुमने ही मुझसे झगड़ा करके उतना बढ़िया मख़मल को बेचकर शराब पी ली थी। याद है यह बात ? और आज फिर मैंने तुम्हें कोट ख़रीदने के लिए रुपये दिये तो उसका शराब पीकर मुझे अपनी स्पीच सुनाने आये हो ! मैं तो पगली नहीं जो तुम जैसे एक पगले की बात कान पसार कर सुनूँ।'

साइमन की दिली ख़्वाहिश थी कि मार्था को समझा कर बतलाए कि शराब के लिए जो मेरे पास पैसे थे उन्हें ही मैंने ख़र्च किये हैं। पर उसने एक न सुनी। साइमन ने शराब के वृत्तान्त मार्था से कहने की बड़ी कोशिश की, लेकिन मार्था ने उसे यह मौक़ा न दिया। मार्था के मन की ख़ुशी ने अब उसका

ही तिरस्कार करना शुरू किया, इसलिए उसने आज से दस वर्ष पहले की घटना बयान कर साइमन के मन को डाँवाडोल कर देना चाहा।

तिरस्कार करते करते मार्था ने साइमन के शरीर से क़मीज़ खीचना शुरू किया और गुस्से के साथ बोली—'क़मीज़ छोड़ दो, मेरी क़मीज़ की ओर कोई नज़र उठा कर भी नहीं देख सकता। मेरी क़मीज़ ले जाकर उसे दे दी, लाज नहीं लगती ?'

साइमन ने उसकी क़मीज़ खोल दी। मार्था उसे लेकर दरवाज़े की ओर चली। वह बाहर जाना चाहती थी पर न जा सकी और वहीं पर ठहर गई। गुस्से से वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई, किन्तु आगन्तुक के विषय में जानने की इच्छा से मार्था ने अपना गुस्सा अच्छी तरह प्रगट न होने दिया और मारे गुस्सा के दरवाज़े के पास ही खड़ी रही।

(४)

मार्था ने मुँह फिराकर कहा—'हाँ, वह यदि भला आदमी होता तो नंग-धड़ंग क्यों रहता ? एक साधारण क़मीज़ भी उसे ख़रीदने की क्षमता नहीं ? निश्चय ही उसने कोई बुरा काम किया है, यदि ऐसी बात नहीं है तो फिर तुम इन बंधुवर को कहाँ पा गये—मुझसे यह क्यों नहीं बताते ?'

मैं तो यही कहने की कोशिश से उस समय आया था, मार्था ? लेकिन तुम तो अपने आगे मुझे कुछ बोलने देती ही नहीं। घर लौटते वक्त मैंने इसे गिर्जा घर के बग़ल में पड़ा देखा। इसका शरीर नंग-धड़ंग ठंड से ठिठुरा हुआ था। यह तो गरमी का मौसम नहीं है मार्था, कि आदमी नंगा होकर बैठा रहेगा। ईश्वर ने ही मुझे उसके पास तक भेजा, नहीं तो वह मर जाता। पर मैं उस समय और क्या कर सकता था ? कैसे बताऊँ कि इसे क्या हुआ है ? वह कुछ बतला जो

नहीं सका ; तब मैंने अपने जूते, क़मीज़, कोट आदि पहनाकर ले आया, मार्था ! शान्त होओ। बेकार उसके मन में तकलीफ़ देकर क्यों पाप का भागी बनती हो ? सोचो तो मार्था, तुम्हारी यह दुनिया कितने दिनों की है ?

'यह भूलने की बात नहीं,' ऐसा कह मार्था ने अपने स्वामी का कुछ और तिरस्कार करना चाहा, किन्तु युवक की ओर नज़र पड़ते ही न जाने क्या सोचकर साइमन को उसने कुछ नहीं कहा।

युवक पत्थर की मूर्ति की नाईं बैठा है। उसकी दोनों आँखें बन्द हैं, दोनों हाथ घुटने पर पड़े हैं और सिर छाती की ओर झुका हुआ है। युवक मौन है। मार्था चुपचाप वहीं पर खड़ी है। इस नीरवता को भंग करते हुए साइमन बोला—

'मार्था ! मार्था ! क्या तुम्हारे हृदय में ईश्वर नहीं वास करता ?'

इस बात ने मार्था के मर्मस्थल को भेद दिया। मार्था ने फिर युवक की ओर देखा। उसके दिल में आवाज़ होने लगी—'मार्था ! तुम तो स्नेहशीला जननी, पतिप्राणा-पत्नी हो, फिर क्या आज तुम्हारी स्नेह-ममता निष्ठुरता के पाषाण-स्तूप में बंद हो गयी ? जिस माँ की याद दुःख-तापदग्ध, संसार की मरुभूमि से क्लान्त, तृषित सन्तान के हृदय में सान्त्वना, साहस, शांति की अमृत वर्षा करे वही माता तटहीन संसार सागर से विपन्न, भीत, त्रस्त, मनुष्यों का एकमात्र संबल है—वही माता तुम हो ! तुम्हारे अनल में अपार, मातृस्नेह पारावार है। वह क्या आज निर्ममता के प्रचंड रविताप से शुष्क हो जायगा ? तुम्हारी औलाद के रंज के आँसू से क्या वह पाषाण-हृदय नहीं पिघलेगा ? मार्था ! मार्था, क्या तुम्हारे दिल में ईश्वर वास नहीं करता ?'

मार्था अपने दिल को न रोक सकी, आगन्तुक के लिए उसके दिल में करुणा उमड़ आयी। करुणा-मन्दाकिनी की वह पवित्र धारा गालों को भिगोती हुई बहने लगी। मार्था वहाँ से रसोईघर में चली गयी।

साइमन और युवक बैठे हैं। मार्था ने बचे भोजन लाकर साइमन से कहा—'यह लो, खाओ।'

साइमन ने युवक के साथ खाना शुरू कर दिया। मार्था एक ओर खड़ी होकर युवक को देखने लगी।

इस अनजान कुलीन आगन्तुक के लिए उसे बड़ा रञ्ज हुआ। विस्मय और आवेग के साथ मार्था उसे देख रही है। इसी समय हठात युवक ने सिर उठा कर मार्था की ओर देखा। युवक के मुख पर हँसी फूट पड़ी, पूर्ण वर्षा के काले मेघ से मुक्त आकाश में मानों स्वर्ण-रश्मिजाल विकीर्णकारी शारदीय-सूर्य के प्रथम आलोक-संपात की तरह सुन्दर, नयन-मनोमुग्ध-कर वह हँसी थी। मार्था का मन आनन्द से नाच उठा। आग-न्तुक के पास आकर मार्था ने पूछा—

'कहाँ से आये हो भाई ?'

'मैं यहाँ का रहने वाला नहीं हूँ !'

'यहाँ आये किस लिए तुम ?'

'नहीं जानता हूँ, बहन !'

'किसी डाकू ने क्या तुम्हारी ऐसी दशा की है ?'

'क्या तुम वहाँ पर एकदम नंग-धड़ंग पड़े थे ?'

'हाँ एकदम नंग-धड़ंग। ठंड से मेरा सारा बदन अवश होता जा रहा था। उस समय साइमन को मुझे देखकर दया आ गयी। उन्होंने अपने कपड़े-लत्ते, जूते वग़ैरह पहनाये और तब यहाँ ले आये। और अभी आपने भी मुझ पर दया करके खाने को दिया है। आप लोगों का ईश्वर भला करेगा।'

मार्था उठी और जिस क़मीज़ को वह सी रही थी उसे और एक पायजामा ले आयी और बोली—

'लो, इन्हें पहनो, मैं देखती हूँ तुम्हारे पास एक भी वस्त्र नहीं है। इन्हें पहन कर वहाँ पर सो जाओ।'

युवक ने प्रसन्नता-पूर्वक क़मीज़ और पायजामा पहना और बतायी जगह पर जाकर सो रहा। मार्था ने भी दीपक बुझा दिया और सोने चली गयी।

रात का दूसरा पहर, लेकिन मार्था की आँखों में नींद का नाम तक नहीं। उसके मन से उस युवक का ध्यान जाता ही नहीं।

जिस वक्त मार्था के मन में यह विचार उठा कि मैंने खाने की सारी चीज़ें उस युवक और साइमन को खिला दिया और कल के लिए अब कुछ भी नहीं बच रहा, उस पर भी युवक को मैंने पायजामा और क़मीज़ पहनने को दी—दान कर दिया, उसी समय उसके मन में कृपणता ने प्रवेश किया, दूसरे ही क्षण युवक की उस स्वर्गीय हँसी की बात स्मरण होने मात्र से ही मार्था का मन आनन्द से नाच उठा।

मार्था जगी है। वह बहुत देर के बाद जान सकी कि साइमन भी जाग रहा है। मार्था ने तब उसे पुकारा—

'साइमन।'

'क्या है?'

'तुमने तो सारे भोजन की चीज़ें ख़तम कर दी, और अब कल के लिए तो कुछ रहा ही नहीं। आख़िर कल क्या होगा? समझ नहीं पाती। हाँ, ज़रूर पड़ोसिन एमलिया से कुछ उधार पा सकती हूँ।'

'डर किसका? जब तक तन में प्राण बचा रहेगा तब तक इसके लिए भोजन भी जुटाऊँगा, मार्था।'

मार्था चुप हो गयी, पर उसकी फ़िक्र दूर न हुई, बोली—

'वह भला आदमी है यह तो मैं जान रही हूँ, लेकिन वह अपने बारे में कुछ क्यों नहीं बताता, साइमन ?'

'मैं तो यही समझता हूँ कि वह कह नहीं सकता है, मार्था !'

'साइमन !'

'क्या है ?'

'मैंने दूसरे को दिया कोई हमें क्यों नहीं देता ?'

'छिः, यह क्या कहती हो मार्था ?'

साइमन और कोई जवाब न खोज सका, नींद का बहाना करके पड़ा रहा।

(५)

रात बीती, भोर हुआ। साइमन नींद से जाग उठा। बच्चे सो रहे हैं। मार्था खाने की चीज़ें उधार लाने के लिए पड़ोसिन के पास गई हुई है। युवक आँखें ऊपर की ओर किये बेञ्च पर बैठा है। पहले दिन की अपेक्षा आज उसका मुख-मण्डल उज्ज्वल और प्रसन्न दिखाई पड़ता है।

साइमन ने युवक से कहा—'देखो मित्र ! पेट तो खाना माँगता है और नंगा बदन पोशाक खोजता है। पेट के लिए तो कोई उपाय करना ही होगा तुम्हें। कौन सा काम तुम कर सकते हो ज़रा बताओ; मैं भी सुनूँ।'

'मैं तो कोई काम नहीं जानता हूँ भाई !'

इस उत्तर ने साइमन को चकित कर दिया। वह बोला—'देखो बंधु, इच्छा रहने पर ऐसा कोई काम नहीं है जिसे मनुष्य न कर सके।'

'अगर इन्सान काम करते हैं तो मैं भी करूँगा।'

'तुम्हारा नाम क्या है भाई ?'

'माइकेल।'

'अच्छा माइकेल ! तुमने अपने संबंध में कुछ बताया नहीं, बताओ न, अगर नहीं बताना चाहते तो फिर तुम्हारी इच्छा। किन्तु तुम्हें पेट की खातिर कोई काम तो खोजना ही पड़ेगा भाई ! तुम्हें मैं जैसा बताऊँ अगर तुम उस तरह करो तो मैं ही तुम्हें अपने यहाँ रख लूँगा।'

'ईश्वर आपका भला करे। मैं काम सीखूँगा। क्या करना होगा, देखूं ये दिन मुझ पर मेहरबानी करे।'

साइमन ने सूत का एक लच्छा अपने हाथ में लिया और किस तरह उसमें मोम लगाना होगा यह दिखा कर बोला —

'माइकेल यह कोई कठिन काम नहीं है।'

माइकेल ने अच्छी तरह सूत में मोम लगाने के काम का लक्ष्य किया और सूतों का लच्छा हाथ में लेकर मोम लगाने के काम में लग गया।

साइमन ने अब उसे जूतों में तल्ला लगाने तथा सिलाई का तरीक़ा बताया और दिखाया। माइकेल ने उसे भी तुरन्त ही सीख लिया। अन्त में साइमन ने उसे जूता तैयार करने की सारी प्रणाली सिखा दी। माइकेल को इसे सिखाने में किसी तरह की कठिनाई नहीं हुई।

साइमन के केवल सिखाने से ही माइकेल ने सब काम सीख लिया और ऐसी पटुता के साथ काम करने लगा कि मानों जूता बनाने के काम में वह लड़कपन से ही अभ्यस्त है।

माइकेल काम कर रहा है। फ़ुर्सत नहीं, आराम नहीं, केवल खाने से ही तृप्त है। काम ख़तम होते ही वह नीची नज़र कर बैठ जाता है। बाहर रास्ते में वह कभी नहीं दिखाई पड़ता; ज़रूरत से ज्यादा एक शब्द भी नहीं बोलता, वह ख़ुश रहने पर भी बेकार के हँसी-मज़ाक में अपना समय बरबाद नहीं करता। बराबर अपने मन से काम करता रहता है।

मार्था ने उसे सिर्फ़ एक बार खाने को दिया और उसने एक सुन्दर स्वर्गीय हँसी से मार्था को पागल बना दिया। और अब वह कभी नहीं हँसता। इस तरह माइकेल का समय मज़ में कटने लगा।

(६)

दिन पर दिन, हफ़्ते पर हफ़्ते बीतने लगे। इस तरह माइकेल का एक साल यहाँ बीत गया। वह साइमन के घर पर ही रह कर काम करता है। फिर भी माइकेल की कार्यकुशलता की बात चारों तरफ़ फैल गई है। माइकेल की तरह बढ़िया, ख़ूबसूरत जूता तैयार नहीं कर पाता। ज़्यादातर लोग जूते के के लिये साइमन के पास आते हैं। इससे साइमन को भी कुछ अधिक मुनाफ़ा होने लगा।

जाड़े का दिन है, साइमन और माइकेल काम कर रहे हैं, इसी समय एक घोड़ा-गाड़ी कुटी के दरवाज़े पर आ लगी। एक आदमी ने पीछे से उतर कर दरवाज़ा खोल दिया। गाड़ी से एक भला मनुष्य दरवाज़े के पास आकर रुक गया। मार्था ने घबड़ा कर दरवाज़ा खोल दिया। भलेमानुष होशियारी के साथ दरवाज़े से घर के भीतर आया। उसके विशाल शरीर ने आधे घर को भर दिया।

साइमन ने तुरत उठकर उसे नमस्कार किया और ताज्जुब के साथ आँखें फाड़ कर आगन्तुक को देखने लगा। इस तरह का विशाल-शरीर साइमन ने इसके पहले कभी न देखा था। वह ख़ुद दुबला-पतला था। मार्था की तो बात ही नहीं और माइकेल का शारीरिक गठन भी स्वाभाविक ही है।

भलेमानुष का मुख-मण्डल लालवर्ण, विशाल, मांसल और गला बलिष्ठ साँड की तरह। सारा शरीर मानों फ़ौलाद का बना था।

आगन्तुक ने मज़े में सारी बेंच पर दख़ल कर लिया और बोला—

'इस घर का मालिक कौन है ?'

साइमन ने ज़रा आगे बढ़ कर कहा,—

'हुज़ूर ! मैं ही।'

आगन्तुक ने आवाज़ लगाई—

'थियोडर ! चमड़ा लेते आओ।'

नौकर एक बक्स लिये हुए भीतर आया। मालिक ने बक्स लेकर टेबल पर रख दिया और थियोडर से बक्स खोलने को कहा। उसने बक्स खोल दिया।

आगन्तुक ने साइमन से कहा—'यह चमड़ा देखते हो न ?'

'हाँ, हुज़ूर !'

'यह कैसा चमड़ा है बतला सकते हो ?'

साइमन ने चमड़े को हाथ में लेकर कहा—'बहुत अच्छा चमड़ा है !'

'अरे बेवकूफ़ ! बढ़िया तो है ही। किस तरह का चमड़ा है यह नहीं बता सकते ? इस तरह का चमड़ा तुमने और कभी नहीं देखा है क्या ? इसे मैं जर्मनी से लाया हूँ, दाम कितना है जानते हो ?'

बेचारा साइमन बहुत ही लज्जित हुआ, संकोच के साथ बोला—'यही तो हुज़ूर ! इस तरह की चीज़ मैं कहाँ से देखता।'

'अच्छा सुनो, ठहरो, हाँ, तो इस चमड़े से तुम मेरे पैर का जूता तैयार कर सकते हो ?'

'हाँ हुज़ूर, कर सकता हूँ।'

आगन्तुक ने गरजते हुए कहा—'तुम तैयार कर सकते हो ? ठीक है, सोच कर देखो कौन है और किस तरह का चमड़ा

देकर जूता बनवाने आया है। इस तरह जूता तैयार होना चाहिये कि एक साल में वह कहीं पर भी न फटे और न उसकी खूबसूरती बिगड़े। फिर भी मैं कहता हूँ अगर बना सकते हो तो इसे लो, चमड़ा काट-कूट कर ठीक करो; अगर नहीं बना सकते हो तो ठीक-ठीक कह दो, चमड़ा बरबाद करना नहीं है। एक साल खतम होने के पहिले ही अगर कट गया और खूबसूरती बिगड़ गई तो तुम्हें जेल भिजवा दूँगा याद रखो।'

साइमन असमंजस में पड़ गया, अगर इस काम को नहीं लेता है तो पैसे की क्षति होती है, अगर रखता है और कहीं वह इधर-उधर करने लगे जिसका भी भय है। वह इधर-उधर देखने लगा। आखिर माइकेल को कोहनी से धीरे-धीरे धक्का देकर कहा—'इस काम को रक्खूँ माइकेल ?'

माइकेल ने माथा हिलाकर अपनी राय दे दी—साइमन ने काम रख लिया।

नौकर ने भलेमानुष के पैर से जूता खोल दिया और उन्होंने आगे पैर बढ़ा कर कहा—'यह लो, पैर का नाप ले लो।'

साइमन एक सत्रह इंच लम्बा काग़ज़ लेकर पालथी मार कर बैठ गया। आगन्तुक का मोज़ा मैला न हो जाय इस डर से साइमन ने अपने कपड़े पर पैर रख नाप लेना शुरू किया। उसने बड़ी होशियारी से पैर का तल्ला नापा, ऊपर का हिस्सा नापा, लेकिन बहुत बड़े लकड़ी के कुन्दे के समान उसके पैर की घुट्टी नापने के समय काग़ज़ कम हो गया।

आगन्तुक ने गरज कर कहा—'होशियार, किसी भी तरह नाप छोटा नहीं होना चाहिये।'

साइमन एक टुकड़ा काग़ज़ और लाने के लिए खड़ा हुआ। आगन्तुक झोपड़ी के लागों को देख रहा था, कि हठात् माइकेल के ऊपर उसकी दृष्टि गई, उसने पूछा—

'वह आदमी कौन है ?'

साइमन ने कहा—'हुजूर ! वह हमारा ही आदमी है, आपका जूता वही तैयार करेगा।'

भलेमानुष ने माइकेल से कहा—'अच्छा हाँ, यह याद रखो कि जूता इस तरह मजबूत और बढ़िया बने कि जिसमें वह ठीक एक साल तक टिक सके।'

साइमन ने देखा माइकेल स्थिर दृष्टि से देख रहा है। आगन्तुक के पीछे घर के कोने में किसी अद्भुत वस्तु के ऊपर मानों उसकी नज़र अटक गई है। एकटक देखते-देखते हठात् माइकेल हँस पड़ा। उसका मुख-मण्डल स्फीत हो उठा।

आगन्तुक ने गरज कर कहा—'दाँत बाहर करके हँसते हो, बड़े बेवकूफ़ हो तुम ! देखो जूता ठीक वक़्त पर मिल जाना चाहिये, समझे !'

माइकेल ने कहा—'जो हुक्म हुजूर !'

आगन्तुक ने अपना जूता और कोट पहना और दरवाज़े की ओर चला। दरवाज़े से जैसे ही बाहर होने लगा कि उसके माथे में चौकठ से ज़ोर की एक ठोकर लगी।

भलेमानुष ने बड़बड़ाते हुये साइमन को गाली दी और माथा सहलाते-सहलाते गाड़ी पर चढ़ गया। गाड़ी तेज़ी के साथ वहाँ से चल दी।

सड़क की ओर देखकर वह बोला 'बाप रे ! एक विशाल-काय साँड़ आया था वह और क्या ! मेरे चौकठ को तोड़ गया, लेकिन उसे मानो चोट लगी ही नहीं।'

मार्था ने कहा—'हाँ, उसका शरीर किस तरह का है ! नहीं, वह इस तरह कैसे हुआ ? जैसा खाता है वैसा शरीर है ! साइमन हम ग़रीब जो हैं !

एक गर्म उसाँस मानो मार्था के दिल को चीरती हुई बाहर निकल गई; मार्था और कुछ नहीं बोल सकी।

(७)

मार्था नीरव, और माइकेल मौन है, इसी समय साइमन माइकेल के पास आकर बोला—माइकेल! काम तो मैंने ले लिया, पर कहीं कोई आफ़त न आये, इसका ख़याल रखना भाई! चमड़े का दाम बहुत ज्यादा है और उस भद्रपुरुष की आदत तो तुमने देखा ही है। मुझसे तुम्हारी दृष्टि-शक्ति तेज़ है और काम में दक्षता भी ज्यादा रखते हो, अतः इस नाप को लो और तुम्हीं चमड़े को काट-कूट कर ठीक करो। न होगा मैं इसकी सिलाई कर दूँगा। क्या कहते हो माइकेल! ठीक है न?'

माइकेल ने साइमन के हाथ से चमड़ा ले लिया और उसे मेज़ पर रख कर पालिश करने के बाद काटना आरम्भ कर दिया!

माइकेल अपने काम में मस्त है, मार्था कुछ दूर पर खड़ी माइकेल का काम देख रही है। मार्था भी जूता बनाना जानती है। उसने देखा कि माइकेल बूट जूते की जगह चप्पल के लिए चमड़ा काट रहा है। यह देख मार्था विस्मित हो उठी।

मार्था ने माइकेल से कहना चाहा, लेकिन माइकेल की कार्यकुशलता की याद आते ही उसे कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई और वह चुपचाप उसे देखती रही।

माइकेल ने सब हिस्सों की तैयारी कर सिलाई करना शुरू कर दिया। मार्था यह देख कर और भी विस्मित हुई। लेकिन इस बार भी उसे कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। माइकेल सिलाई करने में तल्लीन है, दिन का दूस[illegible] ह बीत चला, फिर भी उसे इसकी कुछ ख़बर न[illegible]।

काम समाप्त कर माइकेल के पास आया। उसने देखा कि माइकेल ने उस चमड़े का चप्पल बना कर रख दिया है।

साइमन यह देख बहुत डर गया और मन ही मन क्रोधित हो उठा, पर सोचने लगा—'इस एक साल में माइकेल ने कभी ऐसी मामूली ग़लती नहीं की लेकिन आज वह यह भारी भूल कैसे कर बैठा। फ़रमायश थी बूट जूते की, और माइकेल ने चप्पल तैयार कर चमड़े को भी बरबाद कर दिया। मैं उस भले आदमी को क्या जवाब दूँगा? ऐसा चमड़ा भी तो यहाँ नहीं मिलता।'

अनेक तरह की चिन्ताओं में व्यस्त साइमन ने माइकेल से कहा—'माइकेल! बंधु!! आज तुमने यह क्या किया? तुमने तो मेरा सर्वनाश ही कर दिया। भले आदमी की फ़र्माइश क्या थी और तुमने क्या तैयार किया?'

साइमन कहता रहा पर माइकेल ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। सारी दृष्टि और मन लगा कर वह अपना काम करता रहा, इसी समय अचानक घर के बाहर घोड़े के पैर की आवाज़ हुई। साइमन ने झरोखे से झाँका, देखा आदमी घोड़े से उतर कर उसके घर की ओर आ रहा है। साइमन ने दरवाज़ा खोल दिया—थियोडर ने घर में प्रवेश किया।

'नमस्कार!'

'नमस्कार, क्या है?'

'मेरे मालिक की पत्नी ने जूते के सम्बन्ध में कुछ कहला भेजा है।'

'हाँ, क्या कहला भेजा है, कहिये तो।'

'ओह, मालिक को जूते की अब कोई जरूरत नहीं रही, अब वे दुनिया में नहीं रहे!"

'ऐं, यह क्या कह रहे हैं आप? वे नहीं रहे?'

'हाँ मैं सच कह रहा हूँ। आपके यहाँ से लौटते वक्त उस दिन रास्ते में ही गाड़ी पर उनकी मृत्यु हो गयी। जिन्हें जूते की ज़रूरत थी उनकी साध हमेशा के लिए मिट गयी। मालकिन ने उस चमड़े के एक जोड़ा चप्पल तैयार करके माँगा है।'

थियोडर की बात खतम होते ही माइकेल ने मेज़ पर से चप्पल का जोड़ा उठाया और अच्छी तरह झाड़पोंछ कर उसके हाथ में रख दिया।

'नमस्कार, आप लोगों का ईश्वर भला करे!' कहता हुआ थियोडर चला गया।

इस अलौकिक काम को देख कर साइमन चकित और अवाक् रह गया।

(८)

एक-दो साल करते-करते पाँच साल बीत गये। माइकेल अभी साइमन के ही घर पर रहता है, लेकिन उसकी आदत में कोई रद्दोबदल नहीं हुआ। न वह कहीं जाता है, और न बिना ज़रूरत कुछ बोलता है। इन लम्बे पाँच सालों में वह सिर्फ़ दो दफ़ा हँसा है; एक दफ़ा उस समय जिस समय मार्था ने उसे खाने को दिया और दूसरी दफ़ा उस वक्त जब सारे बेञ्च को उस विशालकाय भलेमानुष ने दखल कर लिया था। साइमन माइकेल के व्यवहार से बहुत ही संतुष्ट है। अब उससे वह कभी उसके घर-बार का हाल-चाल नहीं पूछता, उसे डर लगा रहता है कि कहीं यह पूछने पर वह गुस्सा होकर चला न जाय।

आज शनिवार है। दिन का एक पहर ढल चुका है। माइकेल एक बेञ्च पर बैठा जूते की सिलाई कर रहा है, और मार्था अपने घर के काम-काज में लगी है। इनके बच्चे बेञ्च पर

खेलते-खेलते कभी-कभी बाहर की ओर झाँकने लगते हैं। साइमन एक खिड़की के पास बैठा अपने औज़ारों को तेज़ कर रहा है।

एकाएक एक बच्चे ने माइकेल को पुकारा—

'चाचा! देखो देखो, अपने दो बच्चों को साथ लिये उसकी माँ हमारे घर की ओर आ रही है।'

बच्चों की बात समाप्त होने के पहले ही अपने काम को छोड़ खिड़की के पास आकर माइकेल बाहर झाँकने लगा।

यह देख साइमन के विस्मय की सीमा न रही—माइकेल कभी आँख उठा कर भी घर के बाहर नहीं देखता। उसका मन और आँख दोनों अपने काम में लगे रहते हैं पर आज अपने हाथ का काम छोड़ कर वह खिड़की से राह की ओर झाँक रहा है! उसका सिर मानो खिड़की से चिपक गया है! उसके अपलक नेत्र, उसकी सारी मनोकामनायें मानों किसी आश्चर्य-जनक वस्तु के ऊपर टिक गयी हैं! साइमन ने भी बाहर की ओर झाँक कर देखा। एक महिला बहुत ही सुन्दर साफ़-सुथरे पोशाक पहने उसकी कुटी की ओर आ रही है और दो छोटी-छोटी सुन्दर बच्चियाँ उसके हाथ की अँगुली पकड़े साथ-साथ आ रही हैं। बच्चियाँ बढ़िया गरम कपड़े पहने और शिर में शाल लपेटे हैं। दोनों बच्चियों की आकृति एक तरह की है, सिर्फ़ एक बच्ची लँगड़ी है। स्त्री उसके दरवाज़े के पास आयी। साइमन ने यह देखते ही दरवाज़ा खोल दिया और तब वह स्त्री अपने बच्चों के साथ घर के भीतर आयी।

'नमस्कार महाशय!'

साइमन ने उत्तर देते हुये कहा—'आइये, आइये, आप क्या चाहती हैं?'

स्त्री मेज़ पर ही बैठ गयी। दोनों बालिकायें लाज के कारण

अपना सिर उस स्त्री की जाँघों में छिपाये खड़ी रहीं। कभी-कभी सिर उठा कर इधर-उधर पड़े हुये औज़ारों वग़ैरह को देख लेतीं।

'इनके लिए दो जोड़े बसन्त में पहनने योग्य जूते आप तैयार कर सकेंगे?'

साइमन ने कहा—'हाँ, आप किस तरह के जूते चाहती हैं बतायें तो! वह माइकेल है जो सब कामों में पटु है वही आपके जूते तैयार कर देगा।'

यह कह कर साइमन ने माइकेल की ओर देखा, परन्तु माइकेल एकटक उन लड़कियों को देख रहा है।

दोनों बालिकाएँ बहुत ही ख़ूबसूरत हैं। सरलता और पवित्रता की मूर्ति। उन दो सुन्दर बच्चियों को देखने से उसके हृदय में स्नेह-सिंधु तरंगित होने लगा। माइकेल उन्हें परिचित की नाईं देख रहा है?—साइमन की समझ में माइकेल की यह बात नहीं आई। यह देख कर वह बहुत ही चकित हुआ पर उसने अपने ताज्जुब को प्रकट नहीं होने दिया और वह उस स्त्री के साथ जूतों का मोल-भाव तेकर पैरों का नाप लेने लगा।

आगन्तुक ने लँगड़ी बालिका को गोद में लेकर कहा—'इस छोटी बालिका के पैरों का दो नाप लें। एक जूता इस लँगड़े पैर के लिए और बाकी तीन जूते अच्छे पैरों के लिए। ये जुड़वाँ बच्चे हैं, इस पैर को छोड़ कर बाकी पैर एक से ही हैं।'

साइमन ने नाप लेकर कहा—'ओह, इतनी ख़ूबसूरत बालिका का पैर इस तरह कैसे हो गया? इस का पैर क्या जन्म से ही ऐसा है?'

स्त्री ने कहा—'नहीं, इसकी माँ ने उसका पैर तोड़ दिया था।'

मार्था अभी तक आगन्तुक और बालिकाओं को अतृप्त आँखों से देख रही थी। तुरत अपनी जगह से वहाँ आकर

उसने भी उनकी बातों में योग दिया और सहानुभूति के साथ पूछा—

'आप क्या इनकी माँ नहीं हैं ?'

'मैं इनकी माँ नहीं हूँ, और न कोई आत्मीय-ही। ये मुझसे एकदम अपरिचित थे। इन्हें मैंने बहुत ही मान से पाला है।'

मार्था ने आश्चर्य के साथ कहा—'ये आपकी अपनी सन्तान नहीं, फिर भी आपका इनके प्रति इतना स्नेह !'

'अगर मैं इनसे स्नेह नहीं करूँ तो मैं जीवित नहीं रह सकती ! इन्हें मैंने अपनी छाती का दूध पिला कर पाला है। मेरा सिर्फ़ एक लड़का था, लेकिन ईश्वर ने जिसे दिया था उसे उन्होंने ही फिर ले लिया। इनके लिए मैं जैसी कोशिशें करती हूँ वैसा मैंने अपने बेटे के लिए कभी नहीं किया।'

'किसकी बालिकायें हैं ये ?'

(६)

'ये किसकी बालिकायें हैं ? इसकी तो बहुत बड़ी कहानी है। आप लोग इतना आग्रह करते हैं तो मैं आप लोगों से सारी बातें बताये देती हूँ।'

स्त्री ने कहना शुरू किया—'आज से छः साल पहले ही ये दोनों बच्चे मातृहीन हो गये। पिता के मरने के तीन दिनों के बाद इनका जन्म हुआ। और इन अभागी बालिकाओं को छोड़ कर इनकी स्नेहमयी माता भी चल बसी। उस समय मैं अपने पति के साथ उनके घर के पास ही रहती थी।

'इनका पिता ग़रीब आदमी था। जंगलों में जाकर लकड़ियाँ काटता और उन्हें बेच कर किसी तरह पेट पालता था। एक दिन लकड़ी काटते समय एक पेड़ उसके ऊपर गिर पड़ा जिससे उसका पेट फट गया—अँतड़ियाँ बाहर निकल आयीं। किसी तरह उठ कर वह घर की ओर चला; लेकिन रास्ते ही में

उसके जीवन का अन्त हो गया। पति की मृत्यु के तीसरे दिन अभागिनी स्त्री ने इस जुड़वा सन्तान को जन्म दिया। वह उस समय अकेली थी, असहाय थी, पास में पैसे भी न थे, खाने के लिए कुछ भी न था, कोई खोज-ख़बर लेने वाला भी न था— नीरव, निर्जन घर में उसने इन बच्चों को जन्म दिया— उस निर्जन कुटिया में ही उसका जीवन-प्रदीप बुझ गया—किसी ने नहीं देखा, किसी ने नहीं जाना, और न किसी की आँखों से उसके लिए एक बूँद आँसू ही गिरा।

'दूसरे दिन सुबह मैं उसकी खोज-ख़बर लेने गई तो मैंने देखा कि अभागिनी का मृत शरीर मिट्टी पर पड़ा है। ज़रूर ही मृत्यु-यंत्रणा से व्यग्र होकर वह बच्चे के पैर पर गिर पड़ी होगी— उसीसे इस सुन्दर पैर की यह दशा हुई। धूल-धूसरित माँ का शरीर और रोते हुये दोनों बच्चों को देख कर मुझे बड़ी वेदना हुई—मैंने गाँव में जाकर ख़बर दी। गाँव के आदमी आकर उसे क़ब्र में गाड़ आये। गाँववाले भले आदमी थे, लेकिन इन दो छोटी बालिकाओं का वे क्या करते? उस समय सन्तानवाली औरतों में सिर्फ़ मैं ही थी। मेरे बेटे की उम्र उस समय सिर्फ़ आठ हफ़्ते की थी। हाय! मेरा वह बच्चा कितना ख़ूबसूरत था! हाय रे, स्वर्ग के उस स्वर्ण-चन्द्र ने सिर्फ़ दो सालों तक मेरे हृदय को आलोकित किया, और फिर इस दुनिया को छोड़कर स्वर्ग को चला गया! बच्चे का वह सुंदर मुख, उस स्वर्गीय मुख से फूटती तोतली बोलियाँ मेरे प्राण काढ़ लेती थीं। जब वह 'माँ, माँ' कह कर पुकारता था, आज भी जब यह सब याद आता है, तब मुझे ऐसा लगता है बहन! कि मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाना चाहता है।'

स्त्री का मुख मलीन हो गया और वह कपड़े से मुँह ढक कर रोने लगी। मार्था के गाल पर भी दो बूँद आँसू चू पड़े।

कुछ देर बाद स्त्री ने एक दीर्घ-निःश्वास छोड़ कर रुँधे कंठ से कहा—

'गाँव के किसान इकट्ठे हुए। दोनों बच्चों के लिए बहुत सोचने-विचारने के बाद अंत में मुझसे कहा—'देखो मेरिया! इनकी दयनीय दशा तो तुम देख ही रही हो, तुम्हारी सहानुभूति भी इनके लिये बहुत है, इसलिये हम तुमसे अनुरोध करते हैं कि इन्हें फ़िलहाल तुम अपने यहाँ रखो. उसके बाद हम सोचेंगे कि इनके लिये क्या किया जाय।'

'मैं बिना किसी द्विविधा के दोनों बच्चों को घर पर लाकर पालने लगी। लेकिन सच्ची बात कहने में डर कैसा, इस लँगड़ी बालिका के लिए पहले मैं उतना यत्न नहीं करती थी, कारण मैं समझती थी कि यह नहीं बचेगी, और न कोई काम ही उससे हो सकेगा। लेकिन सहसा मुझे यह ज्ञान हुआ। मैंने सोचा कि उसके भीतर भी तो ईश्वर वास करता है। उसके प्राण भी तो तकलीफ़ का अनुभव करते हैं। उसके प्रति अपनी इस अवहेलना के लिए मुझे बड़ा अनुताप हुआ। उस समय से मैं इसका भी पूरा ध्यान रखने लगी। मेरी उम्र उस समय बहुत न थी, ख़ूब स्वस्थ थी, खाने की भी कोई तक़लीफ़ न थी और स्तनों में काफ़ी दूध था। मेरा बेटा और ये दोनों बहन उसे पीने पर भी ख़तम नहीं कर सकते थे। मैं दोनों को एक साथ पीने देती, उस समय तीसरा बाट जोहता, और किसी एक का दूध पीना ख़तम हुआ कि तीसरे ने पीना शुरू किया। लेकिन बहुत दिनों तक इस तरह तीसरे को दूध नहीं पिला सकी.—दो साल की उम्र में ही मेरा स्वर्ण-कमल के समान शरीरवाला बच्चा डाल से अलग हुई कमल की कली की भाँति जीवन-डाल से झड़ कर गिर गया। ईश्वर ने अपना दिया ख़ुद ले लिया, और उसके बाद फिर मुझे कोई सन्तान नहीं दी।'

ऊपर की बातें कहते-कहते स्त्री का मुख-मलीन हो उठा, आँखें सजल हो आयीं, लेकिन शोक के आवेग को रोक कर वह फिर कहने लगी—

'इसीसे इन जुड़वे बच्चों के प्रति मेरा इतना स्नेह है। इनके एक पल भी आँखों से ओझल होने पर मेरा प्राण रोने लगता है बहन ! इन्होंने मेरे बेटे की याद भुला दी है। ईश्वर ने मुझे दूसरी संतान नहीं दी, लेकिन इन्हीं के तक़दीर से उन्होंने मुझे धन-दौलत दी है इसीसे इन्हें और भी चाहती हूँ।'

यह कह कर स्त्री ने बायें हाथ से लँगड़ी बालिका को गोद में उठा लिया और दाहने हाथ से आँखों के आँसू पोछने लगी।

उस समय मार्था ने एक दीर्घ-निःश्वास छोड़ते हुये कहा—'इसीलिए तो पुरानी बातें झूठ नहीं हैं कि मनुष्य माता-पिता के बिना बच सकता है, लेकिन ईश्वर के छोड़ने से नहीं बच सकता।'

मार्था और स्त्री के साथ बातें हो रही हैं। माइकेल घर में जहाँ पर बैठा था वहीं बैठा है और उस जगह से बिजली की तेज़ी की तरह एक विचित्र आलोक-प्रवाह निकल कर सारे घर को प्रकाशमान कर रहा है। ताज्जुब के साथ सबने माइकेल की ओर देखा। वह हाथ जोड़े, आसन लगाये बैठा था। माइकेल की नज़र ऊपर को ओर थी, शरीर में रोमाञ्च और मुख पर एक स्वर्गीय हँसी प्रस्फुटित हो रही थी। विस्मय और भीत विह्वल हृदय से सब माइकेल की ओर देखने लगे।

(१०)

इस अलौकिक व्यापार के दर्शन से विस्मित और डर से विह्वल होकर उस स्त्री ने दोनों बच्चियों को गोद में ले तरह-तरह की चिन्ता करती हुई घर से बाहर चली गई। माइकेल

बेञ्च से उठ कर खड़ा हो गया और उसने साइमन-दम्पत्ति को प्रणाम करके कहा—

'आज यहाँ से मेरी विदाई का दिन है, ईश्वर ने मुझे क्षमा किया है। मुझसे अनजान में जो ग़लतियाँ और त्रुटियाँ हुई हैं उसे कृपा कर आप माफ़ करें।'

साइमन और मार्था ने देखा, माइकेल की देह से एक स्वर्गीय ज्योति निकल रही है।

साइमन ने सिर झुका कर माइकेल से कहा—'मैं समझता हूँ माइकेल! तुम मामूली आदमी नहीं हो। तुम्हें इस कुटिया में रखने की ताक़त इस ग़रीब की नहीं और मैं तुमसे कैसा प्रश्न करूँ मेरे विचार से छोटे लोगों के लिये यह एकदम धृष्टता होगी। फिर भी तुमसे एक बात पूछने की चाह को नहीं रोक पा रहा हूँ। दया करके बताओ, मेरे कौतूहल को चरितार्थ करो माइकेल! जिस समय मैंने तुम्हें गिरजाघर के पास पाया था और इसके बाद जब तुम्हें अपने घर पर ले आया था उस समय तुम इतने दुःखी क्यों थे? मार्था के खाना देने पर तुम्हारे मुख पर क्यों हँसी फूट पड़ी और इसके बाद तुम्हें हर वक्त ख़ुश पाया? उसके बाद वह भला आदमी जब जूते की फ़र्माइश देने आया तो उस समय फिर तुम हँसे और तब तुम्हारा मुख और भी प्रकाशमान क्यों हो उठा? और अभी एकदम एक अनजान औरत के साथ दो लड़कियों को देखकर क्यों तुम्हारे मुख पर यह स्वर्गीय हँसी फूट पड़ी और तुम्हारे शरीर से ऐसी ज्योति क्यों निकलने लगी? माइकेल बताओ! बताओ, तुम्हारे शरीर पर यह ज्योति क्यों है और पहले तीन दफ़ा तुम क्यों हँसे थे?'

साइमन चुप हो गया। माइकेल ने कहना शुरू किया—

'ईश्वर ने मुझे सज़ा दी थी लेकिन अब उन्होंने माफ़ कर

दिया है। इसलिए यह ज्योति मेरे शरीर से निकल रही है। मैं इसलिए हँसा था कि ईश्वर ने मुझे तीन बातें सीखने का आदेश किया था; उन बातों का सीखना मेरा अभी समाप्त हुआ है। पहली बात मैंने उस समय सीखी थी, जिस समय आपकी स्त्री ने मुझे खाने को दिया—इसी वजह से उस समय मेरे मुँह पर हँसी फूट पड़ी थी। दूसरी शिक्षा मैंने उस वक़्त सीखी जिस वक़्त मैंने धन-जन-यौवन मदमत्त उस विशाल-काय पुरुष को देखा, उस समय मैं इसीलिए हँसा था। तीसरी और आख़िरी शिक्षा मैंने अभी इन जुड़वे बच्चों को देख कर सीखी—इसलिए ख़ुशी के मारे मेरा मुँह हास्योज्वल, और हृदय आनन्दित है।'

साइमन ने कहा—'माइकेल! दया करके यह तो बताओ कि ईश्वर ने तुम्हें किस लिए यह सज़ा दी थी और वे तीन दण्डनीय बात थीं क्या?'

माइकेल कहने लगा—'ईश्वर ने मुझे इसलिए दण्ड दिया था कि मैंने उनके हुक़्म को नहीं माना था। स्वर्ग में मैं देवदूत था। विधाता ने मुझे एक स्त्री की आत्मा लाने को भेजा था। मर्त्य-लोक में आकर मैंने देखा जिस स्त्री की आत्मा लाने को उन्होंने भेजा है उस क्षुधार्ता, तृषिता, रुग्णा, स्त्री ने एक जीर्ण कुटिया में दो बच्चों को जन्म दिया है और वे वहीं मिट्टी के ऊपर पड़े रो रहे थे। लेकिन उस स्त्री में उन बच्चों को दूध पिलाने तक की ताक़त न थी। उसने जब मुझे देखा तो मेरे उद्देश्य को वह समझ गई और रोती हुई बोली—देव-दूत! सुनिये, मुझ पर आप दया करें,—एक पेड़ से दब कर मेरे पति की मृत्यु हो गई और मेरे इन बच्चों को देखने के लिए न मेरी बहन है और न माता—कोई नहीं है! अतः आप मेरी इस क्षुद्र आत्मा को इनकी ख़ातिर न ले जायँ।

मुझे और कुछ दिन जीवित रहने दें, जिससे इन्हें कुछ बड़ा कर इनके लिए कुछ कर जाऊँ। पिता भी नहीं है फिर माता के बिना ये शिशु किस तरह जीवित रहेंगे ?'

स्त्री के दुःख को देख और उसकी कातरोक्ति को सुन कर मेरा मन पिघल गया। उसके अनुरोध से एक शिशु को उसकी छाती पर और दूसरे को उसकी बाहु में रख स्वर्ग जाकर मैंने ईश्वर से कहा -

"स्त्री की आत्मा तो मैं नहीं ला सका प्रभु ! उसका पति आज दो दिन हुये मर गया है। आज ही उसने दो बच्चों को जन्म दिया है; उसके मर जाने से दोनों बच्चे किस तरह बचेंगे ?'

ईश्वर ने क्रुद्ध-कंठ से आदेश दिया, 'मर्त्य-लोक को लौट जाओ, स्त्री की आत्मा ले आओ और फिर वहाँ जाकर वास करो। "मनुष्य क्या है," "क्या नहीं," और 'मनुष्य किसके बल पर जीवित रहता है," ये तीन बातें सीखकर फिर स्वर्ग लौट आओ।'

'उसी वक्त मैं मर्त्य-लोक में आया और कठोर बनकर स्त्री की आत्मा ले गया। शिशु डाली से झड़े कमल की कली की भाँति माता की छाती और बाहु से गिर पड़े। लाश से दब जाने के कारण एक बच्चे का पैर टूट गया, लेकिन उनकी ओर मैंने नहीं देखा, आत्मा लेकर स्वर्ग की ओर चला। अचानक एक जोर की आँधी आई और उसने मेरे दोनों डैनों को बरबाद कर दिया और आत्मा को उठा कर ले गई। आत्मा अकेली उड़कर स्वयं चली गई। लेकिन मैं इस पृथ्वी पर गिर पड़ा—इस विशाल प्रांत के प्राचीन गिर्जाघर के पास।'

(११)

अब साइमन और मार्था ने जाना कि हमने किसे भोजन

कराया था और हमने किसे कपड़े-लत्ते पहनाये थे। कौन इतने दिनों तक उनके साथ रहा। उनकी आँखों से अविरल-धार में भय, विषाद और आनन्द के आंसू बहने लगा। माइकेल कहने लगा—

'मैं अकेला मिट्टी पर पड़ा था और मेरा शरीर नंग-धड़ंग था। मैं इसके पहले कभी मनुष्यों की भाँति अभाव-अभियोग, दरिद्रता, क्षुधा, तृष्णा, शीतातप, आदि कुछ भी नहीं जानता था। लेकिन विधाता के शाप से उसी समय मैं मनुष्य में बदल गया। मैं भूख और शीतातप की ज्वाला से पीड़ित होकर पड़ा था कि अचानक गिर्जाघर दिखाई पड़ा लेकिन उसके किवाड़ बन्द थे, मैं भीतर नहीं जा सका। इस कारण दीवाल के पास बैठा-बैठा इस भीषण, निर्मम, ठंढी हवा से अपने शरीर को बचाने के लिए अपने हाथों से ही रोकने का प्रयत्न करने लगा।

'साँझ होते ही हवा और भी तेजी से बहने लगी। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो वहीं बैठ गया। कुछ देर बाद मैंने देखा कि एक आदमी कुछ बड़बड़ाते हुये मेरी तरफ़ आ रहा है। मनुष्य होने के बाद सबसे पहले उस आदमी को देखा था। उसका मुँह देखकर डर से मेरा प्राण काँप उठा। मैं मुँह फिरा कर बैठ गया। मैंने समझा कि वह आदमी किसी विषम समस्या में पड़ गया है। इसीलिए वह बड़बड़ाता हुआ अपने मन से प्रश्न करने लगा, किस तरह इस ठंढक को वह अपने हाथ से रोकेगा, किस तरह कन्या-पुत्र, पत्नी आदि के लिए खाने को जुटायेगा।'

मैंने सोचा—'हाय, ठंढ और भूख को ताड़ना से प्राण बाहर हो रहे हैं, लेकिन आदमी का उस ओर जरा भी ध्यान नहीं! वह सोच रहा है केवल अपनी बात, स्त्री-पुत्र-कन्या की

बात, किस तरह गरम कोट लायेगा, खाने की सामग्री किस तरह लायेगा, आदि बातें। उसे मुझे सहायता या उपकार की कोई आशा नहीं थी।

'आदमी की नजर मेरे ऊपर पड़ी, उसने भौंहें टेढ़ी करके मेरी ओर देखा, उसका मुख-मण्डल भीषण हो उठा। वह अपने गन्तव्य-पथ पर चलने लगा, मैं निराश हो गया। लेकिन कुछ देर के बाद मैंने देखा वह लौटा आ रहा है। मैंने उसकी ओर देखा, लेकिन पहले उससे बोलने की हिम्मत नहीं हुई—पहले उसके मुख पर मृत्यु की छवि थी, किन्तु अब उस पर जीवन झलक रहा था। उसके मुख पर ईश्वरीय छवि फूट रही है।

'वह आदमी मेरे पास आकर मुहब्बत के साथ मुझे पुकार कर बड़ी कोशिश से कपड़े-लत्ते और जूते पहना कर मुझे अपने घर ले आया। घर पहुँच कर एक स्त्री से बातचीत करने लगा। स्त्री बड़ी भीषण थी। पहले जिस मर्द को मैंने जिस हालत में देखा था उससे भी भीषण मैंने देखा उस औरत को। मृत्यु की गर्म साँस मानों उसके भीतर से बाहर होकर मुझे मारना चाहती थी। इसी समय एक अत्यन्त शुभ मुहूर्त में उसके पति ने उससे उस परम कारुणिक जगत्पिता की बात याद कराई, वह शांत हो गयी, शीतल जल-धारा जिस तरह जलती आग को बुझा देती है, उसी तरह पति के मुख से निकले ईश्वर के नाम रूपी अमृत-वर्षण ने स्त्री के अंतर क्रोध की आग को बुझा दिया। ज़रा भी देर न कर उसने नेह के साथ मुझे खाने को ला दिया और सकरुण दृष्टि से मेरी ओर देखती रही। मैंने भी उसके मुँह की ओर देखा वह भयंकर मृत्यु की छवि अब न थी। देखा उसकी देह में प्राण संचारित हो उठे हैं, मानों उसके अन्तर में ईश्वर का आविर्भाव हुआ

है। और उसी की सुन्दर हृदय-मन-विमोहन छवि स्त्री के रूप पर आकर ठहर गई है।

'उस समय मेरे मन में ईश्वर की पहली बात याद आयी। मैंने सीखा कि मनुष्य के हृदय में 'प्रेम' रहता है। मेरे आनन्द की सीमा न रही, और मेरे मुँह पर हँसी झलक आयी।

'लेकिन और भी दो बातें मुझे जानने को बाक़ी थीं। मैं तुम्हारे साथ रहने लगा। एक साल के बाद ही वह भले आदमी जूते की फ़र्माइश लेकर आये। मैंने देखा मेरा ही साथी मृत्यु-दूत उसके पीछे खड़ा है। मैं समझ गया कि मृत्यु की ख़ूनी तलवार उस आदमी के सिर पर झूल रही है। मैंने सोचा—आदमी एक लम्बे साल के लिए बन्दोबस्त करने में इतना व्यस्त है, लेकिन वह नहीं जानता है कि सूर्यास्त के पहले ही वह मृत्यु की गोद में सोने लग जायगा!

'मैंने सोचा—धन-जन-यौवन के ग़रूर में मत्त होकर आदमी दुनिया को कुछ नहीं समझता, घृत-धारा की आहुति देने से बढ़ी हुई आग की तरह भोग-इंधन द्वारा बढ़ी हुई लालसा की आग में रात-दिन पड़ा वह मरता है। कितनी वैध-अवैध कोशिशों से आदमी भोग के लिए इस नाशवान शरीर को तुष्ट करने के साधन में व्यस्त रहता है, लेकिन मोहान्ध मनुष्य यह नहीं जानता—जानने पर भी भूल जाता है कि,—कमल के पत्तों पर की जल की बूँदों की तरह अत्यन्त अनिश्चित यह जीवन है; जल बुद्बुद् की भाँति, रंगमंच पर अभिनेता और अभिनेत्री की भाँति एकदम क्षण-भंगुर मूर्खों द्वारा कही गई बात के समान शब्दाडम्बर से परिपूर्ण, लेकिन अन्तः सार-शून्य कहानी की तरह एकदम असार। ईश्वर की दूसरी बात मुझे याद आयी, मैंने सीखा—देह के लिये क्या उचित आवश्यकता है, उसे जानने की ताक़त ईश्वर ने मनुष्य को नहीं दी

है। मैं हँसा! मुझे देवदूत को देख कर ख़ुशी हुई थी, मुझे ख़ुशी हुई थी दूसरी बात सीखने का मौक़ा पाकर।

'लेकिन तीसरी बात तब भी नहीं जान पाया था। इसीलिए आप लोगों के यहाँ रह कर उस सुयोग की प्रतीक्षा करने लगा। आज वह मौक़ा भी ईश्वर ने मुझे दिया। दोनों बच्चों की कहानी सुनकर मैंने सोचा—मेरी धारणा थी कि माता-पिता के बिना वह किसी तरह नहीं बचेंगे। लेकिन उस ईश्वर की क्या विचित्र लीला है! कोई एक अनजान औरत उनका लालन-पालन करने को तैयार हो गई। उस अनजान दयालु-हृदया, माता के दिल में करुणा-मंदाकिनी की पीयूष-धारा प्रवाहित होती है जिसने उन जुड़वे बच्चों को बचा लिया। बच्चों की करुण-कहानी कहते-कहते स्त्री के हृदय से करुणा की धारा आँखों में आकर गालों को भिगोती हुई बहने लगी थी। मैंने देखा उसके दिल में ईश्वर की पूर्ण-मूर्ति विद्यमान है। मैंने उस समय जाना कि आदमी किसकी ताक़त से बचा रहता है। ईश्वर के तीसरे सवाल का जवाब मिल गया। इसलिये उन्होंने मुझे अब माफ़ी दी है। मेरे हृदय के जलधि-वक्ष में आनन्द तरंगों का एक रमणीय-नृत्य होने लगा। उस वख़्त मेरे मुँह पर आनन्द की हँसी फूट पड़ी।'

(१२)

माइकेल के शरीर से वस्त्र गिर पड़ा। उसके स्वर्गीय शरीर से निकलने वाली ज्योति ने साइमन-दम्पति की आँखों को चकाचौंध कर दिया। उसका कंठ-स्वर एक अपार्थिव गंभीरता से, एक स्वर्गीय माधुर्य से पूर्ण हो उठा।

देवदूत ने कहा—'मैंने सीखा है कि मनुष्य अपनी चिन्ता तथा बल से नहीं जीवित रहता है—बल्कि जीवित रहता है ˘ के बल पर।